प्रकाशक :
प्रकाशन-विभाग
कल्याणमल एण्ड सन्स
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-२

मूल्य : रु० ६.००

मुद्रक :
अजन्ता प्रिण्टर्स,
जयपुर

# प्रास्ताविक

अपभ्रंश अब न तो एक अनजानी भाषा है, और न उसका साहित्य अप्राप्य । गत चार दशकों की खोज से जो साहित्य प्रकाश में आया है, वह यह उजागर करने करने के लिए काफी है कि अपभ्रंश—एक जीवित लोक भाषा थी और यह कि उसका क्षेत्र, किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा से बड़ा था ।

अपभ्रंश का युग (ईसवी ७ से १२वीं तक) ऐतिहासिक संदर्भ में साँस्कृतिक मूल्यों के ह्रास और राजनीतिक बिखराव का युग था । बिखराव की यह प्रक्रिया भाषा के क्षेत्र में और भी तेज थी । अपभ्रंश कवि के सम्मुख दुहरा दायित्व था, एक तो उसे नये पुराने के बीच सेतु बनना था और दूसरे युगीन यथार्थ के संदर्भ में आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी थी । और यह अभी भी शोध की अपेक्षा रखता है कि वह अपने दायित्व के प्रति कितना सजग और सक्रिय रह सका ?

प्रस्तुत संकलन का अपना विशिष्ट संदर्भ और उद्देश्य है ? भारतीय विश्व-विद्यालयों में एम० ए० स्तर पर वैकल्पिक प्रश्न-पत्र के रूप में 'अपभ्रंश' का अध्ययन लोकप्रिय होता जा रहा है; यह इसलिए भी क्योंकि उसमें शोध के नए क्षितिज और दिशाएँ हैं; परन्तु प्रामाणिक और अधुनातन संकलन न होने से नए अध्येता को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है ? यह प्रयास इसी कठिनाई को हल करने की दिशा में एक प्रयास है ।

विषय को सरल बनाने के लिए समकालीन परिवेश टिप्पणियाँ और अवतरित अंशों के संदर्भ दे दिए गए हैं; चयन में यह सावधानी बरती गई है कि 'संदर्भित काव्य' की बहुरंगी झलक सामान्य पाठक को भी मिल जाये । पाठ्यक्रम की दृष्टि से पुस्तक कुछ बड़ी है; परन्तु संग्रह को बड़ा बनाने में दृष्टिकोण यह रहा है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनी अपेक्षा और आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा सके; और कुछ समय बाद, दूसरे कवियों को भी पाठ्यक्रम में में रखने के विकल्प की सुविधा रहे । अतिरिक्त इसके; सामान्य पाठक के, जो परीक्षार्थी नहीं हैं, उपयोग में आ सके ?

'पांडुलिपि' तैयार करने में जिस मनोयोग से सुश्री महेशी कपूर ने काम किया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ । साथ ही कल्याणमल एण्ड संस भी कम

धन्यवाद के अधिकारी नहीं कि जिन्होंने—सत्रीय प्रकाशनों की व्यस्तताओं के बावजूद अपेक्षित साज सज्जा के साथ 'पुस्तक' उपलब्ध कर दी ।

पिछले पौने दो दशकों से मैं आलोच्यकाव्य से सम्बद्ध हूँ; और यह सम्बद्धता यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त है कि पुस्तक निश्चय ही उनका अपनापन पायेगी जिनके लिए यह समर्पित है ।

**देवेन्द्रकुमार**

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग
इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर

(१) ऐतिहासिक संदर्भ में 'अपभ्रंश' प्राचीन भारतीय आर्यभाषा की अंतिम कड़ी है; ऐसी कड़ी जो न केवल प्राचीन भारतीय आर्यभाषा को आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं और उनके साहित्य से जोड़ती है वरन् दक्षिणभारत की भाषाओं और उनके साहित्य को भी किसी हद तक जोड़ती है। अपभ्रंश और दक्षिणी भाषाओं का साहित्य-सर्जन समकालीन साहित्य-सर्जन है और अपभ्रंश में आर्यभाषा के शब्दों की तुलना में आर्येतर भाषाओं के शब्द कम नहीं हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य धारा के नैरन्तर्य और नानाप्रवाहों को समझने का सूत्र, सचमुच अपभ्रंश के हाथ में है।

(२) जहाँ तक अपभ्रंश के, एक भाषा रूप में विकसित होने का प्रश्न है; इसका उत्तर स्पष्ट है? अपभ्रंश के विकास में वही तत्व और प्रभाव काम करते हैं जो किसी दूसरी भाषा में कर सकते हैं। अपभ्रंश का सबसे बड़ा महत्व यह है कि आर्यभाषा एक से अनेक कैसे बनी—इसकी व्याख्या अपभ्रंश के माध्यम से सही अर्थ में की जा सकती है? व्याकरण की दृष्टि से भी अपभ्रंश का अपना एक व्यक्तित्व और आकृति है। उसका एक रूपात्मक अस्तित्व है। अभी तक के प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अपभ्रंश अपने मूल रूप में उत्तर-पश्चिम भारत की एक बोली थी; जिसे भरत मुनि ने 'आभीरोक्ति' कहा है और जिसकी प्रकृति थी 'उकारान्त' जैसे 'मोरउ नच्चन्तउ'—'नाचता हुआ मोर'। आभीरी अपभ्रंश कैसे बनी—इसकी कहानी लम्बी और उलझनभरी है। वैसे अपभ्रंश शब्द का प्रयोग पतञ्जलि ने अपने भाष्य में किया है, परन्तु वह संस्कृत से भिन्न शब्द के लिए है जैसे गौ के लिए—गावी, गौणी, गोपोतलिका इत्यादि। सबसे पहले संस्कृत साहित्यालोचक दंडी ने यह बताया कि बोलचाल की आभीरी साहित्यभाषा के रूप में न केवल अपभ्रंश कहलाती है, प्रत्युत उसकी अपनी साहित्यिक शैलियाँ हैं, जिनका उसने संस्कृत और प्राकृत साहित्य के साथ, उन्हींके समानान्तर उल्लेख किया है।

भरतमुनि और दंडी के बीच दो तीन सौ वर्षों का अन्तर तो सहज ही था। आभीरी को अपभ्रंश कहलाने में इतना समय लग जाना कोई बड़ी बात नहीं। प्रसिद्ध संस्कृत गद्यकार कवि बाणभट्ट के समय 'अपभ्रंश' भाषा के नाम से जानी जाती थी। इसके 'हर्षचरित' में प्राकृत कवि वायुकुमार के साथ भाषा कवि ईशान का भी उल्लेख है। यहाँ भाषा का आशय अपभ्रंश से है; ईशान अपभ्रंश कवि थे इसमें सन्देह

इसलिए भी नहीं रह जाता क्योंकि पुष्पदंत ने महापुराण में उसका अपभ्रंश कवि के रूप में उल्लेख किया है "चौमुह सयम्भु सिरिहरिसु दोणु' णालोइउ कइ ईसाणु वाण।" ईसान वाणु का परम मित्र था। इससे स्पष्ट है कि सातवीं सदी के पूर्वार्ध में अपभ्रंश में कविता लिखी ही नहीं जाने लगी थी, परन्तु उसमें ईसान जैसे प्रसिद्ध कवि भी हो चुके थे। इस प्रकार मोटे तौर पर ईसवी सातवीं सदी से १२वीं सदी तक अपभ्रंश काव्य का युग स्वीकारा जा सकता है। स्वयंम्भूच्छंद के अवतरणों से भी यह तथ्य प्रमाणित है कि स्वयम्भू के वहुत पहले कई अपभ्रंश कवि हो चुके थे। इनमें प्रवन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के कवि सम्मिलित हैं।

(४) अपभ्रंश के युग की समाप्ति १२वीं ईसवीं सदी तक मानना उचित और तर्कसंगत है, यद्यपि अपभ्रंश में, इसके वाद (१६वीं-१७वीं तक) काव्य रचना होती रही। १२वीं के वाद वस्तुतः अवहट्ट और आधुनिक वोलियों के साहित्य का युग है; राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इस युग का प्रतिनिधित्व नई वोलियों का साहित्य करता है न कि अपभ्रंश का! राजनीतिक संदर्भ में यह भारतीय इतिहास का राजपूत युग है: जिस प्रकार आर्यं और आर्येतर प्रजाओं के संगम में संस्कृत परिष्कृत होकर अभिव्यक्ति का माध्यम वनी; बुद्ध और महावीर की क्रांति से पालि और प्राकृतों को मान्यता मिली उसी प्रकार; हर्षोत्तरकालीन राजनीतिक उथलपुथल में अपभ्रंश महत्व पा गई। सुदीर्घ शासन (६०६ से ६४८) करने के वाद सम्राट हर्ष का जव निधन हुआ तो देश टुकड़ों में वँट गया। अगले सौ वर्ष का समय अराजकता और राजनीतिक अस्थिरता का युग था। ६४६ से ८३६ ईसवी तक, उत्तरी गंगा घाटी वाह्य आक्रमण और आन्तरिक संघर्ष की भूमि वनी रही। हर्ष के निधन के कोई सौ साल वाद भारत में तीन महाशक्तियाँ अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने में सफल हो सकीं—(i) दक्षिणापथ के राष्ट्रकूट (ii) राजपूताने के भिन्नमाल या श्रीमाल के गुर्जर प्रतिहार (iii) पूर्वी भारत का प्रसिद्ध पाल वंश। महोदयश्री (कन्नौज) को हथियाने के लिए इनमें कठोर संघर्ष हुआ। अंत में प्रतिहारों ने उस पर कब्जा कर लिया। इस समय कन्नौज का वही महत्व था, जो मुगलकाल में दिल्ली का। इनके अतिरिक्त छोटी मोटी दूसरी राजनीतिक इकाइयां भी थीं जैसे गुजरात के चालुक्य, अजमेर के चौहान, चेदि के शासक, गहड़वाल के चंदेल और परमार, इस काल की दूसरी अप्रत्याशित किन्तु महत्वपूर्ण घटना है अरव आक्रमण! ७११ ईसवी में मुहम्मद विन कासिम की चढ़ाई से यह प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और ११७८ में जयचन्द के पतन के साथ समाप्त।

(५) आलोच्य युग के राजा प्रायः लड़ाकू होते थे। मल्लयुद्ध के सिवा अपने शत्रुओं से युद्ध करना उन्हें विशेष प्रिय था। कला और विद्या के प्रति अनुराग उनमें था। संरक्षण भावना उच्च थी, राजनीतिक शक्ति बढ़ाने के लिये वैवाहिक

सम्बन्धों पर विशेष जोर दिया जाता था। सामाजिक स्थिति में परिवर्तन तेजी से हो रहा था। ब्राह्मण और किसान सेना में भरती होते थे। उच्च कुल की स्त्रियाँ शासन में भाग लेती थीं। राजन्यवर्ग और साधारणवर्ग के रहन-सहन में काफी अन्तर था। ऊँची शिक्षा के प्रबन्ध के उदाहरण मिलते हैं, परन्तु ग्राम्य स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं है। व्यक्तिगत रूप से गांवों में पढ़ाई होती थी। दस्तकारी या अर्थकरी दूसरी विद्याएँ, बेटा बाप से ही सीखता था। पुरानी धर्म साधनाओं और देवी देवताओं की उपासना के साथ नये धार्मिक विचार भी विकसित हो रहे थे। इस नयी आस्तिक भक्ति चेतना का केन्द्र तमिल देश था। यह विचार चेतना शीघ्र सारे देश में फैल गयी। ऐसा लगता है कि साधनात्मक और वैराग्य प्रधाव आध्यात्मिक साधनाओं के विरुद्ध प्रवत्सात्मक शिव या विष्णु भक्ति का प्रचार करना इनका उद्देश्य था। १०वीं सदी से आसपास अंदार ने उनके गीतों का संकलन 'तैवारम' के नाम से किया जो तामिल शैव धर्म के लिए 'वेद' है।

(६) नयी भक्ति फैलने के अधोलिखित कारण थे—

(i) राज्याश्रय के कारण जनता में प्रचार

(ii) जनभाषा में गीतों की रचना

(iii) शिव विष्णु के लोकोत्तर व्यक्तित्व द्वारा जनता में विश्वास की भावना पैदा करना

(iv) सुन्दर रागों में गीतों को गाकर प्रचार करना।

संदर्भित युग में उत्तर भारत की तुलना में दक्षिणभारत में धार्मिक विचार-धाराओं का संघर्ष अधिक सक्रिय था। ये सारी विचारधाराएँ भारतीय थीं। विष्णुमत की अपेक्षा शैवमत अधिक सुगठित था। जैन धर्म और शैवमत में संघर्ष था। बौद्ध धर्म अवनति पर था। कुछ इतिहासकारों की मान्यता है कि ईसवी सदी ६३६ में अरब जहाज भारतीय समुद्र के किनारे पहुँचे। तब से अरब व्यापारियों का सम्बन्ध इस देश से रहा है; एक संदिग्ध धारणा यह भी है कि ईसाइयों का दक्षिण भारत में बसना इस समय तक प्रारम्भ हो गया था और इसलिए नई उठती हुई अद्वैतात्मक भक्ति, आत्मसमर्पण, सामाजिक समानता और गुरु की आवश्यकता पर जोर दिये जाने आदि बातों को उक्तधारणा मुस्लिम या ईसाई प्रभाव मानती है; परन्तु यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टि से गलत है।

साम्प्रदायिक मतभेद के बावजूद सहिष्णुता का भाव था। मत-परिवर्तन वैवाहिक सम्बन्धों में बाधक नहीं था। धर्म की शक्ति बढ़ना न बढ़ना राज्य के आश्रय पर निर्भर करता था। यह युग मन्दिरों के ठाठ-बाट का युग था। आलोच्य युग के उत्तरार्ध में उग्र अध्यात्म, सिद्ध साधना हठयोग भक्ति आदि साधनाओं की

जड़ें जम चुकी थीं। दार्शनिक चिंतन और साहित्य-साधना की दृष्टि से यह युग स्वर्णयुग माना जा सकता है। संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश के साथ द्रविड़ भाषाओं में भी साहित्य की रचना हुई। ८५० से १२०० तक तमिल भाषा का स्वर्णकाल था। उसके बाद कन्नड़ में साहित्य की रचना हुई। उसके बाद तेलुगु का नम्बर आता है। कुल मिलाकर देखें तो 'गीत और प्रबन्ध' काव्य इस युग की विशेषता है।

(७)अपभ्रंश साहित्य के प्रेरणा स्रोतों को देखना चाहिए उन कारणों में जो राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा में गिनाए हैं। इसमें संदेह नहीं कि अपनी प्रेरणा और उद्देश्य में अपभ्रंश साहित्य धार्मिक और पौराणिक है। फिर भी युग के शासकों के स्वभाव रुचि रीति नीति और धार्मिकवृत्ति आदि की झलक उसमें देखी जा सकती है। इतिहास और साहित्य—इस तथ्य से सहमत हैं कि इस युग में धर्म आडम्बरपूर्ण था। धर्म राज्य से विस्तार चाहता था और राज्य धर्म से शक्ति। साधारणतया—अपभ्रंश साहित्य के दो युग हैं। पूर्व अपभ्रंश युग (स्वयम्भूत्तर); उत्तर अपभ्रंशयुग पुष्पदंत और उसके बाद। यह उल्लेख किया जा चुका है कि संस्कृत कवि बाण ने भाषा कवि ईसान का उल्लेख किया है जो अपभ्रंश कवि था! श्री राहुल सरहपाद को अपभ्रंश का आदि कवि मानते हैं। स्वयम्भू आठवीं और नवीं सदियों के मध्यविन्दु पर हुए। उनके स्वयम्भूच्छंद में इस बात के प्रमाण हैं कि उनके बहुत पहले अपभ्रंश में कविता होने लगी थी; स्वयम्भूच्छंद में चतुर्मुख भाउरदेव शुद्धशील जिनदास अज्जदेव धुत्त छइल्ल विअद्ढ और गोइन्द। इतना ही नहीं विषयवस्तु की दृष्टि से इसमें विभिन्नता है। इन अवतरणों में रामायण महाभारत रोमांस प्रकृतिचित्रण आदि से सम्बन्धित विषय है। अतः स्वयम्भू और सरहपाद क्रमशः प्रबन्ध और मुक्तक काव्यधारा के इसी अर्थ में आदि कवि हैं क्योंकि उनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं। गोइन्द ने राधाकृष्ण की प्रणयलीला पर अवश्य कोई काव्य लिखा होगा; स्वयम्भूच्छंद में उद्धृत 'सव्व गोविउ जइवि जोएइ' पद हेमचंद्राचार्य ने अपने व्याकरण में दिया है।

(६) विविधता के मान से अपभ्रंश साहित्य सीमित है। विधागत विशेषता

और खण्ड काव्य। जहाँ तक प्रवन्ध काव्य का सम्बन्ध है यह धारा परम्परागत पौराणिक काव्यों से प्रारम्भ हुई। वहुत सी प्रवृत्तियों में समानधर्मी होते हुए भी, पुराण काव्य की तुलना में चरित काव्य की अपनी विशेपताएँ हैं, जैसे चरित काव्य में अप्राकृत तत्व का संकोच, वस्तु विकास में यथा संभव धारावाहिकता, धार्मिकता, लौकिकता और संक्षिप्तता। चरित काव्य और कथा काव्य एक ही वात है—और इनकी सवसे वड़ी विशेपता है लौकिक और शास्त्रीय परम्परा का समन्वय। चरित काव्य की अपनी टेकनीक है; गीततत्व युक्त द्विपदी के आधार पर छंद की लयात्मक तुकान्त रचना; कड़वक की योजना, इसी टेकनीक के परिणाम हैं। वस्तु वर्णन की दृष्टि से काव्य समृद्ध है, विवाह गोकुल शवरवस्तियों कृष्णलीला स्वयम्वर और जल क्रीड़ा का वर्णन विशेप महत्व रखता है। रूप चित्रण में वे कवि वेजोड़ हैं, वह भी भाव के अनुरूप रूप चित्रण करने में। स्त्रियों की रूपात्मक प्रतिक्रिया भी ये खूब चित्रित करते हैं। प्रकृति चित्रण और अलंकार योजना भी इनमें मौलिकता को लिए हुए है। चरित काव्य की तुलना में पुराण काव्य एक प्रकार से चरित्रों का संग्रह ग्रन्थ है। इनमें काव्य और कथानक दोनों से संवंधित रूढ़ियाँ देखी जाती हैं। चरित काव्य की दो उपधाराएँ हैं चरित काव्य (धार्मिक) और रोमांटिक काव्य। चरित काव्यों की एक विशेपता यह है इनके अन्तर्गत गीति तत्व भी है। राम और कृष्ण के इतिवृत्त पर लिखित चरित काव्य की धाराएँ आलोच्य काव्य में देखने परखने की वस्तु है।

(९) खंड काव्य भी दो चार उपलव्ध हैं उदाहरण के लिए 'संदेश रासक' सुखान्त खण्डकाव्य है, कुछ आलोचक पहले इसे गीतिकाव्य मानते थे और अव कहते हैं कि वह क्षीणधर्मा प्रवन्धकाव्य है ? वस्तुतः इस काव्य में घटनाक्रम कम और प्रतिक्रिया अधिक है। मुक्तक काव्य की परिभापा के वारे में अभी तक यह कहा जाता रहा है कि उसे इतिवृत्तविहीन होना चाहिए! परन्तु यह ठीक नहीं। मुक्तक का अर्थ है जो पूर्वापर संदर्भविहीन हो, वह अपने आप में मुक्त हो। अतः भावना के अतिरिक्त घटना या इतिवृत्त का खंड भी मुक्तक काव्य का विषय वन सकता है। संस्कृत आलोचक राजेश्वर ने इसका विस्तार से विवेचन किया है। अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक मुक्तकों के काफी उदाहरण मिलते हैं। गेयमुक्तकों के रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं उनमें से अधिकांश गीतनृत्यात्मक रचनाएँ हैं। अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक की परम्परा अधिक लोकप्रिय रही हैं, इसके अतिरिक्त कुछ गेयमुक्तक अपभ्रंश काव्यधारा के भीतर मिलते हैं। यह कहा जा चुका है कि अपभ्रंश प्रवन्ध काव्य के स्वरूप गठन में गीत के कई तत्वों को ले लिया गया है। मुक्तक के रूप में दोहा काव्य वहुत वड़ी मात्रा में उपलव्ध है: जैसा कि पाठक देखेंगे कि यह आध्यात्मिक और लोक दोनों रूप में उपलव्ध है। गहराई से देखने पर यह साफ हो जायगा

ग्रौर खण्ड काव्य। जहाँ तक प्रवन्ध काव्य का सम्वन्ध है यह धारा परम्परागत पौराणिक काव्यों से प्रारम्भ हुई। वहुत सी प्रवृत्तियों में समानधर्मी होते हुए भी, पुराण काव्य की तुलना में चरित काव्य की ग्रपनी विशेपताएँ हैं, जैसे चरित काव्य में ग्रप्राकृत तत्व का संकोच, वस्तु विकास में यथा संभव धारावाहिकता, धार्मिकता, लौकिकता ग्रौर संक्षिप्तता। चरित काव्य ग्रौर कथा काव्य एक ही वात है—ग्रौर इनकी सवसे वड़ी विशेपता है लौकिक ग्रौर शास्त्रीय परम्परा का समन्वय। चरित काव्य की ग्रपनी टेकनीक है; गीततत्व युक्त द्विपदी के ग्राधार पर छंद की लयात्मक तुकान्त रचना; कड़वक की योजना, इसी टेकनीक के परिणाम हैं। वस्तु वर्णन की दृष्टि से काव्य समृद्ध है, विवाह गोकुल शवरवस्तियों कृष्णलीला स्वयम्वर ग्रौर जल क्रीड़ा का वर्णन विशेष महत्व रखता है। रूप चित्रण में वे कवि वेजोड़ हैं, वह भी भाव के ग्रनुरूप रूप चित्रण करने में। स्त्रियों की रूपात्मक प्रतिक्रिया भी ये खूव चित्रित करते हैं। प्रकृति चित्रण ग्रौर ग्रलंकार योजना भी इनमें मौलिकता को लिए हुए है। चरित काव्य की तुलना में पुराण काव्य एक प्रकार से चरित्रों का संग्रह ग्रन्थ है। इनमें काव्य ग्रौर कथानक दोनों से संवंधित रूढ़ियाँ देखी जाती हैं। चरित काव्य की दो उपधाराएँ हैं चरित काव्य (धार्मिक) ग्रौर रोमांटिक काव्य। चरित काव्यों की एक विशेपता यह है इनके ग्रन्तर्गत गीति तत्व भी है। राम ग्रौर कृष्ण के इतिवृत्त पर लिखित चरित काव्य की धाराएँ ग्रालोच्य काव्य में देखने परखने की वस्तु है।

(६) खंड काव्य भी दो चार उपलव्ध हैं उदाहरण के लिए 'संदेश रासक' सुखान्त खण्डकाव्य है, कुछ ग्रालोचक पहले इसे गीतिकाव्य मानते थे ग्रौर ग्रव कहते हैं कि वह क्षीणधर्मा प्रवन्धकाव्य है? वस्तुतः इस काव्य में घटनाक्रम कम ग्रौर प्रतिक्रिया ग्रधिक है। मुक्तक काव्य की परिभाषा के वारे में ग्रभी तक यह कहा जाता रहा है कि उसे इतिवृत्तविहीन होना चाहिए! परन्तु यह ठीक नहीं। मुक्तक का ग्रर्थ है जो पूर्वापर संदर्भविहीन हो, वह ग्रपने ग्राप में मुक्त हो। ग्रतः भावना के ग्रतिरिक्त घटना या इतिवृत्त का खंड भी मुक्तक काव्य का विषय वन सकता है। संस्कृत ग्रालोचक राजेश्वर ने इसका विस्तार से विवेचन किया है। ग्रपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक मुक्तकों के काफी उदाहरण मिलते हैं। गेयमुक्तकों से रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं उनमें से ग्रधिकांश गीतनृत्यात्मक रचनाएँ हैं। ग्रपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक की परम्परा ग्रधिक लोकप्रिय रही हैं, इसके ग्रतिरिक्त कुछ गेयमुक्तक ग्रपभ्रंश काव्यधारा के भीतर मिलते हैं। यह कहा जा चुका है कि ग्रपभ्रंश प्रवन्ध काव्य के स्वरूप गठन में गीत के कई तत्वों को ले लिया गया है। मुक्तक के रूप में दोहा काव्य वहुत वड़ी मात्रा में उपलव्ध है: जैसा कि पाठक देखेंगे कि यह ग्राध्यात्मिक ग्रौर लोक दोनों रूप में उपलव्ध है। गहराई से देखने पर यह साफ हो जायगा

(१६) आलोच्य साहित्य में समाज और संस्कृति का जो चित्र अंकित है वह यथार्थ से अधिक दूर नहीं है। भारतीय जीवन का यह यथार्थ क्या है ? यह यथार्थ है कि भारत में आध्यात्मिक विचारधाराओं में जितने परिवर्तन हुए, उतने समाज व्यवस्था और आर्थिक जीवन में नहीं। इसलिए आलोच्य साहित्य में युगीन समाज का जो चित्र अंकित है वह इतना रूढ़ है कि किसी भी युग के बारे में 'फिट' किया जा सकता है ? उदाहरण के लिए अपभ्रंश कवियों ने कलियुग का जो चित्र खींचा है वह तुलसीदास के कलियुगीन चित्र से बहुत कुछ मिलता-जुलता है इसका कारण है कि मध्ययुग में भारतीय समाज के मूल्यों में जो ठहराव आ गया था, उसने अपनी सीमाएँ और अभिव्यक्तियाँ एकदम स्थिर कर ली थी। यथार्थवादीकोण से देखा जाय तो आलोच्य साहित्य में राजन्य वर्ग और श्रेष्ठि वर्ग का बोलबाला है; दूसरा कोई वर्ग है, तो दरिद्र गरीब निम्न निम्नवर्गीय जनता—जो अपने ही पाप, कर्मों से अभिशप्त जीवन बिताने के लिए विवश है। संयुक्त परिवार के शीतयुद्ध, बहुपत्नी प्रथा, राजनैतिक युद्ध, कन्यापहरण स्त्रियों की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण इस साहित्य में है। समाज जाति उपजातियों और कुरीतियों में बँट फँस

चुका था। राज समाज—विशेष रौब दौब रखता था। जुआ और मल्लयुद्ध विशेष पसन्द किये जाते थे। हिंसक पूजाविधान भी थे। भक्ति का उदय हो रहा था तन्त्र मन्त्र की भी धाक थी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चीजों में मिलावट उस युग में भी होती थी। दार्शनिक वैरविरोध भी अपने उग्रतम विन्दु पर था। धर्म आडम्बरपूर्ण था, साधना से अधिक वह प्रदर्शन की वस्तु था। इस प्रकार, इस साहित्य की सबसे बड़ी देन यह है कि उसमें काव्य की शास्त्रीय और लौकिक परम्पराओं का निभाव है, पुरानी और नयी काव्य विधाओं के बीच एक सेतु है और यह कि उसने युग की चिंता, भाषा काव्य रूप और अन्य साधनाओं का, धूमिल पर तथ्यपूर्ण चित्र हमें दिया है। चाहे हम यह न जाने कि भारतीय साहित्य का उद्गम, आदर्श की किस गंगोत्री या यथार्थ की चट्टान से हुआ, पर यह हम जानते हैं कि वह जो अपनी नाना धाराओं में बहता है, वह इसी अपभ्रंश के धरातल से।

---

# महाकवि पुष्पदंत

अपभ्रंश काव्य का सबसे निराला और प्रतिभासम्पन्न हस्ताक्षर। कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण। पिता केशवभट्ट और माँ मुग्धा देवी। शैव धर्म छोड़कर जैन धर्म में दीक्षित। एकान्तप्रेमी, उग्र और भावुक। पंडितों में विवाद है कि वह दक्षिण के थे या उत्तर के। प्राचीन कवियों के बारे में, इस प्रकार के विवाद अर्थहीन हैं। क्योंकि ये कवि किसी प्रान्त के कवि नहीं थे, अपभ्रंश एक व्यापक काव्यभाषा थी, उसमें किसी भी प्रांत का कवि लिख सकता था यह कहना भी गलत है कि 'पुष्पदंत' के काव्य में द्रविड़ भाषा के शब्द नहीं हैं। अन्तः और बाह्य साक्ष्यों से यह सिद्ध है कि पुष्पदंत ईसा की दसवीं सदी में हुए और प्रसिद्ध राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण ३ के समकालीन थे। कृष्ण ने चोलराज पर विजय प्राप्त की थी। पुष्पदंत ने भी इसका उल्लेख किया है "तोड़ेप्पणु चोडहो तणउ सीसु"।

महापुराण और दूसरी कृतियाँ रचने की कहानी स्वयं कवि के शब्दों में यह है, "एक साँझ वह थका मादा 'मलखेड' (मान्यखेट) राष्ट्रकूट राज्य की राजधानी पहुँचता है (शक् सं० ८६६); वहाँ मन्त्री भरत से उसकी भेंट होती है, उसी के अनुरोध पर कवि पुराण रचना में लगता है। बीच-बीच में—उसका मन उदास हो उठता, परन्तु मन्त्री भरत उसे मना लेते।" एक जगह कवि लिखता है कि पहले मैंने भैरव नामक शैव राजा की प्रशंसा की थी, उससे उत्पन्न मिथ्यात्व को धोने के लिए मैं इस काम में लगा। वह कहता है—लो भरत, तुम्हारी अभ्यर्थना पर मैं जिनगुणों से भरित कविता करता हूँ; धन के लिए नहीं; केवल तुम्हारे अकारण स्नेह के कारण, जिनपद भक्ति से मेरा कवित्व वैसे ही फूट पड़ता है, जैसे आम के बौरों पर, मधुमास में कोयल कूक उठती है; कानन में भ्रमर गूँजने लगते हैं और शुक सुख से भर उठता है कवि सरस्वती की वंदना के संदर्भ में जो कुछ कहता है उससे उसकी काव्य सम्बन्धी मान्यताएँ जानी जा सकती हैं; भाषा प्रसन्न और गम्भीर; छंद और अलंकार काव्य की गति और शोभा हैं। कवि ने बार-बार अलंकृत और रसभरी कथा की उपमा दी है; वह काव्य में सबसे बड़ी वस्तु गहन-अनुभूति को मानता है।

कवि का घरेलू नाम 'खण्ड' 'खण्डू जी' था। उनके साहित्यिक नाम थे अभिमानचिन्ह, कविकुलतिलक, सरस्वतीनिलय, काव्यपिसल्ल आदि। उनके व्यक्तित्व में विरोधी बातों का विचित्र सम्मिलन था। एक ओर वह अपने को कुक्षि मूर्ख कहते हैं और दूसरी ओर ताव में आकर सरस्वती को यह चुनौती भी देते हैं कि वह जायगी कहाँ ? अपनी इस विरोधी प्रकृति के कारण, उन्होंने विरोधाभास और श्लिष्ट शैली का अधिक प्रयोग किया है। उनके काव्य में श्लिष्ट सरल, समस्त व्यस्त, सभी प्रकार की शैलियाँ प्रयुक्त हैं; दर्शन और अनुभूति का सुन्दर समन्वय है। मात्रिक और वर्णिक छंदों का कृत्रिम भेद इन्होंने अपने काव्य में दूर कर दिया है। महापुराण, जसहर चरिउ, और णाय कुमार चरिउ उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

# कवि धाहिल

'पउम सिरि चरिउ' के रचयिता श्री धाहिल—अपने को संस्कृत महाकवि माघ का वंशज मानते हैं। वह श्रीमाल वंशीय गुर्जर वैश्य थे। पिता का नाम पार्श्व और माता का महासती सुराइ। कवि के व्यक्तिगत जीवन की कुछ भी जानकारी नहीं मिलती। अनुमानतः वह १०वीं के आसपास हुए। 'पउम सिरि चरिउ' छोटी रचना होते हुए भी—धाहिल के कवि होने का अहसास ही नहीं कराती—वल्कि पाठक के अन्तर्मन पर एक छाप छोड़ती है। धाहिल ने प्रस्तावना में स्वीकार किया है कि महासती दुर्लभा की प्रेरणा से इस काव्य की रचना की गई। कवि की वर्णन-क्षमता, भापाशक्ति और प्रकृति के रंग में मानवी भावनाओं के उतार-चढ़ाव को रंग देने में जो सफलता मिली है वह वहुत कम कवियों को मिल सकी है। 'पउम सिरि चरिउ' की रचना का केन्द्रीय उद्देश्य जैन कर्म सिद्धांत का परिपाक दिखाना है। कथावस्तु, सम्मिलित जैन परिवार से सम्वन्धित है शैली रम्य और रोचक है, कवि के शब्दों में : "मैंने ललित शब्दों में अर्थसार दिया है, और मेरा काव्य तरुणी-जन को तरह वहुविकार वाला है।" कवि का महत्व यह नहीं है कि वह पारिवारिक समस्या का धार्मिक हल खोजने का प्रयास करता है; वरन्, यह है कि समस्या को रखते समय, वह मनुष्य स्वभाव का यथार्थवादी दृष्टि से चित्रण करता है। एक धनी परिवार में विधवा लड़की की स्थिति का, गृह कलह, घरेलू कूटनीति, और नारी की स्थिति का चित्रण करता है, तो दूसरी ओर, वियोगिनी पद्मश्री को वियोग व्यंजना में प्रकृति का तादात्म्य भी दिखाता है। धाहिल का नाम दिव्य दृष्टि उचित था। उसे मनुष्य की अन्तर्भावनाओं की अच्छी पकड़ थी। वह अपनी कथा को 'कर्ण-रसायन' धर्मकथा कहता है।

'पउम सिरि चरिउ' में पद्मश्री के दो-दो जन्मों की कहानी है, एक जन्म में वह जो वोती है, दूसरे जन्म में, वही करती है। पहले जन्म में वह धनश्री है और असमय में विधवा हो जाने पर अपने भाइयों के पास रहती है, वह घर की मालकिन है और कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र है। वह सोचती है कहीं भाभियां मेरे खिलाफ भाइयों के कान न भर दें जिससे मेरे दान पुण्य पर अंकुश लग जाय। वह अपना रंग गाठना चाहती है। वारी वारी से दोनों भाभियों को क्रमशः शील पालने और चोरी न करने का ऐसा कपट-उपदेश देती है कि भाई समझते हैं कि उनकी पत्नियां ऐसी हैं; वे उन्हें पीटते हैं, वाद में धनश्री भाइयों से कहती है कि—"मैं तो उपदेश दे रही थी तुम सच मान वैठे।' वह उनका मेल करा देती है। इस प्रकार उसका रौव वढ़ता है। भाभियां उसकी गुलाम हैं। दूसरे जन्म में—वह पद्मश्री वनती है और न केवल पति वियोग उसे सहना पड़ता है; वरन् कुशील और चोरी का कलंक भी, अन्त में तप कर मुक्ति प्राप्त करती है।

# अब्दुलरहमान (अद्दहमान)

'संदेश रासक' की उत्थानिका के अनुसार, वह, पश्चिम देश मे म्लेच्छ देश के मीरसेन नामक जुलाहा के घर के कुलकमल थे। यह प्राकृतकाव्य और गीत विषयों में विशेष प्रसिद्ध था। म्लेच्छ देश से कवि का अभिप्राय, पश्चिमी भारत की किसी मुसलमान बस्ती से है क्योंकि उस समय तक मुसलमान सिंध पर कब्जा कर चुके थे। ऐतिहासिक तथ्यों के सन्दर्भ में, शहाबुद्दीन गोरी के अभ्युदय की पूर्व संध्या में इनका जन्म हुआ था। डॉ० हजारीप्रसाद का विचार है कि अब्दुल रहमान के पिता मीरसेन मुसलमानी धर्म अंगीकार कर, पश्चिम से पूर्व भारत में चले आये थे; वहीं अब्दुल रहमान का जन्म हुआ। ऐसा उन्होंने 'आरद्ध पच्चाएसि अद्धहमाण और मिच्छ' शब्दों के अर्थ की खींचतान पर से किया है। द्विवेदी जी का विचार इसीलिए मान्य नहीं किया जा सकता क्योंकि समूची रचना में पूर्वीपन कहीं भी नहीं है।

इसमें संदेह नहीं कि 'संदेश रासक' की रचना मध्यम श्रेणी के पाठक के लिए है, जो मुक्तक शृंगार को अधिक पसन्द करते थे। कवि की वर्णन पद्धति कहीं-कहीं शास्त्रीय है अतः उसे विशुद्ध लोक कवि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

कवि रहमान का सबसे बड़ा महत्व यह है कि वह संधिकाल में जन्में, मुसलमान होकर भी अपभ्रंश में लिखने वाले वह प्रथम मुसलमान कवि हैं। उनकी काव्य रचना के माध्यम भारतीय हैं। उसमें साहित्यिकता और लौकिकता का सुन्दर मेल है। प्रकृति का उद्दीपक चित्रण है कुछ सूक्तियां भी हैं। उनका प्रेम सांसारिक और सम है।

'संदेश रासक'—वस्तुतः एक सुखांत विप्रलंभ काव्य है। यह एक प्रतिक्रियात्मक काव्य है जिसमें विक्रमपुर की एक वियोगिनी, एक पथिक से अपने विरह के उद्गार व्यक्त करती है। पथिक से कहने का अर्थ यह है क्योंकि वह एक लेख पत्र लेकर, मुलतान से खंभायत जा रहा था। तीन प्रकाश के खंड काव्य में भी कथा की काव्य की रूढ़ियों का परिपालन है। संदेश कथन से अधिक उसमें प्रतिक्रिया अधिक है, बीच-बीच में वह उद्धरण भी देती है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—रासक होने से गेय समझते हैं (हिन्दी साहित्य)। 'रासक' नाम को लेकर हिन्दी आलोचकों के मन में इस प्रकार की विधा वाले काव्यों की जो भ्रांत धारणा घर कर चुकी है, यह उसी का परिणाम है। अब्दुर्रहमान यदि पूर्व के होते, तो उनकी भाषा में कुछ पूर्वीपन होता। संदेश रासक का वातावरण भारतीय है, उसमें विदेशी प्रभाव कुछ भी नहीं है, उनकी अपभ्रंश पश्चिमी अपभ्रंश है। जिस रूप में 'संदेश रासक' है—उसमें उसका महत्व कम नहीं होता। वह एक ऐसे मुसलमान कवि की रचना है, जिसने हाल ही में धर्म परिवर्तन किया होगा, इसमें शुद्ध रोमांस है; लोकोक्तियों के साथ, ऊहात्मक उक्तियाँ भी है; प्रकृति चित्रण में जीवन के नित्य व्यापारों का समावेश हैं। पर है यह 'पाठ्य काव्य' ही।

# सरहपाद

'सरहपाद' नई भाषाओं और छंदों के युग के आदि कवि हैं, संत सिद्ध परम्परा के आदि सिद्ध होकर भी आध्यात्मिक तौर पर वह नई दिशा देने वाले हैं; उन्हें द्वितीय बौद्ध कहकर लोग अतिशयोक्ति से काम नहीं लेते।" यह कथन है स्व० महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन का। इससे स्पष्ट है कि सरहपाद का व्यक्तित्व असाधारण व्यक्तित्व था। कहा जाता है कि पूर्वीप्रदेश के किसी राज्ञा कसवे में एक ब्राह्मण परिवार में उन्होंने जन्म लिया। यह कहना कठिन है कि वह परिवार बौद्ध था या ब्राह्मण।

सरहपाद स्पष्टतः जातिवाद और साम्प्रदायिक कट्टरता के घोर विरोधी थे। वह आठवीं सदी के उत्तरार्ध के सबसे प्रबल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। सरहपाद के गुरु थे–हरिभद्र, जो प्रसिद्ध पालवंशी राजा धर्मपाल (७७०-८१३) के समकालीन थे। राजा धर्मपाल के अन्तिम समय शबरपाद के शिष्य लुईपाद के प्रमुख शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। वह धर्मपाल का सचिव था और उन्हीं की अनुमति से उसने घर-बार छोड़ा था। इनसे सिद्ध है कि सरहपाद उससे दो पीढ़ी पहले चल बसे होंगे। इस प्रकार उनकी असाधारणप्रवृत्तियों का काल आठवीं सदी का उत्तरार्ध ठहरता है।

सरहपाद, का पहला नाम राहुलभद्र था और तब वह नालंदा विश्वविद्यालय में थे; वज्रयान के प्रथम सिद्ध होने के कारण वह सरहपाद कहलाए। इनके पहले इस परम्परा में कई सिद्ध हो चुके थे परन्तु सरह ने सिद्ध विचाराधारा को एक नया मोड़ दिया। उनके समय नालंदा में—दूसरी धाराओं के साथ अशोक के समय की विनय परम्परा भी थी—जिसमें भिक्षु को स्त्री छूना वर्जित था, वह मद्यपान नहीं कर सकता था, शरीर पर चीवर पहनना पड़ता था।" राहुल ने इसका खुला विद्रोह किया, उन्होंने एक शरकार की कन्या को रख लिया। वह, महाशूद्रा (शरकार कन्या) के साथ खुलेआम घूमते थे।

सरहपाद ने ध्यान के साथ करुणा पर जोर दिया। करुणा के बिना ध्यान (शून्यता-योग) व्यर्थ है। उनकी अपभ्रंश रचनाओं को दोहा कोश या दोहागीति कहते हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना दोहा चर्या गीति' में दोहों की अपेक्षा चौपाइयाँ अधिक हैं। सांकृत्यायन के अनुसार 'दोहा कोश' का उस समय अर्थ था 'दो पंक्ति वाले छंदों की कविता।' 'सात दोहा कोश—सिद्धचर्या और वज्रयानी योग का वेद माने जाते हैं। सरह की कविता में उलटबांसियाँ और व्यंग्योक्तियाँ हैं। असाधारण प्रतिभा वाले इस महाकवि की कविता का संग्रह इनके शिष्यों ने किया। सरह मूलतः रहस्यवादी कवि हैं और उनके श्लिष्ट पदों में—आध्यात्मिकता के साथ कामुकता भी प्रकट होती है, बाद में इस प्रकार की कविता वामाचार में सहायक हुई। एक उदाहरण है:

# योगीन्द्र ( जोइन्दु )

शांत, उदार और विशुद्ध अध्यात्मवादी कवि थे। इन्होंने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा, जोइन्दु के समय के बारे में भी मतभेद है। कुछ विद्वान इन्हें ई० पू० सदी का मानते हैं जब कि कुछ ईसवी छठी सदी का और यह मानने का मुख्य कारण है जोइन्दु के एक दोहे 'काल लहेप्पिणु' का चंड के 'प्राकृत लक्षण' में उद्धृत होना। चूंकि चंड सातवीं के उत्तरार्ध में हुए—अतः जोइन्दु को इसके पूर्व होना चाहिए। परन्तु भाषा के विचार से जोइन्दू का समय, प्रस्तावित समय से बाद में होना चाहिए, जो भी हो अपभ्रंश के विशुद्ध अध्यात्मवादियों में जोइन्दु सबसे पुराने हैं; उनकी रचनाएँ उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्तियाँ हैं; एक विशुद्ध अध्यात्मवाद के एक छोर पर जोइन्दु हैं और दूसरे पर सरहपाद। जोइन्दु वाह्य आडम्बर के घोर विरोधी हैं, वह पारिभाषिक शब्दों का अध्यात्मपरक अर्थ करते हैं। "परमात्म प्रकाश" और "योगसार" इनके प्रामाणिक उपलब्ध ग्रन्थ हैं।

# मुनि रामसिंह

जोइन्दु की परम्परा के हैं। यह भावुक और उग्र अध्यात्मवादी थे। इनका अनुमानित समय १०वीं और ११वीं के मध्य है। शैव धर्म और तांत्रिक पारिभाषिक शब्दों का इन्होंने खुलकर प्रयोग किया है। रूढ़ियों, धार्मिक आडम्बर और पाखंड के यह कटु आलोचक थे। अपभ्रंश साहित्य के कुछ समीक्षक इस धारा को जैन रहस्य-वादी धारा कहते हैं। असल में भारतीय चिंताधारा के विकास के बारे में जो 'थीसिसें' प्रस्तुत की जाती रही हैं, वे ही गलत हैं। वह एक ही चिन्ता का स्वाभाविक विकास न होकर नाना चिन्ता प्रतिचिन्ता की क्रिया-प्रतिक्रिया का परिणाम है। ऐसा समझा जाता है कि रामसिंह राजस्थानी थे परन्तु विशुद्ध अध्यात्मवादी कहीं के नहीं होते। विशुद्ध आध्यात्मवाद का एक रूप उपनिषदों में देखा जा सकता है, परन्तु उसमें चिंतन प्रबल है जबकि मध्ययुगीन अध्यात्मवाद में अनुभूति। 'पाहुड़ दोहा' का अर्थ है—'दोहों का उपहार' या दोहों में प्रतिपादित आध्यात्मिक विचार। इसमें शैलियाँ है उपदेश, अन्योक्ति और प्रतीक। और समग्र प्रतिपाद्य है अनुभूति के माध्यम से आत्मा का साक्षात्कार करना। हिन्दी के कुछ विद्वान 'आलोच्य युग' को अंतर्विरोधों का युग मानते हैं और कुछ दो विरोधी काव्य प्रवृत्तियों का। कुछ इसमें दो संस्कृतियों

के मिलन का युग मानते हैं। मेरे विचार में यह, दो व्यवस्थाओं या संस्कृतियों के संघर्ष का युग न होकर—दो दृष्टिकोणों के संघर्ष का प्रतीक मालूम है। यह संघर्ष किसी भी संस्कृति और किसी भी युग में सम्भव है। सुदूर परवर्ती संतकाव्य साधना के संदर्भ में—विशुद्ध अध्यात्मवादियों का प्रदेय यह है कि उन्होंने आलोचनात्मक दृष्टिकोण दिया, परलोक की बजाय जीवन में मुक्ति की कल्पना की; आसक्ति से ऊपर उठने का घरफूंक तमाशा दिखाया, आत्मा-परमात्मा के मिलन के लिए प्रेमी प्रेयसी की कल्पना की, सम्प्रदायवाद और धार्मिक आडम्बरों का खुला विरोध किया।

## देवसेन

असली सवयधम्म दोहाकार कौन है? यह निर्णय नहीं किया सकता। कुछ विद्वान इसका लेखक देवसेन को मानते हैं जब कि कुछ लक्ष्मीचन्द्र को। देवसेन—जैसा कि कृति के नाम से ही जाना जा सकता है कि श्रावक धर्म का उल्लेख करते हैं। वह धर्म के आचरण पक्ष के कवि हैं और धर्म का उद्देश्य, उनके लिए लौकिक समृद्धि और प्रेयता प्राप्त करना है। यही कारण है कि पुण्य और दान का बड़ा आकर्षक महत्व उन्होंने प्रतिपादित किया है।

# दोहा कोश-गीति

सिद्ध सरहपाद

सरह भणइ जग वाहिअ आलें ।
णिअ सहाव ण लक्खिअ आलें ॥१॥

## करुणा सहित भावना

अहवा करुणा केवल साइअ ।
सो जमन्तरे मोक्ख ण पावअ ॥
जइ पुण वेण्णवि जो जण साक्कअ ।
णउ भव णउ णिव्वाणें थाक्कअ ॥२॥
जइ पच्चक्ख कि भाणे कीअइ ।
अहवा भाण अन्धार साधिअअ ॥
सरह भणइ मइ कड्ढिअ राव ।
सहज सहाउ णउ भाआभाव ॥३॥

## चित्त

चित्तेक चित्त सअल वीअ भव-णिव्वाण जम्म विफुरंति ।
तं चिन्तामणिरूअं पणमह इच्छाफलन्देइ ॥४॥
वज्झइ कम्मेण जणो कम्मविमुक्केण होइ मणमुक्को ।
मणमोक्खेण अणुअरं पाविज्जइ परम (णि) व्वाणें ॥५॥

---

१. सरह कहते हैं कि दुनिया झूठ में वह रही । मूर्ख अपना स्वभाव नहीं जानता ।

२. जो केवल करुणा की साधना करता है वह जन्मांतर में भी सुख नहीं पाता । जो जन दोनों को साध सकता है, वह न निर्वाण में थकता है, और न संसार में ।

३. यदि वह प्रत्यक्ष है तो ध्यान से क्या करिए ! अथवा ध्यानांधकार को साधिए । सरह कहते हैं मैं पुकार कर कहता हूँ कि सहज स्वभाव न भावरूप है न अभाव रूप ।

४. चित्त एक है, वह सबका कारण है; जन्म और निर्वाण दोनों उसमें चमकते हैं । इच्छाफल स्वरूप उसे नमन करो, व इच्छाफल देता है ।

५. कर्म से जन बंधता है, कर्ममुक्त होने पर, मन मुक्त होता है; और मन की मुक्ति से ही पाता है जन मोक्ष !

अक्खर वाढ़ा सअल जगु, नाहि णिरक्खर कोइ ।
ताव तावसे अक्खर घोलिअइ, जाव णिरक्खर होइ ॥६॥

बद्धो धावइ दस दिसहिं, मुक्को णिच्चल ठाअ ।
एमइ करहा पेक्ख सहि, विवरिअ महु पडिहाअ ॥७॥

## परमपद

इन्दी जत्थ विलीअ गउ, णट्ठो अप्प सहाय ।
सो हलें सहजानन्द तणु, फुड पुच्छह गुरु पाव ॥८॥
जहि मण मरइ, पवणहो तहि खअ जाइ ।
एहु सो परममहासुह, सरह कहिहउ जाइ ॥९॥

णिअ मण सच्चें सोहिअ जव्वें ।
गुरु-गुण हिअहि पइसइ तव्वें ॥
एव मुणेवि णु सरहें गाइव ।
मन्त ण तन्त ण एक्कवि गाहिव ॥१०॥

## सहज महासुख

गुरु-वअण-अमिअ-रस, धवहि ण पिविअउ जेहिं ।
बहु-सात्थात्थ-मरुत्थलिहिं, तिसिअ मरिव्वो त्तेहिं ॥११॥
जिम लोण विलिज्जइ पाणिएहिं, तिम जइ चित्तवि ठाइ ।
अप्पा दीसइ परहिं सम, तत्थ समाहिए काइ ॥१२॥

---

६. जग में अक्षर वढ़ा हुआ, निरक्षर कोई नहीं है; अक्षरों को तब मिटाइए जबकि निरक्षर न हो जाय ।

७. जहाँ इन्द्रिय विलीन है। आत्म स्वभाव नष्ट है, वहाँ शरीर में सहजानंद है, उसे गुरु से पूछ लो ।

८. जहाँ मन मर जाता है, पवन भी नष्ट होता हैं; वही परम महासुख है; सरह यह कहता है ।

१०. सच्चाई से अपने मन को शुद्ध करो। गुरु के गुणों को हृदय में प्रवेश दो। मन को ऐसा बना लो, सरह गाता है कि दूसरा मंत्र तंत्र कुछ भी नहीं है ।

११. गुरुवचन के अमृत रस को जिसने दौड़कर नहीं पिया, वह बहुत से शास्त्रार्थों के मरुस्थल में प्यासा ही मरा ।

१२. जिस प्रकार नमक पानी में मिल जाता है, उसी प्रकार यदि चित्त मिल जाय तब आत्मा पर के समान दिखाई देने लगती है, फिर समाधि से क्या ?

## परमपद

जहि मण पवण ण संचरइ, रवि-ससि णाहिं पवेस ।
तहिं वढ़ चित्त विसाम करु, सरहें कहिअ उएस ।।१३।।
एक्क करु मा वेण्णि करु, मा करु विण्णि विसेस ।
एक्कें रंगें रञ्जिअा, तिहुअण सअलासेस ।।१४।।
अग्गें पच्छें दसदिसें, जं जं जोअमि सोवि ।
ऐव्वें तु दीठन्तडी, णाह ण पुच्छसि कोवि ।।१५।।
अप्पा परहिं ण मेलविउ, गमणागमण ण भाग्ग ।
तुस कुट्टंते काल गउ, चाउल हत्थ ण लाग्ग ।।१६।।

## शून्यता

सुण्णावि अप्पा सुण्ण जगु, घरें-घरें एहु अक्खाण ।
तरुअर-मूल ण जाणिआ, सरहे हिं किअ वक्खाण ।।१७।।
जइ रसाअलु पइसरहु, अह दुग्गमहु आआस ।
भिण्णा आर मुण तुह, कह मोक्ख-हब्वासु ।।१८।।

## भोग में योग

चित्ताचित्त वि परिहरहु, तिम अच्छहु जिमवाल ।
गुरु-वअणेंदिढ भत्ति करु, होइहइ सहज उल्लाल ।।१९।।

---

१३. जहाँ मन और पवन का संचार नहीं, रवि चन्द्र का प्रवेश नहीं। मूर्ख वहाँ विश्राम कर। सरह ने यही उपदेश दिया है।

१४. एक से लौ लगा, दो से नहीं; दो विशेष मत कर।
एक ही रंग में रंगा है अशेष त्रिभुवन।

१५. आगे पीछे दस दिशाओं में, जहाँ जहाँ देखता हूँ वही है; तुम्हें इस प्रकार देख लेने पर; अब मुझे किसी से नहीं पूछना।

१६. अपना परायापन छोड़ा नहीं; आवागमन भी रोका नहीं;
तुस कूटते समय गया, चावल हाथ नहीं लगा।

१७. आत्मा शून्य, जग भी सूना, घर-घर यही आख्यान है; तरुवर के मूल को जाना नहीं : सरह खुले आम यह कहता है।

१८. यदि रसातल जाओ या दुर्गम आकाश में। तुम्हारा मन भिन्नाकार है मोक्ष किस प्रकार हो !

१९. चित्त अचित्त को भी छोड़ो, बालक की तरह रहो; गुरु के वचन में भक्ति करो सहज प्रकाश हो जायगा।

जाव ण अप्पउ पर परिआणसि ।
ताव कि देहाणुत्तर पावसि ॥
एमइ कहिउ भान्ति ण भावा ।
अप्पउ अप्पा बुज्झहि तावा ॥२०॥
विसअ रमन्ते ण विसअहिं लिप्पइ ।
उअल हरन्तें ण पाणीच्छुप्पइ ॥
एमइ जोइ मूल सगत्तो ।
विसअ ण बाज्झइ विसअरमन्तो ॥२१॥

पंडिअ सअल सत्थ वक्खाणअ ।
देहहिं बुद्ध वसन्त ण जाअण ॥
अमणागमण ण एक्क वि खण्डिअ ।
तउ णिलज्ज भणइ हुउं पण्डिअ ॥२२॥

**सपज-अवस्था**

जत्तइ चित्तहु विफुरइ, तत्तइ णाहु सरूअ ।
अण्ण तरंग कि अण्ण जलु, भव-सम ख-सम सरूअ ॥२३॥

ण तम वाएं गुरु कहइ, णउ तं बुज्झइ सीस ।
सहज सहावा हलें अमिअरस, कासु कहिज्जइ कीस ॥२४॥

---

२०. जब तक नहीं जानते अपने पर को, तब तक क्या अनुत्तर देहा को पा सकता है ! ऐसा कहा गया है, इसमें भ्रांति नहीं; तब आत्मा आत्मा को पहचान लेता है ।

२१. विषय का भोग करता है विषयों में लिप्त नहीं होता; कमल तोड़ता परन्तु पानी को नहीं छूता; इस प्रकार योगी मूल का सगोत्री है; विषय में रमता हुआ भी, उसमें आसक्त नहीं होता ।

२२. पंडित सब शास्त्रों का व्याख्यान करता है परन्तु देह में बसते बुद्ध को नहीं जानता, इसी में आना जाना नहीं मिटा, फिर भी निर्लज्ज अपने को पंडित कहता है ।

२३. सहज-अवस्था—जब तक चित्त चमकता है तब तक स्वरूप नहीं जाना जा सकता; क्या तरंग अलग है और पानी अलग है; स्वरूप संसार और शून्य दोनों के समान है ।

२४. न उसे गुरु वचन से कहता है और न ही शिष्य उसे समझ सकता है । हे सखी ! सहज स्वभाव अमृत रस है, वह किससे कहा जाय ।

जत्तइ पइसइ जलेंहि जलु, तत्तइ समरसु होइ ।
दोस गुणाअर चित्तता, वढ पडिवक्ख ण होइ ॥२५॥

रिद्धि-सिद्धि इलें वेरिण न काज्ज ।
पाप-पुण्ण तहिं पाडहु बाज्ज ॥
सो अ (ा)णुत्तर बुज्झहिं जव्वें ।
सरह भणइ जग सिज्झइ तव्वें ॥२६॥

## ऐहिकतावादी कोण

एत्थु से सरसइ सोवणाह, एथु से गङ्गासाअरु ।
वाराणसि पआग एथु, से चान्द-दिवाअरु ॥२७॥
खेत्त पिट्ठ उअपिट्ठ, एथु मइ भमिअ समिट्ठउ ।
देहासरिस तित्थ, मइ सुणउ ण दिट्ठउ ॥२८॥
जग उपपाअणे दुक्ख बहु, उप्पण्णउ तहिं सुहसार ।
उप्पण उप्पाअ णहिं, लोअ ण जाणइ सार ॥२९॥

बुद्ध वि वअणें एत्तवि धम्म ।
लोआचारें एत्तवि कम्म ॥
सअल तत्त सहावें देक्खह ।
लोआचार जे तहिं उएक्खह ॥३०॥

---

२५. जितना जल जल में समा जाता है, उतना ही समरस होना चाहिए; दोष और गुणों का आकर चित्त तव विपरीथ नहीं होता ।

२६. हे सखी, ऋद्धि और सिद्धि दोनों से काम नहीं। पाप पुण्य पर वज्र पड़े। वही अनुत्तर को समझ सकता है और वही तव सिद्ध हो सकता है—ऐसा कहते हैं ।

२७. यही (देह) सरस्वती है, यही सोमनाथ है, यही है वह गंगासागर; यही है वाराणसी और प्रयाग, चन्द्रमा और सूरज ।

२८. यह क्षेत्र, पीठ उपपीठ, मैं समाधि पर भटका। देह के समान तीर्थ, न मैंने देखा और न मैंने सुना ।

२९. जग में उत्पन्न होने में बहुत दुःख है; उत्पन्न होने पर ही सुखसार हैं; उत्पन्न और उत्पाद कुछ नहीं है, दुनिया यह तत्व सार नहीं समझती ।

३०. शब्दों में बाँध लो यही धर्म है, लोकाचार में यही कर्म है; जो समस्त तत्वों को अपने स्वभाव में देखता हैं, तब वह लोकाचार की उपेक्षा करता है ।

पासें पास भमन्ते अच्छह ।
सरह भणअ तसु घरिणी णेच्छअ ॥
साङ्क के खाद्धउ सअल जगु ।
सङ्का ण केणवि खाद्ध ॥३६॥

---

३६. पास पास रहते हुए घूमते हुए भी सरह कहते हैं, उस घरनी को नहीं चाहते । शंका ने ही सब जग खा लिया, शंका को कोई नहीं खा सका ।

मेल्लिवि सयला अवक्खड़ी, जिय, णिच्चिंतउ होइ ।
चित्तु णिवेसहि परम-पए, देउ णिरंजणु जोइ ॥७॥

जोइय, णिय-मणि णिम्मलए पर दीसइ संतु ।
अंबरि णिम्मलि घण-रहिए भाणु जि जेम फुरंतु ॥८॥

राए रंगिए हियवडए देउ ण दीसइ संतु ।
दप्पणि मइलए बिंबु जिम, एहउ जाणि णिभंतु ॥९॥

जहिं भावइ तहिं जाइ, जिय, जं भावइ करि तं-जि ।
केम्वहि मोक्खु ण अत्थि पर, चित्तहं सुद्धि ण जं-जि ॥१०॥

सिद्धिहं केरा पंथडा, भाउ विसद्धउ एक्कु ।
जो तसु भावहं मुणि चलइ, सो किम होइ विमुक्कु ॥११॥

बुज्झइ सत्थइं, तउ चरइ, पर परमत्थु ण वेइ ।
ताव ण मुंचइ जाम णवि इहु परमत्थु मुणेइ ॥१२॥

चेल्ला-चेल्ली-पेत्थियहिं तूसइ मूढु णिभंतु ।
एयहिं लज्जइ णाणियउ वंधहं हेउ मुणंतु ॥१३॥

संता विसय जु परिहरइ, वलि किज्जउं हउं तासु ।
सो दइवेण जि मुंडियउ, सीसु खडिल्लउ जासु ॥१४॥

मोक्खु म चिंतहि? जोइया, मोक्खु न चिंतउ होइ ।
जेण णिबद्धउ जीवडउ, मोक्खु करेसइ सोइ ॥१५॥

'परमप्पयास'

णिम्मलु णिक्कलु सुद्ध जिणु विण्हु बुद्धु सिव संतु ।
सो परमप्पा जिण भणिउ, एहउ जाणि णिभंतु ॥१॥

---

७. अवक्खड़ी—झंझट । णिच्चिंतउ—निश्चिंत ।

८. घण रहिए—घन रहित, अंबरि—आकाश में, फुरन्तु—चमकता है ।

१०. केम्वहि—किसी भी तरह, चित्तहं—चित्त की ।

११. सिद्धहं केरा—सिद्धों का, विमुक्कु—विमुक्त ।

१२. सत्थइं—शास्त्रों को । वेइ—जानता है । (वेत्ति)

१३. तूसइ—संतुष्ट रहता है, णाणियउ—ज्ञानी, हेउ—हेतु, कारण ।

१४. संता—विद्यमान । वलि किज्जउं—बलिहारी करता हूं ।

१५. करेसइ—करेगा ।

जो परमप्पा सो जि हउं, जो हउं सो परमप्पु ।
इउ जाणेविणु, जोइया, अण्णु म करहु वियप्पु ॥२॥

जाम ण भावहि, जीव, तुहुं, णिम्मल अप्प-सहाउ ।
ताम ण लब्भइ सिव-गमणु, जहि भावइ तहिं जाउ ॥३॥

वउ तउ संजमु सीलु, जिय, ए सव्वइं अकयत्थु ।
जाव ण जाणइ इक्क पर सुद्धउ भाउ पवित्तु ॥४॥

ताम कु-तित्थइं परिभमइ, धुत्तिम ताम करेइ ।
गुरुहु पसाएं जाम णवि, अप्पा देउ मुणेइ ॥५॥
पुण्णिं पावइ सग्ग जिउ, पावएं णरय-णिवासु ।
बे छंडिवि अप्पा मुणइ, तो लब्भइ सिव-वासु ॥६॥

देहा-देवलि देउ जिणु, जणु देवलिहिं णिएइ ।
हासउ महु पडिहाइ इहु, सिद्धें भिक्ख भमेइ ॥७॥

आउ गलइ, णवि मणु गलइ, णवि आसाहु गलेइ ।
मोहु फुरइ, णवि अप्प-हिउ, इम संसार भमेइ ॥८॥

जेहउ मणु विसयहं रमइ, तिमु जइ अप्प मुणेइ ।
जोइउ भणइ, हो जोइयहु, लहु णिव्वाणु लहेइ ॥९॥

धंधइ पडियउ सयल जगि, णवि अप्पा हु मुणंति ।
तहि कारणि ए जीव फुडु, ण हु णिव्वाणु लहंति ॥१०॥

जइ लोहम्मिय णियउ, बुह, तइ सुणम्मिय जाणि ।
जे सुहु असुहु परिच्चयहिं, ते-वि हवंति हु णाणि ॥११॥

---

२. सो जि हउं—वही मैं हूं, जाणेविणु—जानकर, वियप्पु—विकल्प ।
३. अप्प सहाउ—आतम स्वभाव, लब्भइ—पाया जाता है ।
४. वउ—व्रत, तउ—तप ।
५. धुत्तिम—धूर्तता, पसाएँ—प्रसाद से ।
६. पुण्णि—पुण्य से । छंडिवि—छोड़कर ।
७. देहा-देवलि—देहरूपी मन्दिर, पडिहाइ—प्रतिभासित होता है, भिक्खं—भीख, भमेइ—भ्रमण करता है ।
८. अप्प हिउ—आत्महित, फुरइ—चमकता है ।
९. विसयहं—विषयों मे । णिव्वाणु—निर्वाण ।
११. लोहम्मिय—लोह मय, सुणम्मिय——स्वर्णमय, परिच्चयहिं—छोड़ देते है ।

जं वड-मज्झइं बीउ फुडु, बीयहं वडु वि हु जाणु।
तं देहहं देउ वि मुणहि, जो तइ-लोय-पहाणु ॥१२।
जो जिण सो हउं, सो जि हउं, एहउ णिभंतु ।
मोक्खहं कारण जोइया, अण्णु ण तंतु ण मंतु ॥१३॥

---

१२. तइलोय—त्रिलोक ।
१३. णिभंत—निर्भ्रान्त, तंतु मंतु—तंत्र मंत्र ।

# मुनि रामसिंह

गुरु दिणयरु, गुरु हिम-किरणु, गुरु दीवउ, गुरु देउ।
अप्पा-परहं परंपरहं, जो दरिसावइ भेउ ॥१॥

उव्वलि चोप्पडि चिट्ठ करि, देहि सु-मिट्ठाहार।
सयल वि देह णिरत्थ गय, जिह दुज्जणि उवयार ॥२॥

मणु मिलियउ परमेसरहो, परमेसरु जि मणस्स।
बिण्णि वि सम-रस हुइ रहिय, पुज्ज चडावउं कस्स ॥३॥

भिंतर-चित्ति वि मइलियइं, बाहिरि काइं तवेण ?
चित्ति णिरंजणु को-वि धरि, मुच्चहि जेम मलेण ॥४॥

हत्थ अहुट्ठहं देवली, बालहं णाहि पवेसु।
संतु णिरंजणु तहिं वसइ, णिम्मलु होइ गवेसु ॥५॥

हउँ सगुणी, पिउ णिग्गुणउ, णिल्लक्खणु णीसंगु।
एक्कहिं अंगि वसंतयहं, मिलिउ ण अंगहिं अंगु ॥६॥

देह गलंतहं सवु गलइ, मइ सुइ धारणा धेउ।
तहिं तेहइं, वढ, अवसरहिं विरला सुमरहिं देउ ॥७॥

छह-दंसण-धंधय पडिय, मणहं ण फिट्टिय भंति।
एक्कु देउ छह भेउ किय, तेण ण मोक्खह जंति ॥८॥

---

मुनि रामसिंहः—२. उव्वलि— । चोप्पडि—चुपड़कर। चिट्ठकरि—बैठाकर। उवयार—उपकार।

३. विण्णि—दोनों। पुज्ज—पूजा।

४. भिंतर चित्ति—भीतर चित्त में।

५. हत्थ अहुट्ठहं—साड़े तीन हाथ का।

७. मइ—बुद्धि। सुइ—श्रुति, शास्त्र। तेहइं—वैसे। अवसरहिं—अवसरों पर। धेउ—ध्येय।

८. छह दसण-धंधय पडिय—६: दर्शनों के धंधे में पड़ा हुआ।

पोत्था पढणि मोक्खु कहं मणु वि असुद्धउ जासु।
बहु-यारउ लुध्धउ णवइ मूल ट्ठिउ हरिणासु ॥९॥

तित्थइं नित्थ भमेइ, वढ, धोयउ चम्मु जलेण।
एहु मणु किम धोएसि तुहुँ मइलउ पाव-मलेण ॥१०॥

अग्गइं पच्छइं दह-दिहहिं जहिं जोवउं तहँ सोइ।
ता महु फिट्टिय भंतडी, अवसु ण पुच्छइ कोइ ॥११॥

जो पइं जोइउं, जोइया, तित्थइं तित्थ भमेइ।
सिउ पइं सहुं हिंहिडियउ लहिवि ण सक्किउ,तोइ ॥१२॥

मूढा जोवइ देवलइं, लोयहिं जाइं कियाइं।
देह ण पिच्छइ अप्पणिय, जहिं सिउ संतु ठियाइं ॥१३॥

जइ लद्धउ माणिक्कडउ, जोइय, पुहुवि भमंत।
बंधिज्जइ णिय-कप्पडइं जोइज्जइ एक्कंत ॥१४॥

# देवसेन

दुज्जणु सुहियउ होउ जगि, सुयणु पयासिउ जेण।
अमिउ विसें, वासरु, तमिण, जिम मरगउ कच्चेण ॥१॥

इक्कु वि तारइ भव-जलहि बहु दायार सुपत्तु।
सु-परोहणु एक्कु वि बहुय दीसइ पारहु णितु ॥२॥

---

९. पोत्था पढणि—पोथी पढ़के से। वहुयारउ—वधकार। लुव्धउ—लुव्धक—शिकारी। मूलट्ठिउ—मूल स्थित। हरिणासु—हरिणों के।

१०. तित्थइं तित्थ—तीर्थो से तीर्थ, मइलउ—मैला, भंतडी—भ्रान्ति।

१२. पइं सहुं—तुम्हारे जैसा। हिंहिडियउ—घूमता फिरा। लहिवि ण सक्किउ—पा नहीं सका।

१३. मूढा—मूर्ख, लोयहिं—लोगों ने जिन्हें बनाया, पिच्छइ—पहचानता। अप्पणिय—अपनी। ठियाइं—स्थित हैं।

१. सुहियउ—सुहित कल्याण। सुयणु—सुजन, सज्जन। अमिउ—अमृत। वासरु दिन। मरगउ—मरकत। कच्चेन—कांच से।

२. वहुदायार—वहु देने वाला, दाता। सु-परोहण—नाव।

---

५. पाविज्जइ—पाया जाता है, गाइ—गाय, पइच्छइ—देती है, गाइ तुसइं—घास भूसा। पयच्छइ—देती है, दुद्धु—दूध।

६. जाणहिं—यानों में, जंति—जाते हैं, पावें—पाप से, वहंति—ले जाते हैं, वहन करते हैं।

७. बहु तरइ—बहुतों को तारता है, सइं—स्वयं, वडु—वट, बहुयहं—बहुतों को। छाया करइ—छाया करता है, घम्मु—घाम।

८. मोक्कलउ—मुक्त, दुक्खसयाइं—सैकड़ों दुःख, पुच्छिज्जइ काइं—पूछना क्या ?

९. काइं बहुत्तइं जंपियइं—बहुत कहने से क्या ?

१०. विणय-विवज्जहिं—विनय से रहितों के। केम रहंति—कैसे रहते हैं।

शरद्

सोहइ सलिलु सरिहिं सयवत्तिहिं,
विविहइ तरग तरंगिणि जंतिहिं।
जं हुय हीय गिंभि णव सरयह,
तं पुणु सोहइ चडी णव सरयह ।१०॥

---

४. लोग, शरीर को कपूर और चन्दन से व्यर्थ चर्चित करते; क्योंकि विरहाग्नि तो प्रिय ही बुझा सकता है ?

वर्षाः—५, बगुले सरोवर छोड़कर तरु शिखरों पर चढ़ गए; नाचते हुए मोर शिखरों पर बोल उठे; मेंढक तालाबों में कठोर आवाज कर रहे हैं; आम्रवृक्षों पर कोयलें बोल रही हैं। ६. मच्छरों के डर से गायों का झुण्ड ऊंची टेकरी पर चढ़ गया है; गोपियाँ अपने पतियों के साथ सुन्दर गीत गा रही हैं; कदम्बों से हरीभरी धरती महक उठी है ? कामदेव अंग अंग को चूर कर रहा है। ७. नव मेघमालाओं से गुंफित आकाश और लाल लाल दिशा में इन्द्रधनुप का प्रसार! और बहुटियों से अत्यन्त ढका हुआ पावस एकदम असह्य है।

शरद्:—१०. समयत्तिही—शतपत्रों, कमलनियों से। बहती हुई नदी, विविध तरंगों से। ग्रीष्म ने नवशरद् की जो शोभा, आहत कर छीन ली थी, वह नव शरद् पर फिर चढ़ गई।

मंडहि भुवण नवल ओड्डणहिं,
महिलिय दिंति सलाइय अच्छिहिं ॥१६॥

इम लिहि केलि करहि संपुन्निय,
मइ पुणु रयणि गमिय उव्विन्निय ।
अक्खइ घरि घरि गीउ रवन्नउ,
इक्कु समग्गु कट्ठ मह दिन्नउ ॥१७॥

सिरि नहि देखि णाह फुरइ जुन्ह णिम्मल चंदह,
अह कलरउ न सुणंति हंस फल सेवि रविंदह ।
अह पायउ णहु पढइ कोइ सुललिय पुणु राइण,
अह पंचमु णहु कुणइ कोइ कावालिय भाइण,
महमहइ अहव पच्चूसि णहु ओससित्तु घण कुसुमभरु,
अह मुणिउ पहिय । अणरसिउ पिउ सरइ समइ जु न
सरइ घरु ॥१८॥

## हेमन्त

दीह उसासिहि दीह रयणि महु गइय णिरक्खर ।
आइ ण णिद्दय ! णिंद तुज्झ सुयरंतिय तक्खर ।
अंगिहिं तुह अलहंत धिट्ठ ! करयल फरिसु ।
संसोसिउ तणु हिमिण हाम हेमहु सरिसु ।
हेमंति कंत । विलवंतियहु, जइ पलुट्टि नासासिहसि,
तं तइय मुक्ख ! खल ! पाइ मइ मुइय विज्ज किं
आविहसि ॥१६॥

---

१८. दीवाली में रात में दीपदान करती हैं; नयी चन्द्र रेखा के समान हाथ में लेकर; दोनों से संसार को आलोकित करती है; महिलाएँ आँखों में सलाई से काजल लगाती हैं । १७. इस प्रकार कोई पुण्यवती क्रीड़ा करती हैं, मै दु;ख में रात बिताती हूं; घर घर सुन्दर गीत है, एक अकेली मुझे सारा दुख दिया ।

हेमन्तः—१६. हे मूर्ख, लम्बी उसांसों में लम्बी रात बीत गई, हे निर्दय चोर, तुम्हारी याद करते हुए नींद नहीं आई; रे ढीठ, तुम्हारे हाथों का स्पर्श न पाने से, हेमन्त ने मेरे अंग अंग सुखा डाले; जैसे धूप ठंड को । हे प्रिय यदि हेमन्त में भी नहीं आते और विलाप करती हुई मुझे आश्वासन नहीं देते; तो क्या रे दुष्ट मेरे मरने पर आओगे ?

## शिशिर

छायफुल्लफलरहिय असेविय सउणियण,
तिमिरंतरिय दिसा य तुहिण धूइण मरिण ।
मग्ग भग्ग पंथियह ण पवसिहि हिम डरिण,
उज्जाणिहि ढंखरिय असोसिय कुसुमवण ।।२०।।

तरुणिहि कंत पमुक्किय णिय केली हरिहि,
सिसरि भइण किउ जलणु सरणु अग्गीहरिहि ।
उवभुंजहि केलीरसु अब्भितंर भुयण,
उज्जाणह दुम्मिहिंवि ण कीरइ किंवि सयण ।।२१।।

## वसन्त

महमहिउ अंगि बहु गंधमोउ,
णं तरणि (तरुणि) पमुक्कउ सिसिर सोउ ।
तं पिक्खिवि मइ मज्झहि सहीय,
लंकोडउ पढ़ियउ वल्लहीय ।।२२।।

निवडंत रेणु धरपिंजरीहि,
अहियथर तविय णवमंजरीहि ।
मरु सियलु वाइ महि सीयालंतु,
णहु जणइ सीउ णं खिवइ तंतु ।।२३।।

---

शिशिर—२०. उज्जाविहि—उद्यान में जो कुसुम वन अभी तक नहीं सूखा था, वह भी झाड़-झंखाड़ रह गया है ।

२१. पत्नियां पतियों को केलिघर में छोड़कर, शीत के डर से अग्निघर में आग की शरण में है; भीतर ही भुजाओं से क्रीड़ारस का आनन्द ले रही है । उद्यानों में पेड़ों के नीचे अब कोई नहीं सोता ।

वसंत:—२२ .बहुत से गंध आमोद से अंग अंग महकने लगे मानो तरुणी (तरणि) सूर्य ने शिशिर का शोक छोड़ दिया हो, यह देखकर मैंने प्रिय सखियों के बीच, यह श्लोक पढ़ा ।

२३. नयी मंजरियों से धरती पर पराग गिरता है, वह अधिक तप उठता है, ठण्डी हवा धरती को शीतल करती हुई बहती है, वह ठंडक पैदा नहीं करती, वरन संताप फैलाती है ।

---

२७. जिसका नाम लोगों ने झूठमूठ रख छोड़ा है, वह अशोक भी एक क्षण भी शोक दूर नहीं करता; कामदेव दर्प से अंगों को जलाता है। सहकार (आम्रवृक्ष) भी अंगों को सहारा नहीं देता।

२८. उसके शिखर पर प्रेम से सराबोर काली कोयलें बोल रही हैं, मानों भरत मुनि के विविध भावों को गा रही हों, अत्यन्त सुन्दर वसंत ऋतु आगई: मधुकर भी अत्यन्त सुन्दर स्वर में बोल रहे हैं।

२९. वसंत में चांचर खेल में ताली की ध्वनि कर गीत गाया जा रहा है और अपूर्व नाच हो रहा है, मजबूती से गहने पहने हुए खेलती हुई जिनकी करधनी किंकणियों की रुनझुन हो रही है ?

३०. नवयौवना तरुणियां गरज रही हैं,––उसे सुनकर प्रिय की आकांक्षा रखने वाली उसने एक गाथा पढ़ी।

# दोहा संग्रह

हेमचन्द्र

## :) वीर

एइ ति घोड़ा,, एह् थलि, एइ ति निसिआ खग्ग ।
एत्थु मुणीसिम जाणिअइ, जो नवि वालइ वग्ग ॥१॥

पुत्तें जाऍ कवणु गुणु, अवगुणु कवणु मुऍण ।
जा वप्पी की भूंहडी चंपिज्जइ अवरेण ॥२॥

हिअडा जइ वेरिअ घणा, तो किं अब्भि चडाहुँ,
अम्हाहिं वे हत्थडा, जइ पुणु मारि मराहुँ ॥३॥

अम्हे थोवा, रिउ बहुअ, कायर एम्व भणंति ,
मुद्धि, निहालहि गयण-यलु, कइ जण जोन्ह करंति ॥४॥

पइं मइं वेहिं वि रण-गयहिं को जय-सिरि तक्केइ ।
केसहिं लेप्पिणु जम-घरिणि, भण, सुहु को थक्केइ ॥५॥

तुम्हेहि अम्हेहि जं किअउं दिट्ठउं बहुअ जणेण ।
तं तेवंड्डउ समर:भरु निज्जिउ एक्क-खणेण ॥६॥

जाम न निवडइ कुंभ-यडि सीह-चवेड-चडक्क ।
ताम समत्तहं मय-गलहं पइ-पइ वज्जइ ढक्क ॥७॥

---

१. एइ ति घोड़ा=यही वे घोड़े । एइ ति निसिआ खग्ग=ये ही वे पैनी तलवारें । मुणीसिम=मनुष्यत्व । वालइ वग्ग=मोड़ता है लगाम ।

२. भूहंडी=भूमि धरती । चंपिज्जइ=चांप ली गई । अवरेण=दूसरे के द्वारा ।

४. अब्भि=आकाश में । चढाहुँ=जढ़ जाऊं । अम्हा हिं=हमारे भी । वे हत्थड़ा =दो हाथ ।

५. जोन्ह=ज्योत्स्ना । ६. रण गयहिं=रण में जाने पर । जयश्री=विजय श्री । को तक्केइ=कोई कल्पना करता है ।

७. तं तेवड्डउ=वह उतना बड़ा । समरभर=युद्ध भार ।

कंत जु सीहहो उवमि अइ, तं महु खंडिउ माणु ।
सीहु णिरक्खय गय हणइ, पिउ पय-रक्ख-समाणु ॥८॥
भग्गउ देक्खिवि निअय-बलु, बलु पसरिअउं परस्सु ।
उम्मिलइ ससि-रेह जिव करि करवालु पियस्सु । ॥९॥
जहिं कप्पिज्जइ सरेण सरु, छिज्जइ खग्गेण खग्गु ।
तहिं तेहइ भड-घड निवहि-कंतु पयासइ मग्गु ॥११॥
संगर-सयेहिं जु वण्णिअइ-देक्खु अम्हारा कंतु ।
अइ-मत्तंह चत्तंकुसहं गय कुंभइं दारन्तु ॥१२॥
कंतु महारउ, हलि सहिए, निच्छइं रूसइ जासु ।
अत्थिहिं सत्थिहिं हत्थिहिं वि ठाउ वि फेडइ तासु ॥१३॥
महु कंतहो गोट्ठ-ट्ठिअहो, कउ झुंपडा बलंति ।
अह रिउ-रूहिरें उल्हवइ-अह अप्पणें, न भंति ॥१४॥
महु कंतहो बे दोसडा, हेल्लि, म, झंखहि आलु ।
देंतहो हउं पर उव्वरिअ, जुज्झंतहो करवालु ॥१५॥
प्रिय एम्वहिं करे सेल्लु करि, छड्डहि तुहुं करवालु ।
जं कावालिय बप्पुडा लेहिं अभग्गु कवालु ॥१६॥
जइ भग्गा पारक्कडा तों, सहि मज्झु पिएण ।
अह भग्गा अम्हहं तणा, तो तें मारिअडेण ॥१७॥
पाइ विलग्गी अंत्रडी, सिरु ल्हसिउ खंधस्सु ।
तो वि कटारइ, हत्थडउ बलिकिज्जउ कंतस्सु ॥१८॥
भल्ला हुआ जु मारिआ, बहिणि, महारा कंतु ।
लज्जेज्जंतु वयंसिअहु, जइ भग्गा घरु एंतु ॥१९॥

कुंभयडि=कुंभ तट पर । सीह चवेड-चडक्क=सिंह की चपेट की तड़क
समत्तहं मयगलहं=मतवाले हाथियों का । वज्जइ ढक्क=बजता है नगाड़ा
उवमिअइ=उपमीयते । णिरक्खय=अरक्षित । पय रक्ख=पद रक्षित ।
उम्मिल्लइ ससि-रेह=चन्द्र रेखा के समान चमकता है ।
कप्पिज्जइ=काटा जाता है । निवहि=समूह में । पयासइ=प्रकाशित करता
है । १२. चत्तकुंसहं—त्यक्तांकुश गय अंकुश रहित गज । १३. अत्थिहिं-
अस्त्र-शस्त्र और हाथियों सहित ।
आलु म झंखहि—झूठ मत बोलो । उल्हवइ—शांत करता है ।
अभग्गु—अभग्न । १७. पारक्कड़ा—पराए ।

आयहिँ जम्महिँ अन्नहिँ वि, गोरि, सु दिज्जहि कंतु ।
गय मत्तह चत्तंकुसहं, जो अभिडइ हसंतु ॥२०॥
खग्ग-विसाहिउ जहिँ लहहु, पिय, तहिँ देसहिँ जाहुं ।
रण-दुब्भिक्खे भग्गाइं, विणु जुज्झे न वलाहुँ ॥२१॥
बिहवि पणट्ठइ वंकुडउ, रिद्धिहि जण-सामन्नु ।
किंपि मणाउं महु पिअहो ससि अणुहरइ न अन्नु ॥२२॥
विहि विणडउ, पीडंतु गह, मं धणि, करहि विसाउ ।
संपइ कड्ढउ वेस जिवं, छुडु अग्घइ ववसाउ ॥२३॥
एहु जम्मु नग्गहं गयउ, भडसिरि खग्गु न भग्गु ।
तिक्खा तुरय न वालिया गोरी गलि न लग्गु ॥२४॥

## (२) अन्योक्ति

भमर, म रुणझुणि रण्णड सा दिसि जोइ म रोइ ।
सा मालइ देसंतरिअ, जसु तुहुँ मरहि विओइ ॥१॥
भमरा-एत्थु-वि लिंबडइ के-वि दिअहडा विलंबु ।
घण-पत्तलु छाया-बहुलु फुल्लइ जाम कयंबु ॥२॥
बप्पीहा, कइ बोल्लिएण निग्घिण वार-इ-वार ।
सायरि भरिअइ विमल-जलिं लहइ न एक्कइ धार ॥३॥
कुंजरु अन्नहं तरुअरहं कोड्डेण घल्लइ हत्थु ।
मणु पुणु एक्कहिं सल्लइहिं, जइ पुच्छह परमत्थु ॥४॥

---

२०. आयहिं जम्मिहिं—इस जन्म में दूसरे जन्म में जो अभिडइ हंसतु—भिड़ जाय हंसता हुआ। २१. खग्ग-विसाहिउ—खग्ग व्यवसाय। जहिं लहहुं—जहां प्राप्त करूं। २२. विहवि पणट्ठइ वंकुडउ—धन के नष्ट होने पर बांका। रिद्धिहि—ऋद्धि में। जन-सामन्नु—जन सामान्य। २२. किं पि मणाउ—कुछ थोड़ा। महु-पिय-हो—मेरे प्रिय से। ससि अनुहरइं—चन्द्रमा समानता करता है। २३. विहि विणडउ—भाग्य नाचे। पीडन्तु गह—ग्रह सताएं। वेस जिवं—वैश्य की तरह। छुडु अग्घइ ववसाउ—जरा व्यवसाय तो चल जाय। २४. व्यर्थ गया मेरा यह जन्म। न योद्धा की श्री मिली, न तलवार भग्न की, व तीखे घोड़ों पर चढा, और न गोरी के गले लगा।

१. रुणाइ—अरण्य-जंगल में। देसंतरि अ—देशान्तरित कर दी गई।
२. लिंबडइ—नीम पर। कयंबु—कदम्ब। ३. बप्पीहा—पपीहा। निग्घिण—निर्दय। ४. कोड्डेण—कौतुक से। हत्थु घल्लइ—हाथ डालता है। एक्कहिं सल्लइहिं—एक सल्लकी लता में। पुच्छइ—पूछते हो।

कुंजर, सुमहिं म सल्लइउ, सरला सास म मेल्लि ।
कवल जि पाविय विहि-वसेण, ते चरि, माणु-म मेल्लि ॥५॥
मइं वुत्तउं, तुहुं धुरु धरहि, कसरेहिं विगुत्ताइं ।
पइं विणु, धवल, न चडइ भरु, एम्वइ वुन्नउ काइं ॥६॥
धवलु विसूरइ सामिअहो गरुआ भरु पिक्खेवि ।
हउं किं न जुत्तउ दुहुं दिसिहिं खंडउं दोण्णि करेवि ॥७॥
गयउ सो केसरि, पिअहु जलु, निच्चिंतइं हरिणाइं ।
जसु केरएं हुंकारडएं मुहहुं पडंति तिणाइं ॥८॥
तणहं तइज्जी भंगि न वि तें अवड-यडि वसंति ।
अह जणु लग्गवि उत्तरइ अह सह सइं मज्जन्ति ॥९॥
सिरि चडिआ खंति प्फलइं, पुणु डालइं मोडंति ।
तो-वि महद्दुम सउणाहं अवराहिउ न करंति ॥१०॥

पइं मुक्काहं वि वरतरु
फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताणं ।
तुह पुण छाया जइ होज्ज
कह-वि ता तेहिं पत्तेहिं ॥११॥

जे छड्डेविणु रयण-णिहि अप्पउ तडि घल्लंति ।
तहं संखहं विट्टालु परु, फुक्किज्जंत भमंति ॥१२॥

एत्तहे मेह पिअंति जलु,
एत्तहे वडवानल आवट्टइ ।
पेक्खु गहीरिम सायरहो,
एक्क-वि कणिअ नाहिं ओहट्टइ ॥१३॥

---

४, सास म मेल्लि—सांस मत छोड़ो। विधि-वसि—भाग्य के वश से।

६, कसरेहिं विगुत्ताइं—कसर-गरियाल वैल से खिन्न। काइं वुन्नउ-इस समय खिन्न क्यों ? हउं दुहुं दिसि-दोनों दिशाओं में मुझे क्यों नहीं जोत दिया। जसु केरए हुंकारडएँ-जिसकी हुंकार से ।

९. तइज्जी भंगि ण वि-तीसरी गति नहीं। तें अवड तडि पडन्ति-चूंकि औघट घाट पर पड़ते हैं १ १०, सउसाहं-पक्षियों का। १२. अघड यडि घल्लंति-अपने को तट पर डाल लेते हैं। बिट्टालु-नीच। फुक्किजंत भमंति-फूंके जाते हुए घूमते है। १३. आवट्टइ—विद्यमान है। गहीरइ-गंभीर। सायर हो-समुद्र का। कविअ नाहिं ओहट्टइ-एक कण भी कम नहीं होता।

सोसउ म सोसउ च्चिअ
उअही, वडवानलस्य किं तेण।
जं जलइ जले जलणो
आएण व किं न पज्जत्तं ॥१४॥

तं तेत्तिउ जलु सायरहो, सो तेवडु वित्थारु।
तिसहे निवारणु पलु वि न-वि, पर धुट्टुअइ असारु ॥१५॥

वच्छहे गृण्हइ फलइं जणु, कडु. पल्लव वज्जेइ।
तो-वि महद्दुमु सुअणु जिवं ते उच्छंगि धरेइ ॥१६॥

## (३) नीति

सरिहिं न सरेहिं न सर-वरेहिं न-वि उज्जाण-वणेहिं।
देस रवण्णा होंति, वढ, निवसंतेहिं सु अणेहिं ॥ १ ॥
सत्थावत्थहं आलवणु साहु वि लोउ करेइ।
आदन्नहं मब्भीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥२॥
जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करेइ परस्सु।
तसु हउं कलि-जुगि दुल्लहहो वलि किज्जंउ सुअणस्सु ॥३॥
सु-पुरिस कंगुहे अणुहरहिं, भण कज्जें कवणेण।
जिवं वड्डत्तणु लहहिं, तिवं तिवं नवहिं सिरेण ॥४॥
दूरूड्डाणे पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ।
जिह गिरि-सिंगहु पडिअ सिल अन्नु वि चूरू करेइ ॥५॥

---

१४. च्चिअ-चेत्-शायद। उहओ—उदधि-समुद्र। आएण व किं न पज्जन्तं-क्या इतना पर्याप्त नहीं है। १५. सो ते वडु=वित्थारु-वह उतना बड़ा विस्तार। तिसहे निवारणु—प्यास का निवारण। घुट्टुअइ असारु—व्यर्थ गरजता है। १६. वच्छहे गृण्हइ—वृक्ष ऐ ग्रहण करते है। फलइं जनु—लोग फल। कडुपल्लव—कड़वे पत्ते। वज्जइ—छोड़ देते हैं। उच्छैगे धरेइ—उत्संग—गोद में धारण करते हैं।

१. सरिहिं=नदियों से। सरेहिं=सरों से। सरवरेहिं=सरोवरों से। देस र वण्णा होंति=देश सुन्दर होते हैं। वढ=मूर्ख। २. सत्था.......आलवणु=स्वस्थ अवस्था वालों से आलाप। आदन्नहं=पीड़ितों को। मब्भीसड़ी=डरोमत यह अभयदान ३. वलि किज्जउं=वलिहारि करता हूं ४. कवणेण कज्जें=किस काम से ५. दूर......दूर भी स्थान में। पडिउ=पड़ा हुआ अप्पणु जणु भारेइ=अपने जन को मारता है। सिल=शिला।

सोसउ म सोसउ च्चिअ
उअही, वडवानलस्य किं तेण।
जं जलइ जले जलणो
आएण व किं न पज्जत्तं ॥१४॥

तं तेत्तिउ जलु सायरहो, सो तेवडु वित्थारु।
तिसहे निवारणु पलु वि न-वि, पर धुट्ठुअइ असारु ॥१५॥

वच्छहे गृण्हइ फलइं जणु, कडु. पल्लव वज्जेइ।
तो-वि महद्दुमु सुअणु जिवं ते उच्छंगि धरेइ ॥१६॥

## (३) नीति

सरिहि न सरेहिं न सर-वरेहिं न-वि उज्जाण-वणेहिं।
देस रवण्णा होंति, वढ, निवसंतेहिं सु अणेहिं ॥ १ ॥
सत्थावत्थहं आलवणु साहु वि लोउ करेइ।
आदन्नहं मब्भीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥२॥
जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करेइ परस्सु।
तसु हुंउ कलि-जुगि दुल्लहहो बलि किज्जंउ सुअणस्सु ॥३॥
सु-पुरिस कंगुहे अणुहरहिं, भण कज्जें कवणेण।
जिवं वड्डत्तणु लहहिं, तिवं तिवं नवहिं सिरेण ॥४॥
दूरुड्डाणे पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ।
जिह गिरि-सिंगहु पडिअ सिल अन्नु वि चूरु करेइ ॥५॥

---

१४. च्चिअ-चेत्-शायद। उहअी—उदधि-समुद्र। आएण व किं न पज्जन्तं-क्या इतना पर्याप्त नहीं है। १५. सो ते वडु=वित्थारु-वह उतना बड़ा विस्तार। तिसहे निवारणु—प्यास का निवारण। घुट्ठुअइ असारु—व्यर्थ गरजता है। १६. वच्छहे गृण्हइ—वृक्ष ऐ ग्रहण करते है। फलइं जनु—लोग फल। कडुपल्लव—कड़वे पत्ते। वज्जइ—छोड़ देते हैं। उच्छंगे धरेइ—उतसंग—गोद में धारण करते हैं।

१. सरिहिं=नदियों से। सरेहिं=सरों से। सरवरेहिं=सरोवरों से। देस रवण्ण होंति=देश सुन्दर होते हैं। वढ=मूर्ख। २. सत्था......आलवणु=स्वस्थ अवस्था वालों से आलाप। आदन्नहं=पीड़ितों को। मब्भीसडी=डरोमत यह अभयदान ३. बलि किज्जउं=बलिहारि करता हूं ४. कवणेण कज्जें=किस काम से ५. दूर......दूर भी स्थान से। पडिउ=पड़ा हुआ अप्पणु जणु मारेइ=अपने जन को मारता है। सिल=शिला।

साहु वि लोउ तडप्फडइ वड्डत्तणहो तणेण ।
वड्डप्पणु परि पाविअइ हत्थें मोक्कलडेण ॥६॥
गुणहिं न संपइ कित्ति पर, फल लिहिआ भुंजंति ।
केसरि न लहइ बोड्डिअ वि गय लक्खेहिं घेप्पंति ॥७॥
सायरु उप्परि तणु धरइ, तलि घल्लइ रयणाइं ।
सामि सुभिच्चु वि परिहरइ, संमाणेइ खलाइं ॥८॥
जीविउ कासु न वल्लहउं ? धणु पुणु कासु न इट्ठु ।
दोण्णि वि अवसर-निवडि तिण सम गणइ विसिट्ठु ॥९॥
कमलइं मेल्लिवि अलि-उलइं करि-गंडाइं महंति ।
असुलह-मेच्छण जाहं भलि, ते ण-वि दूर गणंति ॥१०॥
माणि पणट्ठइ जइ न तणु, तो देसडा चइज्ज ।
मा दुज्जण--कर--पल्लवेहिं दंसिज्जंतु भमिज्ज ॥११॥
जामहिं विसमी कज्ज-गइ जीवहं मज्झे एइ ।
तामहिं अच्छउ इयरु जणु, सुअणु वि अंतरु देइ ॥१२॥
दइवु घडावइ वणि तरुहुं सउणिहं पक्क फलाइं ।
सो वरि सुक्खु पइट्ठ ण-वि कण्णहिंखल-वयणाइं ॥१३॥
तरुहुं वि वक्कलु फलु मुणि वि परिहणु असणु लहंति ।
सामिहुं एत्तिउ अग्गलउं आयरु भिच्चु गृहंति ॥१४॥
गिरिहे सिला-यलु, तरुहे फलु घेप्पइ नीसावन्नु ।
घरु मेलेप्पिणु माणुसहं तो-वि न रुच्चइ रन्नु ॥१५॥
विहवे कस्सु थिरत्तणउ, जोव्वणि कस्सु मरट्टु ? ।
सो लेखडउ पठाविअइ, जो लग्गइ निच्चट्टु ॥१६॥
एत्तहे-तेत्तहे बारि-घरि लच्छि विसंठुल धाइ ।
पिअ-पब्भट्ट व गोरडी णिच्चल कहिं-वि न ठाइ ॥१७॥

---

७. लिहिआ=लिखा हुआ । बोड्डिअ वि=कौड़ी में भी । घेप्पंति=खरीदे जाते है । सुभिच्चु विसुभृत्य को ९ दोण्णि....निवडइं=दोनों अवसर आ पड़ने पर ११. देसड़ा चइज्ज=देश छोड़ दो । मा.......दुष्टों के अंगुलियों द्वारा संकेतित न घूमे । १२. सुअणु वि=सज्जन भी किनारा काटता है । १३. सउनिहं=पक्षियों के लिए । १४. अग्गलउं=अलग विशेष । १५. नीसावन्नु=निःसामान्य । रन्नु न रुच्चइ=वन अच्छा नहीं लगता । १६. निच्चट्टु=नीचट, पक्का । १७. वारिघरि=घरद्वार । विसंठुल=विसंस्थुल=अस्तव्यस्त । धाइ=दौड़ती है । पिअपब्भट्ठ=प्रिय से भ्रष्ट गौरी ।

आयहो दड्ढ-कलेवरहो जं वाहिउ तं सारु ।
जइ उट्ठभइ तो कुहइ, अह डज्भइ तो छार ॥२५॥

# (४) शृंङ्गार

## (१) रूप-चित्रण

सीसि सेहरु खणु विणिम्मविदु,
खणि कंठि पालंबु किदु रदिए ।
विहिदु खणु मुंडमालिए जं पणएण,
तं नमहु कुसुम-दाम-कोदंडु कामहो ॥१॥

साव सलोणी गोरडी, नवक्खी क-वि विस-गंठि ।
भडु पच्चलिओ सो मरइ, जासु न लग्गइ कंठि ॥२॥
जइ सो घडदि प्रयावदी केत्थु-वि लेप्पिणु सिक्खु ।
जेत्थु-वि तेत्थु-वि जगि, भण तो सहि सारिक्खु ॥३॥

मुह-कबरि बंध तहे सोह धरहिं ।
नं मल्ल-जुज्भु ससि-राहु करहिं ॥
तहे सहहिं कुरल भमर-उलःतुलिअ ।
नं तिमिर-डिंभ खेल्लंति मिलिअ ॥४॥

चलेहिं चलतेहिं लोअणेहिं जे तइं दिट्ठां, बालि ।
तहिं मयरद्धय-दडवडउ पडइ अपूरइ-कालि ॥५॥
आयइं, लोअहो, लोअणइं जाईसरइं, न भंति ।
अप्पिए दिट्ठइ मउलिअहिं पिएदिट्ठइ विहसंति ॥६॥
जिवं-जिवं वंकिम लोअणहं णिरु सामलि सिक्खेइ ।
तिवं-तिवं वम्महु निअय-सर खर पत्थरि तिक्खेइ ॥७॥

---

२५. इस दग्ध देह से जो सध जाय, वही सार है । यदि सम्हालो तो नष्ट होता है, यदि जलता है तो छार छार होता है ।

१. .... .... ... .... ...

२. सलोणी=सलोनी, गोरडी=गोरी, नवक्खी=अनोखी, विसगंठी=विष की गांठ ४. सोह=शोभा । धरइ=धारण करती है । तिमिर डिम्भ=अंधकार के बच्चे । ५. जाई-सरइं=जाति-स्मृति । अप्पिए दिट्ठइ=अप्रिय के देखने पर । ७. जिवं जिवं=जिस जिस प्रकार । सामलि=श्यामला । सिक्खेइ=सिखाती है । खर पत्थरि=तीखे पत्थर । तिक्खेइ=तीखा करती है ।

विट्टीए, मइं भणिअ, तुहुं मा करु वंकी दिट्ठि ।
पुत्ति, सकण्णी भल्लि जिवं मारइ हिअइ पइट्ठि ॥८॥
अंसु जेल-आइम्व गोरिअहे, सहि, उव्वत्ता नयण सर ।
ते संमुह संपेसिआ देंति तिरिच्छी घत्त पर ॥९॥
उअ कणिआरु पफुल्लिअउ कंचण-कंति-पयासु ।
गोरी-वयण-विणिज्जिअउ णं सेवइ वण-वासु ॥१०॥
ओ गोरी-मुह णिज्जिअउ वद्दलि लुक्कु मियंकु ।
अन्नु वि जो परिहविय-तणु, सोकिं व भवंइ निसंकु ॥११॥
निअ-मुह-करहिं वि मुद्ध कर अंधारइ पडिपेक्खइ ।
ससि-मंडल-चंदिमए पुणु काइं न दूरे देक्खइ ॥१२॥
जिवं तिवं तिक्खा लेवि कर जइ ससि छोल्लिज्जंतु ।
जो जइ गोरिहे मुह-कमलिं सरिसिम का-विलहंतु ॥१३॥

फोडेंति जे हिअडउं अप्पणंउ,
ताहं पराई कवण घण ?
रक्खेज्जउ, लोअहो, अप्पणा,
बालहे जाया विसम थण ॥१४॥

अन्नु जु तुच्छउं तहे धणहे, तं अक्खणह न जाइ ।
कटरिथणतंरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चि ण माइ ॥१५॥

अन्ने ते दीहर लोअण, अन्नु तं भुअ-जुअलु ।
अन्नु सु घण-थण-हारु, तं अन्नु जि मुह-कमलु ॥
अन्नु जि केस-कलावु, सुअन्नु जि प्राउ विहि ।
जेण णिअंविणि घडिअ स गुण-लावण्ण-णिहि ॥१६॥

---

८. वंकी दिट्टी=बांकी नजर । सकण्णी भल्लि=सकर्ण भोली की तरह ।
९. अंसुजले=आसुओं के जल में । प्राइम्व=प्रायः, उव्वत्ता=गीले या भीगे हुए । नयण-सर=नेत्ररूपी बाण । १०. उअ=देखो । कणिआर=कनेर । ११. वद्दलि=बादल में । मियंकु=मृगांक । १३. सरिसम=समानता । लहन्तु=प्राप्त करती है । १४. घण=दया । अप्पणा=अपनी । १५. धनंह= धन्या का । अक्खणह न जाइ=कहा नहीं जा सकता । कटरि=आश्चर्य है ? विच्चि=बीच में । ण माइ=नहीं समाती ।
१६. गुण लायण्ण णिहि=गुणलावण्य निधि ।

## (२) प्रेम

वहिं ससहरु कहिं मयर-हरु, कहिं वरिहिणु कहिं मेहु ।
दूर-ठिआहं वि सज्जणहं होइ असड्ढलु नेहु ॥१७॥

देसुच्चाडणु सिहि-कढणु, घण-कुट्टणु जं लोइ ।
मंजिट्ठए अइ-रत्तिए सव्वु सहेव्वउं होइ ॥१८॥

अगलिअ-णेह-णिवट्टाहं जोअण-लक्खु वि जाउ ।
वरिस-सएण वि जो मिलइ, सहि, सोक्खहं सो-ठाउ ॥१९॥

सुमरिज्जइ तं वल्लहउ, जं वीसरइ मणाउं ।
जहिं पुणु सुमरणु जाउ गउ, तहो नेहहो कइं नाउं ॥२०॥

तिलहं तिलत्तणु ताउं पर, जाउं न नेह गलंति ।
नेहि पणट्ठइ ते-ज्जि तिल तिल फिट्टवि खल होंति ॥२१॥

## (३) संयोग शृंगार

विंबाहरि तणु रयण-वणु किह ठिउ सिरिआणंद ।
णिरूवम-रसु पिएँ पिअवि जणु सेसहो दिण्णी, मुद्द ॥२२॥

अइ-तुंगत्तणु जं थणह, सो छेयउ, न हु लाहु ।
सहि, जइ केम्वइ तुडि-वसेण अहरि पहुच्चइ नाहु ॥२३॥

भण सहि, निहुअउं तेवं मइं, जइ पिउ दिट्ठु सदोसु ।
जेवं न जाणइ मज्झु मणु पक्खावडिअं तासु ॥२४॥

जइ न सु आवइ दूइ घरु, काइं अहो मुहुं तुज्झु ?
वयणु जु खंडइ तउ सहिए, सो पिउ होइ न मज्झु ॥२५॥

केम समप्पउ दुट्ठु दिणु, किध रयणी छुडु होइ ।
नव-वहु-दंसण-लालसउ वहइ मणोरह सोइ ॥२६॥

---

१७. वरिहिणु=वहि मयूर । दूरठिआइं=दूरस्थितों का । असड्ढलु=असाधारण
१८. देसुच्चाडणु=देश से उच्चाटन । सिहि कढणु=आग सेनिकलना । घण कुट्टणु=धन से पीटा जाना । सव्वु .... सब कुछ सहन पड़ता है ।
१९. अगलिअ......अगलित स्नेह से भरपूर ।

२२. रयणवणु=रदन व्रण=दांत का घाव । मुद्द=मुद्रा मुहर । २३. तुडिवसेण=त्रुटि से भूले से । पहुच्चइ=पहुंचता है । २४. पक्खा वडिअं=पक्षपाती है । तासु=उसका । २५. वयणु=वचन मुख ।
२६. किध=किस प्रकार । रयणी छुडु होइ=रात शीघ्र हो ।

अम्मी, एं सत्थावत्थेहिं सुधिं चिंतिज्जइ माणु ।
पिए दिट्ठे हल्लोहलेण को चेअइ अप्पाणु ॥२७॥

अंगहिं अंगु न मिलिउ, हलि, अहरें अहरु न पत्तु ।
पिअं जोअंतिहे मुह-कमलु एम्वइ सुरउ समत्त ॥२८॥

## मान

ढोल्ला, मइं तुहुं वारिआ, मा कुरु दीहा माणु ।
निद्दए गमिही रत्तडी, दडवड होइ विहाणु ॥२९॥

चंचलु जीविउ, ध्रुवु मरणु, पिअ, रूसिज्जइ काइं ।
होसहिं दिअहा रूसणा दिव्वइं वरस-सयाइं ॥३०॥

अम्मडि, पच्छायावडा, पिउ कलहिअउ विआलि ।
घइं विवरीरी बुद्धडी होइ विणासहो कालि ॥३१॥

## वियोग शृंगार

मइं जाणिउं बुड्डीसु हउं पेम्म-द्रहि हुहुरुत्ति ।
नवरि अचिंतिय संपडिय विप्पिय-नाव झडत्ति ॥३२॥

ढोल्ला, एहे परिहासडी, अइ भण, कवणहिं देसि ? ।
हउं झिज्जउं तउ केहिं, पिअ, तुहुं पुणु अन्नहि रेसि ॥३३॥

महु हिअउं तइं, ताए तुहुं, स-वि अन्ने विनडिज्जइ ।
पिअ, काइं करउं हउं, काइं तहुं, मच्छें मच्छु गिलिज्जइ ॥३४॥

एक्कु कइअह-वि आवही, अन्नु वहिल्लउ जाहि ।
मइं, मित्तडा, पमाणियउ, पइं जेहउ खलु नाहि ॥३५॥

विप्पिअ आरउ जइ-वि पिउ तो वि तं आणहि अज्जु ।
अग्गिण दड्ढा जइ-वि घरु, तो तें अग्गि कज्जु ॥३६॥

---

२७. सत्था०=स्वस्थ=अवस्था वाले । सुधिं=सुख से । २८. एम्वइ=इस समय । सुरउ=सुरति समत्तु=समाप्त है । २९. दडवड=शीघ्र । विहाणु=सवेरा । रत्तडी=रात । निद्द=नींद में । ३०. कांइ रूसिज्जइ=क्यों रूसता है । वरस सयाइं=सौकड़ों वर्षों तक ३१. पच्छायावडा = पश्चात्ताप । विआलि=विकाल संध्या समय । घइं=प्रायः विवरीरी=उल्टी । विनाश काले विपरीत बुद्धि ३२. बुड्डीसु=डूब जाऊंगी । पेद्रहि=प्रेम समुद्र में । हुहुरुत्ति=हुह हुहर कर । विप्पिय नाव=वियोग की नौका । ३३. अन्नहि रेसि=दूसरे के लिए । ३४. वहिल्लउ=शीघ्र ही । पमाणियउ=प्रभावित कर दिया ।

जइ तहे तुट्टउ नेहडा, मइं सहुं न-वि तिल-तार ।
तं किहे वंकेहिं लोअणेहिं जोइज्जउं सय-वार ॥३७॥

पइं मेल्लंतहो ? मह मरणु, मइं मेल्लंतहो तुज्झु ।
सारस जसु जो वेग्गला, सो-वि कदंत हो सज्झु ॥३८॥

अज्ज वि नाहु महु ज्जि घरि सिद्धत्था वंदेइ ।
ताउं जि वरहु गवक्खेहिं मक्कड-घुग्घिउ देइ ॥३९॥

जाउ, म जंतउ पल्लवह, देक्खउं कइ पय देइ ।
हिअइ तिरिच्छी हउं जि पर, पिउ डंबरइं करेइ ॥४०॥

रवि-अत्थमणि समाउलेण कंठि विइण्णु न छिण्णु ।
चक्के खंडु मुणालिअहे नउ जीवग्गलु दिण्णु ॥४१॥

बाह विछोडवि जाहि तुहुं, हउं तेवइ को दोसु ।
हिअअ-ट्ठिउ जइ नीसरहि, जाणउं, मुंज, सरोसु ॥४२॥

विरहाणल-जाल-करालि अउ
पहिउ को-वि बुड्डिवि ठिअउ ।
अण सिसिर-कालि सीअल-जलहु ॥४३॥
धूमु कहंतिहु उट्ठिअउ ? ॥४३॥

विरहाणल-जाल-करालिअउ
पहिउ पथि जं दिट्ठउ ।
तं मेलवि सव्वहिं पंथिअहिं
सो जि किअउ अग्गिट्ठउ ॥४४॥

हिअइ खुडुक्कइ गोडी, गयणि घुडुक्कइ मेहुं ।
वासा-रत्ति-पवासुअहं, विसमा संकडु एहु ? ॥४५॥

पहिआ, दिट्ठी गोरडी, दिट्ठी मग्गु निअंत ? ।
अंसू-सासेहिं कंचुआ तिंतुव्वाण करंत ॥४६॥

---

३७. तिल–तार=तिलों की तरह स्वच्छ । जोइज्जउ=देखा जाता है । ३८. वेग्गला=जोड़ी । कदन्त हो सज्झु=कृतान्त का साध्य है । ३९. मक्कड़ घुग्घिउ=बंदर घुड़की । ४०. डम्बरइ=आडम्बर । ४१. विइण्णु=देदी । जीवग्गलु=जीवार्ग दे दी । वाह=वांह । ४४. अग्गिट्ठउ=अग्नि स्थित । ४५. वासा रत्ति=वर्षा की रात में । पवासु अहं=प्रवास करने वालों का ४६. कंचुआ=कंचुकी । तिंतुवाण=गीला । करंत=करती हुई ।

जइ स-सणेही तो मुइअ, अप जीवइ निन्नेह ।
बिहिं वि पयारे हिं गइअ घण, कि गज्जइ, खलमेह ॥४७॥

अब्भा लग्गा डुंगरिहिं, पहिउ रडंतउ जाइ ।
जो अेहा गिरि-गिलण-मथु, सो किं घणहे धणाइ ॥४८॥

लोणु विलिज्जइ पाणिअेण, अरे खल मेह, म गज्जु ।
बालिउ गलइ सु झुंपडा, गोरी तिम्मइ अज्जु ॥४९॥

जउ पवसंतें सहुं न गय, न मुअ विओअेतस्सु ।
लज्जिज्जइ संदेसडा देंतेहिं सुहय-जणस्सु ॥५०॥

एक्कहिं अक्खिहिं सावणु, अन्नहिं भद्दवउ ।
माहउ महि-अल-सत्थरि, गंडत्थले सरउ ॥

अंगिहिं गिम्ह, सुहच्छी-तिल-वणि मग्गसिरु ।
तहे मुद्धहे मुह-पंकइ आवासिउ सिसिरु ॥५१॥

वलयावलि-निवडण-भअेण धण उद्धब्भुअ जाइ ।
वल्लह-विरह-महा-दहहो थाह गवेसइ नाइ ॥५२॥

बप्पीहा पिउ-पिउ भणवि केत्तिउ रुअहि, हयास ।
तुह जलि, महु पुणु वल्लहइ, बिहुं वि न पूरिअ आस ॥५३॥

हिअडा, फुट्टि तडत्ति कर, काल-क्खेवें काइं ?
देक्खउं हय-विहि कहि ठवइ पइं विणु दुक्ख-सयाइं ॥५४॥

हिअडा, पइं एहु बोल्लिअओ महुं अग्गइ सय-वार ।
फुट्टिसु पिए पवसंति हउं, भंडय ढक्कर-सार ॥५५॥

जे महु दिण्णा दिअहडा दइअें पेवसंतेन ।
ताण गणंतिअे अंगुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥५६॥

मइं जाणिउ, पिअ विरहिअहं क-वि धर होइ विअलि ।
णवर मिअंकु वि तिहि तवइ जिह दिणमरु खय-गालि ॥५७॥

---

४७ तिम्मइ=गीली होती है। ५१. भद्दवउ=भादों । ५२. उद्धब्भुअ=ऊंची भुजाएं करके जाई=जाती है । गवेसइ=खोजाती है । ५३ बिहुं वि=दोनों की । ५४ काल-क्खेवें काइं=समय बिताने से क्या ? ठवइ=रखता है । दुक्ख सयाइं=सैकड़ों दुखों को । सयवार=शतवार ५७. विअलि=विकाल=संध्या समय ।

अंगण लाइवि जे गया पहिअ पराया के-वि ।
अवस न सुअहिं सुहच्छिअहिं जिवं अम्हइं तिवं ते-वि ॥५८॥

रक्खइ सा विस-हारिणी बे कर चुंबिवि जीउ ।
पडिबिंबिअ-मुंजालु-जलु जेहिं अडोहिउ पीउ ॥५९॥

चूडुल्लउ चुण्णी-होइसइ, मुद्धि, कवोलि निहित्तउ ।
सासानल-जाल-झलक्किअउ वाह-सलिल-संसित्तउ ॥६०॥

जाइज्जइ तहिं देसडइ, लब्भइ पिअहो पमाणु ।
जइ आवइ तो आणिअइ, अहवा तं जि निवाणु ॥६१॥

संदेसे काइं तुहारेण, जं संगहो न मिलिज्जइ ? ।
सुइणंतरि पिएं पाणिएण, पिअ, पियास किं छिज्जइ ॥६२॥

जइ केवइं पावीसु पिउ, अकिआ कोडु करीसु ।
पाणिउ नवइ सरावि जिवं सव्वंगें पइसीसु ॥६३॥

एसी पिउ, रूसेसु हउं, रुट्ठी मइं अणुणेइ ।
पग्गिम्व एइ मणोरहइं दुक्करु दइउ करेइ ॥६४॥

पिअ-संगमि कउ निद्दडी, पिअहो परोक्खहो केम् ।
मइं बिन्नि-वि विन्नासिआ, णिद्द न एम्व न तेम्व ॥६५॥

एउ गृण्हेप्पिणु ध्रुं मइं, जइ पिउ उव्वारिज्जइ ।
महु करिएव्वउ किंपि ण-वि, मरिएव्वउ पर देज्जइ ॥६६॥

अब्भड-वंचिउ बे पयइं पेम्मु निअत्तइ जावं ।
सव्वासण-रिउ-संभवहो कर परिअत्ता तावं ॥६७॥



---

५९. जेहिं....जिन हाथों से लाकर पिया ६०. निहित्तउ–निहित रखा हुआ । वाह......वाष्पजल से गीला । सासा.... ...श्वास की अग्नि ज्वाला से प्रदीप्त । ६१. निवाणु=निर्वाण । ६२. सुइणंतरि =स्वप्नांतर में ।

६३. .... .... ....

## मेरु तुंगाचार्य द्वारा संकलित:

अम्मीणउ सन्देसडउ नारय कन्ह कहिज्ज ।
जगु दालिद्दिहिं दुत्थियउ वलिवन्धणह मुइज्ज ॥१॥
सउ चित्तह सट्ठी मणह वत्तीसडा हियांह ।
अम्मी ते नर ढड्ढसी जे वीससइं तियांह ॥२॥
झोली तुट्टवि किं न मूउ किं हूउ न छारह पुञ्जु ।
हिण्डइ दोरी दोरियउ जिम मक्कडु तिम मुञ्जु ॥३॥
चिन्ति विसाउ न चिंतीयइ रयणायर गुण पुञ्ज ।
जिम जिम वायइ विहि पडहु तिम नच्चिज्जइ मुंज ॥४॥
सायरु पा (खा) इ लंक गढु गढवइ दस शिरु राउ ।
भग्गपा (ख) इ सो भञ्जि गउ मुंज म करसि विसाउ ॥५॥
गय गय रह गय तुरय गय पायक्कडा निभि ।
सग्गट्ठिय करि मंतडऊ मुहुंता रुद्दाइच्च ॥६॥
च्यारि वइल्ला धेनु दुइ मिट्ठा बुल्ली नारि ।
काहुं मुंज कुडंवियाहं गयवर वज्झइं वारि ॥७॥
जे थक्का गोला नईं हूं वलि कीजूं ताह ।
मुंज न दिट्ठउ विहलउ रिद्धि न दिट्ठ खलाहं ॥८॥

---

१. अम्मीणउ=हमारा । सन्देसडउ=संदेसा । कहिज्ज=कहिए । मुइज्ज=छोड़ दो ।

२. स्त्रियों के सौ चित्त साठ मन और वत्तीस हृदय होते हैं, वे नर नष्ट हो जाते हैं जो स्त्रियों का विश्वास करते हैं ।

३. झोली=शरीर । दोरी दोरिमउ=डोरी से बंधा हुआ । छारउ पुंजु=धूल का ढेर ।

४. मुंज, मन में खेद न कर, विधाता जैसा २ नगाडा जाता है वैसा २ तुझे नाचना है ।

५. भंजि गउ=भग्न होगया । विसाउ म करसि=विषादमत करो ।

६. पायक्कडानि=पैदल सिपाही । भिच्च=भृत्य=नौकर । सग्गट्ठिय=स्वर्ग स्थित । रुद्दाइच्च=रुद्रादित्य ।

७. वारि=द्वार पर । वज्झइ=बांधना है ।

जा मति पच्छइ सम्पजइ सा मति पहिली होइ ।
मुञ्ज भणइ मुणालवइ विघन न वेढइ कोइ ॥६॥

जईयइ रावणु जाइयउ दहमुह इक्कु सरीरु ।
जणणि वियम्भी चिन्तवइ कवणु पियावउं खीरु ॥१०॥

सइरु नहीं स राण न कुलाईउ नकुलाईइ ।
सउं पंगारिहिं प्राण कि न वइसानरि होमीइं ॥११॥

राणा सव्वे वाणिया जेसलु वड्डउ सेठि ।
काहूं वाणिजडुं माण्डीयउं अम्मीणा गढहेठि ॥१२॥

तइं गरुआ गिरनार काहूं मणि मत्सरु धरिउ ।
मारीतां पंगार एकू सिहरु न ढालियउं ॥१३॥

जेसल मोडि म बांह वलि वलि विरुए भावियइ ।
नइ जिम नवा प्रवाह नवधण विणु आवइ नहीं ॥१४॥

वाढी तउं वढवाण वीसारतां न वीसरइ ।
सूना समा पराण भोगावह तइं भोगवइ ॥१५॥

जा मति=जो बुद्धि । पच्छइ=पीछे बाद में । सम्पज्जइ=उत्पन्न होती है । वेढइ=घेरता है । १२. पियावउं=पिलाऊं । खीरु=खीर=दूध । १५. गढहेठि =गढ़ के नीचे । माण्डीयउं=मांड़ा=रचा बनाया । वणिजहु=वाणिज्य । मत्सरु=ईर्ष्या । मारीतां पंगार=खंगार के मरने पर । न ढालियउं=नहीं ढाल दिया ।

स्वयंभूच्छंद

मित्तु सक्कइ मत्तु दड्ढवयणु [1]
एअ मामरु दुप्पगमु
सो वि बंधु पाहाण-खंडहिं
जह रामहो तह, लच्छि ववसायवन्त हो।
भाई-वियोए जिह जिह करइ विहीसणु सोओ
तिह तिह दुःखेण रुवइ वाणर लोओ।
सव्व गोविउ जइवि जोएइ।
हरि सुग्गिव आयरेण,
देई दिट्ठी जहि कहि राही
को सक्कवि संवरेवि
दड्ढवयण गोहें पलोट्टइ, [2]
टाम टामहिं घाम संतट रत्तिहिं परिसंठिआ
रोमंचणवम चलिअ गंडिआ
दीसन्ति धवलुज्जला
जोन्हा-निहाण गोहना [3]
पइ मकरदु गाहु सकोअ
सहि मरम, सलिल सरस
मरव सेह गिंभि वहल विज्जुल
पडिअ-जग-मग मोह-अरु मयरिचाहु पाउसु [4]

# स्वयंभुदेव १

## रामकथा का उद्गम और कवि की आत्मलघुता

( १ )

**रामकथा और नदी**

वद्धमाण—मुह—कुहर—विणिग्गय
रामकहा—णइ एह कमागय ॥
अक्खर—वास—जलोह—मणोहर
सु—अलङ्कार—छन्द—मच्छोहर ।
दीह—समास—पवाहावङ्किय ।
सक्कय—पायय —पुलिणालङ्किय ॥
देसीभासा—उभय—तडुज्जल
क वि दुक्कर—घण—सद्द—सिलाय ॥
अत्थ—वहल—कल्लोलाणिट्ठिय
आसासय—समतूह—परिट्ठिय ॥
एह रामकह—सरि सोहन्ती
गणहर—देवहिं दिट्ठ वहन्ती ॥
पच्छइ इन्दभूइ—आयरिएं
पुणु धम्मेण गुणालङ्करिएं ॥

---

कवि, अपने प्रसिद्ध काव्य 'पउम चरिउ' में स्वीकृत रामकथा को नदी का रूपक देता है, और हर प्रकार अपनी रामकथा की परम्परा को चौबीसवें तीर्थंकर महावीर से जोड़ता है ।

(१) वद्धमाण—वर्द्धमान, महावीर का नाम । मुहकुहर=मुखकुहर । कमागय—क्रमागत । अक्खरवास=अक्षर-व्यास । जलोह=जलोघ=जल का समूह । मच्छोहर=मत्स्यधर, मछली धारण करने वाली । सक्कय=संस्कृत प्राय पायय=घन शब्द शिलातल ।

पुणु पइवें संसाराराएं
कित्तिहरेण अणुत्तरवाएं ॥

पुणु रविसेणायरिय-पसाएं
बुद्धिएं अवगाहिय कइराएं ॥

पउमिणि-जणणि-गब्भ-संभूएं
मारुयएव--रूव--अणुराएं ॥

अइ—तणुएण पईहर—गत्तें
छिव्वर—णासें पविरल—दन्तें ॥

घत्ता

णिम्मल-पुण्ण-पवित्त-कह-कित्तणु आढप्पइ ।
जेण समाणिज्जन्तएण थिर कित्ति विढप्पइ ॥

णउ संधिहे उप्परि बुद्धि थिय ।।
णउ णिसुअउ सत्त विहत्तियउ
छव्विहउ समास—पउत्तियउ ।।
छक्कारय दस—लयार ण सुय
वीसोवसग्ग पच्चय बहुय ।।
ण बलाबल धाउ णिवाय—गणु
णउ लिङ्गु उणाइ वक्कु वयणु ।।
णउ णिसुणिउ पञ्च–महाय कव्वु
णउ भरहु गेउ लक्खणु वि सव्वु ।।
णउ बुज्झिउ पिङ्गल—पत्थारु
णउ भम्मह—दण्डि–अलङ्कारु ।।
ववसाउ तो वि णउ परिहरमि
वरि रड्डावद्धु कव्वु करमि
सामण्ण भास छुडु सावडउ
छुडु आगम-जुत्ति का वि घडउ ।।
छुडु होन्तु सुहासिय—वयणाइं
गामिल्ल—भास—परिहरणाइं ।।
एंहु सज्जण—लोयहों किउ विणउ
जं अबुहु पदरिसिउ अप्पणउ ।।
जइ एम विरूसइ को वि खलु
तहों हत्थुत्थल्लिउ लेउ छलु ।।

घत्ता

पिसुणें किं अब्भत्थिएं ण जसु को वि ण रुच्चइ ।
किं छण-चन्दु महागहेंण कम्पन्तु वि मुच्चइ ।।

---

सत्त विहत्तियउ=सात विभक्तियां । छव्विहउ=छै विध । छक्कारय=छै कारक । वीसोवसग्ग=वीस-उपसर्ग । पच्चय=प्रत्यय । उणाइ-वक्कु=उणादि वाक्य । महाय कव्वु=महाकाव्य । पत्थारु=प्रस्तार । सामण्णभास=सामान्य भाषा । गामिल्ल-भास=ग्रामीण भाषा । पिसुण=पिशुन, दुष्ट ।

## हनूमान सीता संवाद—

प्रस्तुत सन्धि, पउम चरिउ के 'सुन्दर कांड' से है। पउम चरिउ-पद्मचरित-रामचरित्र, राम का सम्बन्ध सूर्य वंश से है, पद्म-कमल का भी सम्बन्ध सूर्य से है, शायद प्रतीक भाषा में रामचरित्र को पद्म चरित्र इसीलिए कहा गया ? स्वयंभू के पउम चरिउ में कांड हैं। विद्याधर, अयोध्या, सुंदर, युद्ध और उत्तर काण्ड। सीता का अपहरण अयोध्या कांड में हो चुकता है। विराधित और सुग्रीव के सहयोग से हनूमान को दूत बनाकर सीता के पास भेजा जाता है। प्रस्तुत पाठ में उन दोनों की बातचीत है; हनूमान से राम के मति आश्वस्त होकर सीता भोजन ग्रहण कर लेती है, इसके पूर्व वह भोजन से विरत थी। विजय का स्वप्न देखती है, जिसका फल है रावण की आसन्न मौत।

गय मन्दोयरि णिय-घरहों
हणुवन्तु वि सीयहें सम्मुहउ।
अग्गए थिउ अहिसेय-करु
णं सुरवर-लच्छिहें मत्त-गाउ॥

( ३ )

मालूर--पवर--पीवर--थणाए
कुवलय-दल-दीहर-लोयणाए।
पप्फुल्लिय--वर--कमलाणणाए
हणुवन्तु पपुच्छिउ दिढ-मणाए॥[१]

(पद्धडिया दुवई)

## सीता कुशल वार्ता पूछ रही हैं—

'कहें कहे वच्छ वच्छ वहु-णामहों
कुसल-वत्त किं अकुसलु रामहों॥
कहें कहें वच्छ वच्छ कमलेक्खणु
किं विणिहउ किं जीवइ लक्खणु॥

---

(३) मालूर=बेल का फल। ये सब सीता देवी के विशेषण हैं।
कहें कहें=कहो कहो। कुसलवत्त=कुशल वार्ता। विणिहउ=विनिहत।

तं णिसुणेवि सिरसा पणमन्ते
अक्खिय कुसल-वत्त हणुवन्तें ॥
माए माए करें धीरउ णिय-मणु
जीवइ रामचन्द्र स-जणद्दणु ॥
णवरि परिट्ठिउ णेह-विसेसउ
तवसि व सव्व-सङ्ग-परिसेसउ ॥
चन्दु व बहुल-पक्ख-खय-खीणउ
णिवइ व रज्ज-विहोय-विहीणउ ॥
रुक्खु व पत्त--रिद्धि--परिचत्तउ
सुकइ व दुक्कर कह चिन्तन्तउ ॥
तरणि व णिय-किरणेंहिं परिवज्जिउ
जलणु व तोय-तुसार-परज्जिउ ॥

घत्ता—

इन्दु व चवण-काले ल्हसिउ दसमिहें आगमणें जेम जलहि
खाम-खामु परिझीण-तणु तिह तुम्ह विओएं दासरहि ॥

( ४ )

लक्ष्मण आपको बहुत याद करता है—

अण्णु वि मयरहरावत्त-धरु
सिर--सिहर--चडाविय-उभय-करु ।
णिय-जणणि वि एव ण अणुसरइ
सोमित्ति जेम पइं संभरइ ॥[1]

(पद्धडिया दुवई)

---

परिवज्जिउ=परिवर्जित । चवण-कालें=चयनकाल, प्रस्थान के समय । परिझीण तणु=परिक्षीण तनु ।

(४) मयर हरावत्त-धरु ।
अणुसरइ=अनुसरति; अनुसरण करता है । सुमरइ=स्मरति-याद करता है

सुमरइ णिय-णन्दणु माया इव
सुमरइ सिहि पाउस-छाया इव ॥
सुमरइ जणु पहु-मज्जाया इव ॥
सुमरइ भिच्चु सु-सामि-दया इव
सुमरइ करहु करीर-लया इव ॥
सुमरइ मत्त-हत्थि वणराइ इव
सुमरइ मुणिवरु गइ-पवरा इव ॥
सुमरइ णिद्धणु धण-संपत्ति व
सुमरइ सुरवरु जम्मुप्पत्ति व ॥
सुमरइ भविउ जिणेसर-भत्ति व
सुमरइ वइयाकरण विहत्ति व ॥
सुमरइ ससि संपुण्ण पहा इव
सुमरइ वुहयणु सुकइ कहा इव
तिह पइं सुमरइ देवि जणद्दण
रामहों पासिउ सो दूमिय-मण ॥

घत्ता

एक्कु तुहारउ परम-दुहु, अण्णेक्कु विरहु-तणयहों तणउ
एक्कु रत्ति अणेक्कु दिणु सोमित्तिहें सोक्ख कहिं तणउ ॥

( ५ )

सीता की प्रतिक्रिया और अपहरण की कहानी—

तो गुण-गण-सलिल-महाणइहें
रोमञ्चु पवड्ढिउ जाणइहें ।

---

पाउस छाया इव=पावस की छाया की तरह । पहु मज्जाया=प्रभु मर्यादा=राजा की मर्यादा । भिच्चु=भृत्य-अनुचर । मत्त-हत्थि=मत्त हस्ति, मतवाला हाथी । वनराइ इव=वनराजी-वनमाला के समान । जिणेसर भत्ति=जिनेश्वर भक्ति । वइयाकरणु=वैयाकरण । विहत्ति=विभक्ति । पहा इव=प्रभा के समान । सुकइ-कहा=सुकवि कथा । सोमित्ति=सौमित्री=लक्ष्मण ।

(५) पवड्ढिउ=प्रवर्धित; बढ़ गया । जाणइहें=जानकी का । कञ्चुउ=कंचुक-

कञ्चुउ फुट्टें वि सय-खण्डु गउ
णं खलु अलहन्तु विसिट्ठ-मउ ।।'

(पद्धडिया-दुवई)

पढमु सरीरु ताहें रोमञ्चिउ
पच्छए णवर विसाए खञ्चिउ ।।
दुक्करु राम-दूउ एहु आइउ
मच्छुडु अएणु को वि संपाइउ ।।
अत्थि अणेय एत्थु विज्जाहर
जे णाणाविह-रूव-भयंकर ।।
सव्वहं मइं सब्भाव णिरिक्खिय
चन्दणहि वि चिरु णाहिं परिक्खिय ।।
णं वण-देवय थाणहों चुक्की
"मइं परिणहों" पभणन्ति पढुक्की ।।
णवर णियाणें हूअ विज्जाहरि
किलकिलन्ति थिय अम्हहं उप्परि ।।
लक्खण-खग्गु णिएवि पणट्ठी
हरिणि व वाह-सिलीमुह-तट्ठी ।।
अण्णेक्कएं किउ णाउ भयंकरु
हउं मि छलिय विच्छोइउ हलहरु ।।

घत्ता

कहिं लक्खणु कहिं दासरहि आयहों दूअत्तणु कहिं तणउ ।
माया-रूवें पिउ करेंवि मणु जोअइ को वि महु त्तणइ ।।

---

चोली (अंगिया) । फुट्टेवि = फूट कर । दुक्कर=दुष्कर, कठिन । मच्छडु= शायद । संपाइउ=संप्राप्त: आया है । एत्थु=यहां । विज्जाहर=विद्याधर । मइं=मैंने । वण देवय=वन देवता । थाण हो चुक्की=स्थान से चूक गई । पढुक्की=पहुँची । णियाणें=निदान में, अन्त में । खग्गु=खड्ग-तलवार । तट्ठी=व्याघ्र के मुंह के त्रस्त । विच्छोइउ=विक्षुब्ध किया । कहिं तणउ= किसका कैसा ।

( ६ )

**हनूमान की कूट परीक्षा—**

आढवमि खेड्डु वरि एण सहुँ  
पेक्खहुं कवणुत्तरु देइ महु ।  
माणवेंण होवि आसङ्कियउ  
किह लवण-महोवहि लंघियउ ॥''[1]

पच्चारिउ णिय-मणें चिन्तन्तिएं  
'जइ तुहुं राम-दूउ विणु भन्तिएं ॥  
तो किह कमिउ वच्छ पइं सायरु  
जो सो णक्क-ग्गाह-भयङ्करु ॥

कच्छव-मच्छ-दच्छ-पुच्छाहउ  
संसुमार-करि-मयर-सणाहउ ॥  
जोयण-सयइं सत्त जल-वित्थरु  
णिच्च-णिगोउ जेम अइ-दुत्तरु ॥

एक्कु महोवहि दुप्पइसारो  
अण्णु वि आसाली-पायारो ॥  
सो सव्वहुं दुलङ्घु संसारु व  
अवुहहुं विसमउ पच्चाहारु व ॥

तहों पडिवलु परिवड्ढिय-हरिसउ  
वज्जाउहु वज्जाउह-सरिसउ ॥  
अण्णु महाहवें विप्फुरियाहरि  
केम परज्जिय लङ्कासुन्दरि ॥

---

(६) आढवमि = प्रारम्भ करता हूं । खेड्डु=खेल । आसङ्कियउ=पूछा । नक्क-ग्गाह= नक्र ग्राह=मगर मच्छ । संसुमार=शिशुमार, एक जलचर । णिच्च-णिगोउ= नित्य निगोद । आसाली-पायारो= आशाली विद्या का परकोटा । पच्चाहारु व=प्रत्याहार के समान । परिवड्ढिय हरिसउ=परिवर्धित हर्ष । वज्जाउहु = वज्रायुध । महाहवें=महायुद्ध में । पइट्ठु=प्रविष्ट ।

घत्ता।

आयइं सव्वइं परिहरेंवि तुहुं लङ्कानयरि पइट्ठु किह।
अट्ठ वि कम्मइं णिद्दलेंवि वर-सिद्धि-महापुरि सिद्धु जिह ॥'

( ७ )

हनुमान का प्रत्युत्तर—

तं णिसुणेंवि वयणु महग्घविउ
विसेहाण्णु अंजणेउ चविउ।
'परमेसरि अज्ज वि भन्ति तउ
जायेंहि वज्जाउहु समरें हउ ॥१॥
जोवेंहिं वसिकिय लङ्कासुन्दरि
'लइय सावि कुञ्जरेंण व कुञ्जरि ॥
णिहयासालि महोवहि लङ्घिउ
एवहिं रावणो वि आसङ्किउ ॥
एव वि जइण देवि पत्तिज्जहि
तो राहव-सङ्केउ सुणेज्जहि ॥
जइयहुं वण-वासहों णीसरियइं
दसउर-कुव्वर-पुर पइसरियइं ॥
णम्मय विञ्झु तावि अहिणाणइं
अरुणगाम-रामउरि-पयाणइं ॥
जयउर-णन्दावत्त-णिवाणइं
खेमञ्जलि-वंसत्थल-थाणइं ॥
गुत्त-सुगुत्त-जडाइ-णिवेसइं
खग्गु सम्बु चन्दणहि पएसइं ॥

---

(७). महग्घविउ = महार्घित=पूज्यनीय या मूल्यवान्। अंजणेउ=आंजनेय। चविउ=बोला। पत्तिज्जहि=विश्वास करती हो। जइयहुं=जब। वनवास हों=वनवास के लिए। दसउर=कुव्वर=दसपुर-कूवडपुर। णम्मय=नर्मदा।

पर-तिय मज्जु मंसु महु वञ्चहों
जें चुक्कहों संसार-पवञ्चहों ॥

घत्ता

मं जाणेज्जहों पहरू गउ जमरायहो केरउ आण-करु।
तिविसेहिं णाडि-कुढारएहिं दिवे दिवे छिन्देवउ आउ-तरू

( १० )

स्वप्न दर्शन-

णिसि-पहरे चउत्थए ताडियाए
णं जग-कवाडे उग्घाडियए ।
नहिं तेहए काले पगासियउ
तियडए सिविणउ विण्णासियउ ॥
'हले हले लवलिए लइए लवङ्गिए
सुमणे सुबुद्धिए तारे तरङ्गिए ॥
हले कक्कोलिए कुवलय-लोयणे
हले गन्धारि गोरि गोरोयणें ॥
हले विज्जुप्पहे जालामालिणि
हले हयमुहि गयमुहि कङ्कालिणि ॥
सिविणउ अज्जु माए मइँ दिट्ठउ
एक्कु जोहु उज्जाणें पइट्ठउ ॥
तरु तरु सव्वु तेण आकरिसिउ
वज्जे जिह वण-भङ्गु पदरिसिउ ॥
सो वि णिवद्धउ इन्दइ-राए
पाव-पिण्डु णं गरुअ-कसाए ॥
पट्टणे पइसाहिउ वेढेप्पिणु

---

८. रयणकेसि=रत्नकेशी एक विद्याधर । सहसगइ=सहस्रगति । वइसा तारियउ-बैठाया । अंगुत्थलउ=अंगूठी । पइद्धउ=प्रवर्धित । चउत्थउ=चौथा । जम-पडहउ=यम पटह=यम का नगड़ा । छिन्देवउ=काटा जाता है । आउ-तरु=आयुरूपी वृक्ष ।

१०. उग्घाडियए=उद्घाटित होने पर । पगासियउ=प्रकाशित हुआ । तियडए=त्रिजटा । वेढेप्पिणु=घेर कर । तावऽण्णेक्कें=तव एक ओर ने । आवट्टिय=आवर्तित कर दी घुमा दी ।

घत्ता

एहु णिसुणेवि सीयहें सद्दलु जसु रामहो विणउ जणद्दणहों।
सहुं परिवारे सहुं बलेण खय-कालु पदुक्कु दसाणण हो॥

(१२)

लंका सुन्दरी का प्रवेश—

तहिं अवसरे पीण-पओहरिए
अरुणुग्गमे लङ्कासुन्दरिए।
इर-अइरउ विहिण मि पेसियउ
हणुवन्तहो पासु गवेसियउ॥
जहिं उज्जाणे परिट्ठउ पावणि
सयल-णरिन्द-विन्द-चूडामणि॥
तहिं संपत्तउ विण्णि वि जुवइउ
णं सिव-सासए तवसिरि-सुगइउ॥
णं खम-दयउ जिणागमे दिट्ठउ
जयकारेप्पिणु पासे णिविट्ठउ॥
तेण वि ताहिं समउ णिउ जम्पेवि
कण्ठउ कञ्ची-दामु समप्पेवि॥
पुणु विण्णत्त हलीस-मणोहरि
'भोअणु तुम्ह केम परमेसरि॥'
अक्खइ सीय समीरण-पुत्तहों
'वासर एक्कवीस मइँ भुत्तहो॥
जाम ण पत्त वत्त भत्तारहो
ताम णिवित्ति मज्झु आहारहो॥
अज्जु णवर परिपुण्ण मणोहर
तं जे भोज्जु जं सुअ रामहो कह॥'

घत्ता

तं णिसुणेवि पवणहो सुएण अवलोइउ मुहुअइरहे तणउ
"गम्पिणु अक्खु विहीसणहो वुच्चइसीयहें करि पारणउ॥

---

११. पीण–पओहरिए=पीन पयोधरा। अरुणुग्गमे=अरुण-उद्गमे=सूर्योदय होने पर। इर-अइरउ=चिरा, अचिरा। तवसिरि=तपश्री। णिविट्ठउ=बैठा। विण्णत्त=विज्ञप्तः, निवेदित किया। पत्त=प्राप्ता=पायी।

( १५ )

हनुमान की वापसी और प्रतिवेदन—

अण्णु वि आलिङ्गेवि गुण-घणउ
सन्देसउ अक्खइ महु तणउ।
"वल तुज्झु विओए जणय-सुय
थिय लीह-विसेस ण कह विमुअ॥"
झीण मयङ्क-लेह गह-गहिय व
झीण सुरन्द-रिद्धि तव-रहिय व।
झीण कुदेस-मज्झे वासाणि व
झीणऽवुह-मुहे सुकइ-सुवाणि व॥
झीण-दिवायरस्-दसणे रत्ति व
झीण कु-जणवए जिणवर-भत्ति व॥
झीण दुभिक्खे अत्थ-सपत्ति व
झीण वुढत्तणेण वल-सत्ति व
झीण, चरित्त-विहूणहों कित्ति व
झीण कु-कुलहरे कुलवहु णित्ति व।"
अण्णु वि दसरह-वंस-पगासहो
वच्छत्थले जय-लच्छि-णिवासहो॥
रणे दुव्वार-वइ रि-विणिवारहो
तहो स-देसउ णेहिं कुमारहो॥
वुच्चइ "पइँ होन्तेण वि लक्खण
अच्छइ सीय रुयन्ति अलक्खण॥"

घत्ता

णउ देवेहिं णउ दाणवेहि णउ रामेवइरि-वियारएण।
पर मारेव्वउ दहवयणु सइ भुअ-जुअलेण तुहारएण॥



झिज्जइ कमारु सुसियाणणउ ।
णं करिणि विरहे वण वारणउ ।
जउ जउ सीमंतिणि संचरइ ।
तउ तउ चडुयार-सयइं करइ ॥
एक्कहिं दिणि णयणाणंदणिए ।
णिब्भच्छिउ दुमयहो णंदणिए ॥
एत्थु करंत पुरि गंधव्व पंच महु पेसणु ।
जइ जाणंति पइं ते णंति, पाव जम-सासणु ॥१॥

जोएप्पिणु दोवइ-मुह-कमलु ।
पभणइ णव-णाय-सहास-बलु ॥
हउं सुहड-सएहिं पडिवज्जियउ ।
पइं, सुंदरि, णवर परज्जियउ ॥
पडिमल्ल ण हरि-हर- चउवयण ।
पंचहिं गंधव्विहिं का गणण ॥
छुडु करि पसाउ जीवावि मइं ।
भुंजावमि वसुमइ-अद्धु पइं ॥
अवहेरि करिवि गय दुमय-सुय ।
तहो णवमी कामावत्थ हुय ॥
णिय-ससहे कहिज्जइ कइकइहे ।
मणु रंजहि आयहे तीमइहे ॥
जहिं अच्छमि हउ एयग्ग-मणु ।
तहिं पट्ठवि लेवि समालहणु ॥

---

को पज्जलइ=प्रज्वलित=जलता है । अणंग-सिहि=काम की ज्वाला ।
झिज्जइ=क्षीण होता है । सुसियाणणउ=शोषित मुख वाला । वण-वरणउं=
जंगली हाथी । चडुयार-सयइं=सैकड़ों चाटुकारताएं । एक्कहिं दिणि=एक
दिन । णयणंदणिए=नेत्रों को आनंद देने वाली ने ; विब्भच्छिउ=डांटा
पेसणु=प्रेषण=सेवा, आज्ञा ।
जोएप्पिणु=देखकर । प्रभणइ=प्रभणति=कहता है । णव-णाय-सहास-बल=
हजारों नवनागों (गज) के बल वाला । सुहड-संएहिं=सैकड़ों सुभटों द्वारा
उं=मैं । णवर=केवल । गणण-गणना=गिनती । पसाउ=प्रसाद । छुडु=
शीघ्र । जोवावि=जिलाओ । पइं=तुम्हें । अवहेरि=अवहेलना= उपेक्षा ।

विणग्रेण विउज्झाविउ संगुहुं ।
णं सीह-किसोयरि पंच मुहुं ॥
रोवइ दुमय—सुय दरिसंति किणंकिय—हत्था ।
पइं जीवंतग्रेण महु ग्रेही भइय ग्रवत्था ॥३॥

भाग्य की आलोचना—

तो भणइ विग्रोयरु ग्ररि—दमणु ।
कहि, काइं, माग्रे, किउ ग्रागमणु ॥
परिभविय केण, कहो तणउं दुहु ।
पक्खालहि लोयण, लुहहि मुहु ॥
तं णिसुणिवि दुमय—राय—दुहिय ।
पभणइ छण—छुद्ध—हीर—मुहिय ॥
महु कवणु सुह ग्रच्छइ कवण दिहि ।
जहिं तुम्ह वि वट्टइ एह विहि ॥
जो साभि—सालु महि—मडल हो ।
थिउ हरिवि लच्छि ग्राहंडलहो ॥
सो विहि—परिणामें संचरइ ।
घरि मच्छ हो णिच्च सेव करइ ॥
जो मुट्ठि—पहारें दलइ गिरि ।
जं खणु वि ण मेल्लइ सुहड—सिरि ॥

---

दिशाग्रों के ग्रन्तराल को काला बनाने में समर्थ । किम्मीर=एक राक्षस । विग्रोरहो=वृक्कोदर के । विउज्झावि=समझाया । पंचमुहुं=सिंह । किणंकिय-हत्थ्या=कलंकित हस्त । भयइ=हुई । ग्रवत्थ=ग्रवस्था ।

४. परिभाविय=ग्रपमानित किया । कहो तणउं=कौन सा । पक्खालहि=प्रक्षालयति=पोंछ लो । छण-छुद्ध-हीर मुहिय=उत्सव मे चमकते हीरों के समान मुखवाली । दिहि=भाग्य । वहइ=वतते है । सामि-सालु=स्वामि श्रेष्ठ । विहि-परिणामें=भाग्य के परिणाम से । मच्छहो=मत्स्य (गज) के । मुट्ठि पहारें=मुट्ठी के

कीचक की कूट स्वीकृति एवं कीचक का भीम के पंजे में फंसना—

पडिवण्णु मच्छु जं दोवइए ।
दुव्वार-जार-मारण-महिए ।।
आविज्जइ नच्चण-साल तुहु ।
तं माणहुं विण्णि-वि सुरय-सुहु ।।
गय तेत्थहो कहिउ विओयरहो ।
विहु णिवडिउ दिट्ठी-गोयरहो ।।
भीमेण वि तं पडिवण्णु रणु ।
अ-हिम-यरु ताम गउ अत्थवणु ।।
सेणा-वइ लेवि पसाहणउ ।
संकेय-भवणु गउ अप्पणउ ।।
जहिं भीमसेणु थिउ पइसरिवि ।
जहिं सीहु कुरंगहो कमु करिवि ।।
तहिं घंघु घिसत्थु पइट्ठु विडु ।
ण-उ जाणइ मंडिउ मरण-पिडु ।।
रायाणुएण चिहुरेहिं धरिउ ।
णं कालें पढम कवलु भरिउ ।।
चिंतिउ कीयएण, लइ, हउं गंधव्वे मारिउ ।
ण-उ सइलिंधि-करु एहु कालें हत्थु पसारिउ ।।८।।

---

८. दुव्वार-जार मारण-महिए=दुर्वार जार को मारने की गरज से । सेणावइ=सेनापति । पसाहणउ=प्रसाधन । घंघु=घोंघा रयाणुएण=राजा के अनुगामी ने । चिहुरेहिं=बालों से । पसारिउ=फैला लिया ।

कीचक की कूट स्वीकृति एवं कीचक का भीम के पंजे में फंसना—

पडिवण्णु सव्वु जं दोवइश्रे ।
दुव्वार-जार-मारण-महिए ।।
आविज्जइ नच्चण-साल तुहु ।
तं माणहुं विण्णि-वि सु-रय-सुहु ।।
गय तेत्थहो कहिउ विश्रोयरहो ।
विहु णिवडिउ दिट्ठी-गोयरहो ।।
भीमेण वि तं पडिवण्णु रणु ।
श्र-हिम-यरु ताम गउ अत्थवणु ।।
सेणा–वइ लेवि पसाहणउ ।
संकेय–भवणु गउ अप्पणउ ।।
जहिं भीमसेणु थिउ पइसरिवि ।
जहि सीहु कुरंगहो कमु करिवि ।।
तहिं घंघु विसत्थु पइट्ठ विहु ।
ण–उ जाणइ मंडिउ मरण–पिहु ।।
रायाणुश्रेण चिहुरेहिं धरिउ ।
णं कालें पढम कवलु भरिउ ।।
चिंतिउ कीयश्रेण, लइ, हउं गंधव्वे मारिउ ।
ण–उ सइलिंधि–करु एहु कालें हत्थु पसारिउ ।।८।।

---

८. दुव्वार-जार मारण-महिए=दुर्वार जार को मारने की गरज से । सेणावइ= सेनापति । पसाहणउ=प्रसाधन । घंघु=घोंघा रयाणुएण=राजा के अनुगामी ने । चिहुरेहिं=बालों से । पसारिउ=फैला लिया ।

द्वंद युद्ध—

तो भिडिय परोप्परु रण-कुसल ।
बिण्णि-वि णव-णाय-सहास-बल ॥
बिण्णि-वि गिरि-तुंग-सिंग-सिहर ।
बिण्णि-वि जल-हर-रव-गहिर-गिर ॥
बिण्णि-वि दट्ठोट्ठ रुट्ठ-वयण ।
बिण्णि-वि गुंजा-हल-सम-णयण ॥
बिण्णि-वि णह-यल-णिह वच्छ-यल ।
बिण्णि वि परिहोवम-भुय-जूयल ॥
बिण्णि-वि तणु-तेयाहय-तिमिर ।
बिण्णि-वि जिण-चरण-कमल-णमिर ।
बिण्णि-वि मंदर-परिभमण-चल ।
बिण्णि-वि विण्णाय-करण-कुसल ॥
बिण्णि-वि पहरंति पहर-खमिहिं ।
भूय-दंडिहिं वज्ज-दंड-समिहिं ॥
पय-भारिहिं भारिय विहिं-मि-महि ।
महि-पडण-पेल्लिणाहित्थ महि ॥
भीमु समाहयउ वच्छ-त्थलि मुट्ठि-पहारें '
कह-वि ण णिवडिउ महि-यलि सहु रुहिरुग्गारें ॥६॥

---

६. गुंजाहल-सम-नयण=मूंगों के समान लाल आंखों वाले । परिहोवम-भुय-जुयल=परिखा के समान वक्षस्थल वाले । तणुतेणाहय-तिमिर=शरीर के तेज से अन्धकार को नष्ट करने वाले । जिन चरण कमल णमिर=जिनके चरण कमलों को नमस्कार करने वाले ।

कीचक वध—

सेणावइ पेक्खिवि अ-तुल-वलु ।
ओहुल्लिउ भीमहो मुह-कमलु ।।
किय होसइ महु जस-हाणि रणि ।
वज्जेसइ अ-यस-पडहु भुवणि ।।
किय होसइ जण-वये जंपणउं ।
कह-कहव-वि धीरवि अप्पणउं ।।
आयासु करिवि णिय-भुय-जुयलि ।
हउ मुट्ठि-पहारिं वच्छ-यलि ।।
घाएण जि वइवस-णयरु णिउ ।।
सो कीयउ कुम्मागारु किउ ।।
पइसारिय हत्थ-पाय उयरि ।
णं पुंजिउ आमिस-पुंजु घरि ।।
णीसारिवि भीमु महा-भुयओ ।
जाणाविउ दुमय-राय-सुयओ ।।
गंधव्विहिं विड-भडु णिट्ठविउ ।
पेयाहिव पथि पट्ठविउ ।।
धाइय पवर भड, मरु-मारिउ कीयउकेण ।
पंच-जणाहिवेण घरु वेढिउ भाय-सएण ।।१०।।

---

१०. पेक्खिव=देखकर। ओहुल्लिउ=नीचे झुक गया । वज्जेसइ=बजेगा। अयस-पडहु=अपयश का डंका। जंपणउं=निन्दा । कुम्मागारु=कूर्माकार। उयरि=पेट में।

भाइयों द्वारा हत्यारे की खोज एवं द्रौपदी की विकराल मुद्रा—

उज्जोउ करिवि णिज्झाइयउ ।
सव्वउ गंधव्विहिं घाइयउ ॥
एक्कहु सरीरि ण कहिं मि वणु ।
ण-उ अेक्कु-वि करु अेक्कु विचरणु ॥
अण्णोत्तहे दीसइ दुमय-सुय ।
बाहु-लयालिंगिय-सिहिण जुय ॥
णं काल-रत्ति दुद्दंसणिय ।
णं असणि सहावें भीसणिय ॥
णं विसहरि आसीविस-भरिय ।
णं रक्खसि भुअण-भयंकरिय ॥
णं परम-कुट्टिणि जम-सासणहो ।
आसंक जाय सव्वहो जणहो ॥
मयर-द्धय-बाणोवद्दविउ ।
अेहु आयहे कारणि विद्दविउ ॥
लइ अेवहिं काइं वियाणअेण ।
परिपुच्छिअेण किं राणअेण ॥
दोवइ सवेण सहुं थावि उप्परि मच्छयाराणहो ।
कीयय-भाउ-सउ सयउंगुट्ठु चलिउ मसाणहो ॥११॥

---

११. वणु=व्रण:=घाव । अण्णोत्तहे=एक दूसरी जगह । काल-रत्ति=काल रात्रि । दुद्दंसणिय=दुरदर्शनीय । असणि=वज्र । सहावें=स्वभाव से । आसीविस-भरिय=विषाक्त दांत वाली । रक्खसि=राक्षसी । कुट्टिणी-गत्ती=पगडण्डी । सवेण=शव के साथ । नोवली=अनोखी । थंभि=थंभिगा । मुक्ककलिय केसु=खुले हुए बाल । उक्खाग=उखाड ।

## द्रौपदी का चीत्कार और भीम का प्रकट होना—

णिज्जंती कंदइ दुमय-सुय ।
गंधव्वहु, धावहु, काइं मुअ ॥
अहो जय जयंत विजयंत-धरि ।
जयसेण जयावह-रक्ख करि ।
तो भी मुण कुहिणिहिं माइयउ ॥
भंजिवि पायारु पधाइयउ ।
अण्णेत्तहे जेत्तहे वइरि ण-वि ॥
उप्पाइय नोक्खी भांग कवि ।
मुक्कलिय-केसु उक्खाय-तरु ॥
पच्चक्खु णाइं थिउ रयणि-यरु ।
सवडंमुहुं दीसइ कीयअेहिं ॥
जमु दंड-पाणि णं भीयअेहिं ।
छड्डिज्जइ मडया-जाणु तहिं ॥
णड-णाय पणट्ठ, पइट्ट कहि ।
पल्लट्ट विओयरु णिय-भवणु ॥
पडिवण्णु दिवायरु उग्गमणु ॥
संकप्प उट्ट मणि तहो मच्छहो अ णिहय-मल्लहो ।
कइकइ सिक्खावइ, सयलिंधि णिवासहो घल्लहो ॥१२॥

---

सवडंमुहुं=सामने मुख । छड्डिज्जइ=छोड़ दी गई । पणट्ठ=नष्ट हो गए । पइट्ट=कहीं चले गए । पल्लट्ट=पलटा ।

राजा की प्रतिक्रिया—

तहिं अवसरि दुमय-णरिंद-सुय ।
पक्खालिय-अंगोवंग-भुय ॥
लक्खिज्जइ सब्बल जणेण किह ।
पट्टणि पइसंति भवित्ति जिह ॥
सिय-वलयालंकिय-कर-यलहो ।
गय स-रहसु पास विहंदलहो ॥
पच्छण्ण-पउत्तिहिं वज्जरिवि ।
उत्तरइ समाणु खेड्डु करिवि ॥
अप्पणउ णिहेलणु जाइ किर ।
उच्छलइ सुजेट्ठहो ताम गिर ॥
जा-जाहि भडारिए काइं-मितुहुं ।
राउलहो स-णयरहो देहि सुहु ॥
धट्ठज्जुण-ससए सम्मुण्णएण ।
वोल्लिज्जइ रोस-वसं-गएण ॥
जइ एवहिं चल्लिय कह-वि पइं ।
तो पुरु घाएवउ सयलु मइं ॥
जइ पुणु थक्ति महु घरि तेत्तिह दिवसउ देसहु ।
पुण्ण-मणोरहि य तो रज्जु सइं भुंजेसहु ॥१३॥

---

१३. भवित्ति=भवितव्यता=होनहार । स रहसु=सहर्ष । विहंदलहो=अर्जुन के । पच्छण्ण-पउत्तिहिं=प्रच्छन्न उक्तियों से । सुजेट्ठहो = जेठे के (युधिष्ठिर के) राउलहो=राजकुल के । स-णयरहो=नगर-सहित । धट्ठज्जुण-ससए; धृष्टद्युम्न की बहन से । सम्मुण्णएण=समुन्नत । एवहिं=इस समय । घाएवाउ= घात करूंगा । भुंजेसहु=भोगोगे ।

# [२]

# महाकवि पुष्पदन्त

## आत्मलघुता और दुर्जननिंदा

(१)

अकलंक कविल कणयर मयाइं
दियसुगय पुरंदरणयसयाइं ।
दत्तिल विसाहिलुद्धा रियाइं
णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजल जलाइं
अइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारवि भासु वासु
कोहलु कोमलगिरु कालियासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु
णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।
णउ धाउ ण लिंगु ण गुण समासु
णउ कम्मु करणु किरियाणिवेसु ।

---

१. अकलंक कविल-जैनाचार्य अकलंक, कपिल, सांख्य, दार्शनिक, कणयए-वैशेषिक दार्शनिक. दिय द्विज वेद पाठक; सुगत=बौद्ध, पुरदरणय=चर्वाकमत के संस्थापक पुरंदर) के सिद्धान्त । दत्तिल=दत्तिल और विसाहिल संगीतकारों की रचनाएं; भरह=भरत के रचे शास्त्र । पयंजल जल=पतञ्जालि का शास्त्र; इतिहास और निर्मल पुराण । भावाधिक भारवि, नाटककार भास, महाभारत कार व्यास कवि कोहल; चर्तुमुख, पद्धड़िय बद्ध काव्य का रचयिता स्वयंभू. कोमल वाणी कालिदास; श्री हर्ष, द्रोण, ईशान और बाण; आयमु = आगम ।

णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति
णउ जाणिय मइं एक्क वि विहत्ति।
णउ बुज्झिउ आयमुसद्दधामु
सिद्धन्तु धवलु जयधवलु णामु।
पड्डु रुद्दडु जडणिवणासयारु
परियच्छिउ णालंकारसारु।
पिंगल पत्थारु समुद्दि पडिउ
ण कया वि महारइ चित्ति चडिउ।
जसइंधु चिंधु कल्लोलसित्तु
ण कलाकोसलि हियवउ णिहित्तु।
हउं बप्प णिरक्खरु कुक्खिमुक्खु
णरवेसें हिंडमि चम्मरुक्खु।
अइदुग्गमु होइ महापुराणु
कुडएण मवइ को जलणिहाणु।
अमरासुर गुरुयण मणहरेहिं
जं आसि कियउ मुणिगणहरेहिं।
त हउं मि कहमि भत्तीभरेण
किं णाहि ण भम्मिज्जइ महुयरेण।
एहु विणउ पयासिउ सज्जणाहं
मुहि मसिकुंचउ कउ दुज्जणाहं।

घत्ता

घरे घरे भमउ असारउ दुण्णयगारउ विवरोक्खए किं अक्खइ।
लइ मइं सो मोक्कल्लिउ खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ॥

१. धवल जय धवल=जैनों के सिद्धान्त शास्त्र; रुद्दडु=रुद्रट जड=जड़त्व का नाशक। पिंगल का प्रस्तार। कुक्खि मुक्खु=प्रक्षिमूर्ख। हिंडमि=घूमता हूं। अइ दुग्गमु=अत्यन्त दुर्गम। मवइ = माप सकता है। कुडएड=कुडव=छोटी नाव। जलणिहाणु=समुद्र। भत्तीभरेण = भक्ति से भर कर। मसि कुंचउ=मसी कूची। असारउ=सारहीन। दुण्णयसारउ=दुर्नय कारक, बुरा करने वाला; मोक्कल्लिउ=छोड़ दिया।

# भरत बाहुबलि युद्ध

'आदि पुराण'—आदि तीर्थंकर ऋषभ का जीवन चरित्र है; यह महापुरुषों का एक महत्वपूर्ण चरित्र रहा है। ऋषभ देव १४ वें कुलकर नाभिराय के पुत्र थे। उनका युग—देवभूमि की समाप्ति और कर्मभूमि (कृषि सभ्यता) के आरम्भ का युग था। ऋषभ की दो पुत्रियां थीं; यशोवती और सुनन्दा! यशोवती से १०० पुत्र और एक कन्या ब्राम्ही: भरत उनमें बड़ा था। सुनन्दा से सुन्दरी और बाहुबलि। ऋषभ राज्य का बेटों में बटवारा कर, कैलाश पर तपस्या करते हैं। भरत, दिग्विजय के बाद, अयोध्या लौटता है, उसका चक्र नगर सीमा में प्रवेश नहीं करता; इसका कारण था—बाहुबलि का अभी तक उसकी अधीनता नहीं स्वीकारना। भरत, सूत द्वारा अधीनता का प्रस्ताव भेजता है जिसे बाहुबलि ठुकरा देता है; फलस्वरूप, सेनाएं आमने सामने आ डटती हैं। लेकिन वृद्ध मन्त्री, पिता की आन के नाम पर दोनों भाइयों को द्वंद्व युद्ध के लिए आह्वान करते हैं। दृष्टिजल और मल्लयुद्ध में भरत को हराकर बाहुबलि दीक्षा ग्रहण कर लेता है। जबकि, भरत को मन्त्री अयोध्या ले जाते हैं।

( २ )

आरणालं

रविणिहकण्णकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा।
चलिया मंडलेसरा खयरसुरणरा कंठ बद्धहारा॥

**भरत की सेना के कूच का वर्णन—**

होइ गिरित्थलु णिविसें समथलु
किं ण किं ण वि.र कद्दमियउं जलु।

---

२. रविणिहकण्णकुंडला=रवि निभ कर्ण कुंडलः सूर्य के समान कानों के

किं ण किं ण किर संचूरिउ वणु
किं ण किं ण धूली जायउ तणु ।
कणयदंडमंडिय पडिहारें
आवेतें पहुखंधावारें ।

अयोध्या में स्वागत की तैयारी—

पुरणारिहिं आहरणु लइज्जइ
मउ देवंगवत्थु परिहिज्जइ ।
कुंकुमेण छडउल्लउ दिज्जइ
कप्पूरें रंगावलि किज्जइ ।
छिप्पइ कुसुमकरंबु ससउयणु
बज्झइ सुरतरु पल्लवतोरणु ।
घरि घरि गाइज्जइ जिणणंदणु
दोवदहिय सिद्धत्थयचंदणु ।
दप्पणु कलसु धरिज्जइ अग्गहिं
उग्घोसिउ मंगलु सुरकण्णहिं ।
सलहिज्जंतु महंतु सुरिंदहिं
सहुं जक्खिंद खगिंदणरिंदहिं ।
करिवर कंधरत्थु मणहारिहिं
विज्जिज्जंतउ चामरधारिहिं ।

घत्ता

महि सयल वि खग्गें णिज्जिणिवि कयदिग्विजयविलासहिं ।
उज्झहि भरहाहिउ पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥

---

कुंडल वाले । रयण मेहला=रत्न मेखला वाले । मउडपट्टधारा=मुकुट पट्ट धारण करने वाले । कद्दमियउ=कर्दमित कीचड़ भरा कर दिया । पहु खंधावारें=प्रभु-स्कंधावार । देवंगवत्थु=दिव्य वस्त्र । छडउल्लउ=छिड़काव । रंगावलि=रांगोली । छिप्पइ=ग्रहण की जाती है । कुसुम करंबु=कुसुम धूलि । बज्झइ=बांधा जाता है । दोवदहिय सिद्धत्थय चंदणु=दूब दही सिद्धार्थ

चक्र का अवरोध—

( ३ )

थक्कइ चक्कु ण पुरि पइसक्कइ
कुक्कइहिं कउ वुअ णउ चिम्मक्कइ ।
णं कोआलणु आला मंडलु
णं पुरलच्छिहइ परिहिउ कुंडलु ।
भरहपयावें कायरिजायउ

आरणालं

णउपइसरइ पुरउरे रयणमयहरे जयसिरीवरंगं ।
भंगुर भासरारयं णिसियधारयं राइणो रहंगं ॥
भाणुबिंबु णं छज्जइ आयउ ।
इंदचंद पडिकूलण सीलउ
धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।
सहु जि चक्कवट्टि अवलोयहु
णयरे दीवु धरिउ णं लोयहु
मणिमऊहमाला वेलाउलु
रायदिवायरि पुण्णयरुज्जलु ।

---

(चांवल) चंदन । जक्खिद=यक्षेन्द्र; ढिज्जिज्जंतउ=डुलाए जाते हैं। उज्झहि=अयोध्या में । सट्ठिहिं=साठ सालों में ।

३. परिहिउ=पहन लिया है । जयसिरीवरंगं=विजयश्री के रंग वाला । भंगुर भासुरारयं=चंचल किरणों का समूह । णिसियधारयं=पैनी धार वाला । राइणो=राजा का । रहंगं=चक्र । खयहुय वह लीलउ=क्षयकाल की आग के समान लीला वाला । जि=ही । मणि यऊह=मणिमयूख । समसलु=भ्रमर सहित । णहसरि=नभरूपी नदी से । विइंसिउ=खिल गया । रत्तुप्पलु=लाल कमल । सच्चायहु=सुन्दर कीर्ति वाला । अवसें=अवश्य ही । आयहु=इसको । णिराइणा=नृराज ने । रूढराइणा=प्रसिद्ध राजा ने । रहंगयं=

सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु
णं णहसरि विहसिउ रत्तुप्पलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु
अवसें देइ धरणि कर आयहु ।

घत्ता

तं चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ।
हियउल्लय कवडसहयं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ।।

( ४ )

आरणालं

ता भणियं णिराइणा रूढराइणा चंडवाउवेयं ।
किं थियमिह रहंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ।।

मंत्रियों का सुझाव—

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ
जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।
अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर
देवदेव दुज्जय भरहेसर ।
भुयजुयबलपडिबलविद्दवणहं
पयभ रथिरमहियलकंपवणहं ।
तेओहामियचंददिणेसहं

---

४. णिराइणा==नृराज ने । रूढराइणा==प्रसिद्ध राजा ने । रहंगयं= चक्र । णिच्च लंगयं=निश्चलांग । गइ-पसरु=गति प्रसार । पुरोहउ= पुरोहित=मन्त्री । तेओहामियचंददिणेसहं=अपने तेज से चन्द्रमा और सूर्य को झुका देने वाले । कित्तिसत्ति जणमेत्ति-सहायइं=कीर्ति शक्ति और

जणणदिण्णमहिलच्छिविलासहं ।
कित्तिसत्तिजणमेत्ति सहायहं
को पडिमलु एत्थु तुह भायहं ।
सेव करंति ण णहभाईवइं
णउ णवंति तुह पयराईवइं ।
देंति णि करभरु केसरिकंधर
पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।
अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि
पइसइ पट्टणि चक्कु ण तेण जि ।

घत्ता

रइवरु परमेसरु उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ।
कासवतणुरुहु णवणलिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधरु ॥

( ५ )

आरणालं

## दूतों से भाइयों का निवेदन—

ता विगया बहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।
दुमदलललियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥
तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु
सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।

लोगों की सीमित संख्या की सहायता पर निर्भर रहने वाले। णह-भाईवइं=नख चन्द्र की। पयराईवइं=चरण कमलों की (सेवा नहीं करते।) ण तेण जि=इसी कारण से।

५, विगया=चले गए। ता=तब। बहुयरा=बहुत से चर। रसियवारणं=दरवाजे पर हाथी गरज रहे हैं। छिण्णभूमिदेसं=जिसका भूभाग ढका हुआ है।

सरणर विसहरभयइं जणेरी
करहु केर णरणाहहु केरी।
पणवहु किं बहुवेण पलावें
पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें।
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ
तो पणवहु जइ बाहिरु दीसइ।
तो पणवहु जइ सुसुइ कलेवरु
तो पणवहु जइ जीविउ सुंदरु।
तो पणवहु जइ जरइ ण भिज्जइ
तो पणवहु जइ पुट्ठि ण भज्जइ।
तो पणवहु जइ बलु णोहट्टइ
तो पणवहु जइ सुइ ण विहट्टइ।
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टइ
तो पणवहु जइ कालु ण खुट्टइ।
कंठि कयंतवासु ण चुहुट्टइ
तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ।

घत्ता

जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुक्खु णिवारइ।
तो पणवहु तासु णरेसहो जइ संसारहु तारइ॥

---

जणेरी=उत्पन्न करने वाली। केर=आज्ञा। णरणहहु केरी=राजा की। मिच्छागावें मिथ्यामान से। णोहट्टइ=नष्ट नहीं होता। विहट्टइ=नष्ट नहीं होता। तुट्टइ=टूटता है। खुट्टइ=नहीं खुटता! चुहुट्टइ=नहीं पहुँचता, नहीं लगता।

( ६ )

आरणालं

पुणरवि तेहिं गद्दिरयं सवणमहुरयं एरिसं पउत्तं ।
आणापसरधारणे धरणिकारणे पणविउं ण जुत्तं ॥

पारतंत्र्य की आलोचना—

पिंडिखंडु मद्दिखंडु महेप्पिणु
किह पणविज्जइ माणु मुएप्पिणु ।
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु
वणहलभोयणु वर तं सुंदरु ।
वर दालिद्दु सरीरहु दंडणु
णउ पुरिसहु अहिमाणविहंडणु ।
परपयरयधूसर किंकरसरि
असुहाविणि णं पाउससिरिहरि ।
णिवपडिहारदंडसंघट्टणु
को विसहइ करेण उरलोट्टणु ।
को जोयइ मुहुं भूभंगालउ
किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।
पहु आसण्णु लहइ धिट्ठत्तणु

६. सवण महुरयं=श्रवण को मधुर । पउत्तं=प्रोक्त,=कथन । आणापसरधारणे= आज्ञा के प्रसार को धारण करने के लिए । महेप्पिणु=आदर करके । वक्कलणिवसणु=वक्कलों का पहनना । कंदरमंदिस=गुफा का घर । वणहलभोयणु=वनफल का भोजन । परपयरय धूसर=दूसरों की पदरज से धूसरित । किंकरसरि=सेवक रूपी नदी । पाउससिरिहरि=पावस की शोभा धारण करने वाली । मोणें=मौन से । खंतिइ=शान्ति से । अज्जवु= ऋजु=सरल सीधा । पलाविरु=प्रलाप करने वाला । महुर पयंपिरु=मीठा

पविरलदंसगु गिण्णोहत्तगु
मोण जडु भडु खंतिइ कायरु
अज्जवु पसु पंडियउ पलाविरु।
अमुणियहियचारुगरुयत्तें
कलहसीलु भण्णइ सुहडत्तें।
महुरपयंपिरु चाडुयगारउ
केम वि गुणि ण होइ सेवारउ।

घत्ता

अइतिक्खहं धम्मगुणुज्झियहं वम्मवियारणवसणहं।
को वाणहं संमुहु थाइ रणे को महिवइघरि पिसुणहं॥

( ७ )

आरणालं

अहवा तेहिं कि इयं जं समागयं दुल्लहं णरत्तं।
तं जो विसयविसरसे विवइ परवसे तस्स कि बुहत्तं॥
कंचणकंडें जंबुउ विंधइ
मोत्तियदामें मंकडु वंधइ।
खीलयकारणि देउलु मोडइ
सुत्तणिमित्तु दित्तु मणि फोडइ।
कप्पूरायरुरुक्खु णिसुंभइ

---

वोलने वाला। धम्म गुणुज्झियइं=धर्म को डोरी या गुणों से रहित। वम्मवियारण-वसणहं=मर्म और कवच के विदारण के स्वभाव वाला। महिवइ घरि=राजा के घर में। संमुहुं णाइ=सामने खड़ा हो सकता है।

७. विवइ=क्षिप्येत=व्यतीत करता है। मंकडु=वंदर। खीलय कारणि=खील

कोद्दवछेत्तहु वइ पारंभइ ।
तिलखलु पयइ डहिवि चंदणतरु
विसु गेण्हइ सप्पहु ढोयविकरु ।
पीयइ कसणइं लोहियसुक्कइं
तक्कें विक्कइ सो माणिक्कइं ।
जो मणुयत्तणु भोए णासइ
तेण समाणु हीणु को सीसइ ।
चित्तु समत्तणि णेय णियत्तइ
पुत्तु कलत्तु वित्तु संचितइं ।
मरइ रसणफंसणरसदड्डउ
मे मे मे करंतु जिह मेंढउ ।
खज्जइ पलयकालसद्दूलें
डज्झइ दुक्खहुयासणजालें ।
मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु
होइ जीउ मक्कडु माहुंडलु ।

घत्ता

केलासहु जाइवि तवयरणु ताए भासिउ किज्जइ ।
जेणेह सुदूसहतापवरि संसारिणि तिस छिज्जइ ॥

---

के लिए । सुत्तणिमित्तु=सुक्ति के लिए, दिए हुए मणि को झोटता है ।
कप्पूरायरुरुक्खु = कपूर और अगरु के वृक्षों को नष्ट करता है ।

( ८ )

आरणालं

जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं ।
तं मह लिहियसासणं कुल विहूसणं हरइ को पहुत्तं ॥

्वलि का उत्तर—

केसरि केसरु वरसइ थणयलु
सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ
किं कयंतु कालाणलु जेहउ ।
हउं सो पणवमि को सो भण्णइ
महिखंडेण कवणु परमुण्णइ ।
किं जम्मणि देवहिं अहिसिंचिउ
किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ
सिरिसइ रिणियइं किं रोमंचिउ ।
चक्कु दंडु तं तासु जि सारउ
महु पुणु णं कुंभारहु केरउ ।
करिसूयररहवरुडिंभयरहं

---

८. दिण्णं=दत्तं दिया । दुरियणासिणा=दुरित नाशी-पाप का नाश करने वाले । वरसइ थणयलु=वर सती का स्तनतल । सुहडहु-सरणु=सुभट की शरण । केहउ=कैसा । जेहउ=जैसा । मायंगु=गज ।

९. खज्जोएं=खद्योत से जुगनू से । अण्णाणें=अज्ञान से । वायसेण= कौए से । विज्झइ=बेधा जा सकता है ? वसहेण=वृषम=बैल से । वग्घु=

णर णिहणमि रणि जे वि महारइ ।
भरहु हरइ कि मज्झु भयाभरु
तइ चुक्कइ जइ सुयरइ जिणवरु ।

घत्ता

तहु मेइणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदे दिण्णउं ।
अब्भिडउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ घडि पवण्णउं ॥

( ६ )

आरणालं

ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा ।
बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥

दूत को फटकार—

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ
किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ
कि घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु माणिज्जइ
अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ ।
वायसेण किं गरुडु णिरुब्भइ
णवकमलेण कुलिसु किं विज्झइ ।
करिणा किं मयारि मारिज्जइ
किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ ।

---

वाघ । ससंकु=शशांक-चन्द्रमा; डेंडुहेण=सांप से । जिप्पइ=जीया जा सकता है ।

माणु ण छंडइ छडइ भयरसु
दयवु ण चिंतइ चिंतइ पोरिसु ।
संति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि
पुहइ ण देइ देइ बाणावलि ।
तुज्झु ण गावइ णावइ मुणतंडउ
अंगु ण कड्ढइ कड्ढइ खंडउ ।
देव ण देइ भाइ तुह पोयणु
पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।
ढोयइ रयणइं णउ करिरयणइं
ढोएसइ प्रवु णरउररयणइं ।

घत्ता

संताणु कुलकम्मु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ बुज्झइ ।
मज्जायविवज्जिउ सामरिसु अवसें दाइउ जुज्झइ ॥

( १३ )

आरणालं

आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।
णं णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥

संध्या का चित्रण—

संझारायजलणु जो भमियउ
सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।

---

१३. संझाराय जलणु=संध्याराग ज्वलन । संझारायधुसिणु=संध्याराग रूपी केशर । संझाराय विडवि=संध्याराग रूपी जो वृक्ष खिला है । तमोह

संझारायघुसिणु जं संकिउ
तं तमोहमयणाहें ढंकिउ ।
संझारायविडवि जो फुल्लिउ
सो तमतंबेरमवइपेल्लिउ ।
चंदमइंदें तमकरि भग्गउ
किं जाणहुं सो तासु जि लग्गउ ।
मयणिहेण दीसइ सुहयारउ
तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।
विसइ गवक्खहिं थणयलि घोलइ
वहुहारु व ससितेउ णिहालइ ।
रंधायारु थियउ अंधारइ
दुद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।
रइयासेयविंदु तणुज्जलु
दिट्ठु भुयंगहिं णं मुत्ताहलु ।
दिट्ठउ कत्थइ दीहायारउ
घरि पइसंतउ किरणुक्केरउ ।
मोरें पंडरु सप्पु वियप्पिवि
मुद्धे कड्ढ व ण गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता

गंगासरि हंसपक्खदलइं पियविरहिं णिगंडयलइं ॥
णावइ ससियरपक्खालियइं धवलाइं जि णिरु धवलइं ॥

---

मयणाहें=तम समूह रूपी मृगेन्द्र । तमतंबेरमवइ=अंधकार रूपी महागज । चंदमइंदें=चन्द्र मृगेन्द्र । तमकरि=अन्धकार रूपी गज । जाणहुं=घुटनों से । तप्पवेसु=जलप्रवेश । गवक्खहिं=गवाक्षों, गोखों से ।

( १४ )

## दृष्टि युद्ध में भरत की पराजय—

इय चिंतिवि इच्छिउ मंतिमंतु
वुड्ढाणुगामि णीसेसु संतु ।
अवलंबिउ रोसु ण परियणेहिं
आयंबकसण सियलोयणेहिं ।
सकसायभाव आसण्णु ढुक्कु
दोहिं मि अवलोइउ एक्कमेक्कु ।
उद्धाणणु पहु भयवलिहिं तोंडु
पेच्छइ रविबिंबु व किरणचंडु ।
हेट्ठिल्ल दिट्ठि उवरिल्लियाइ ।
णिज्जिय दिट्ठिइ अविहल्लियाइ
णं होंति कुगइ पचमगईइ
विसयासा इव मुणिवरमईइ ।
णं तावसि भग्गी विडरईइ
णं सेलभित्ति गंगाणईइ ।

---

१४. वुड्ढाणुगामी=वृद्धानुगामी । परियणेहिं=परिजनों ने । आयंब कसण-सिय लोवणेहिं=लाद सफेद आंखों वाले । उद्धाणणु=ऊंचा मुख पेच्छइ-प्रेक्ष्यते=दिखाई देता है । हेट्ठिल-दिट्ठि=नीची दृष्टि । उवरिल्लियाइ= ऊपर की दृष्टि; । अवइल्लियाइ=अविचलित । पंचम गईइ=पंचम गति= मोक्ष । विडरईइ=विटरत्या; दुष्ट के प्रेम से । सेल-भित्ति=शैल भित्ति= हिमालय रूपी दीवाल । ससियरतईइ=चन्द्र संतति=चन्द्रमा की किरणों द्वारा । उपमा बाहुवलि ने अपनी अविचलित दृष्टि से भरत की दृष्टि को वैसे ही जीत लिया जैसे मोक्षगति कुगति को, मुनि की बुद्धि विषयाशा को; दुष्ट का प्रेम तपस्वी को, गंगानदी हिमालय की दीवार को जीतले, इत्यादि । ससी छाहिसारंग डेवंतसीहं=चन्द्रमा के प्रतिविम्ब में हरिण को देखकर, जिसमें

णं कमलपंति ससियरतईइ
कुमुओलि व मउलिय रविरुईइ।

घत्ता

ठिउ हेट्ठामुहुं चक्कवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्ठिपहावहिं।
घल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संथुउ देवहिं॥

( १५ )

सरोवर का वर्णन—

मओमत्तमायंगलीलावहारा
रमावासवच्छत्थलोलंतहारा।
फणिंदेण चंदेण इंदेण दिट्ठा
पुणो दो वि राया सरंते पइट्ठा।
सरंतेहि आलोइयं सच्छणीरं
विसालं गहीरं तुसारोहतारं।
महापोमसुत्ताहिमाणिक्कदित्तं
मरुध्दूयतिं गिच्छिधूली विलित्तं।
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं
मरालीपहालग्गलीलामरालं।
सिरीणेउरालावणच्चंत मोरं
मिसाहारपूरंतचांचूचऊरं।
तरंतामरं रोयरारद्ध कीलं

---

सिंह दौड़ रहा है। समुत्तुंग=ऊंची उछलती हुई फेनराशि से जिसके किनारे ढक गए हैं: गुंजन करते भ्रमरों का जिसमें कोलाहल हो रहा है; सारसों से भरा हुआ। सूर्य की मुक्त किरणों से फूल, जिसमें खिले हुए हैं; जिसमें, पक्षीन्द्र और यक्षेन्द्रों के शब्द सुनाई दे रहे हैं; नहाते हुए हाथियों की सूड़ों से, जिसका पानी मथा जा चुका है? (सरोवर का वर्णन)

१५. सुन्दरासु=सुन्दर के। दीसइ=दृश्यते दिखाई देती है। तारालो=तारावली

जलुब्भंतमीणं लयापत्तणीलं ।
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं
समुत्तुंगफेणा वलीछ्रण्णतूहं ।
झुणंतालिकोलाहलं सारसिल्लं
इणुम्मुक्कपायावली फुल्लकुल्लं ।
सुयाणेय पक्खिहं जक्खिहसद्दं
पमज्जंत हत्थिहसोडाविमदं ।

घत्ता

रहिं विण्णि वि जण ओयरिय पहुणा चित्त जलंजलि भायहु ।
वियलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ।।

( १६ )

जल युद्ध—

कडियल धावंती सुंदरासु
दीसइ तारालि व मंदरासु
णं मरगय महिहरि चंदकंति
णं णील महीरुहि हंसपंति
डेवंती दीसइ सलिलधार
णं कंठुभइ कंठिय सुतार
णं सुरसरि चवल तरंग फार
गयणुल्ललंत झससुंसुमार
आलसिवि पुणु भरहहु विमुक्क
णंदा तणए गुरुजल झलक्क

मरगय महिहरि=मरकत महीधर; गुरुजल का झलक्क=भारी जल की धारा;
१६. तओ=तदा=तव । भुयमंडणि=बाहुयुद्ध में । माण-महल्ल=मान में श्रेष्ठ ।

सलिलें णवसोत्तइं पूरियाइं
वहु परियण सयणइं जूरियाइं
उग्घोसिउ विणउ महासरेहिं
वाहुवलि णराधिव किंकरेहिं

घत्ता

सीसु धुणंतु मुयंतु छलु सरवर वारि पवाहें सित्तउ।
पडि ओसारियउ पुहइवइ णाइं करिंदु करिंदें जित्तउ॥

( १७ )

ल्ल युद्ध--

तओ भुयभंडणि भायर लग्ग
णरिंदसिरोमणि घट्टपयग्ग।
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल
पहाण महावल विण्णि वि मल्ल।
सुकंचण कुंडल मंडियगंड
पसारियवाहु सरोसपयंड।
चिराउस चंदचडावियणाम
सुविक्कमवंत णराहिवकाम।
समत्थ सिरीण रईण णिकेय
महारह भारह भक्खरतेय।
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति
धरेप्पिणु देह वडेवि पडंति।

---

१७. वड़े भाई भरत को वाहुवलि ने उठा लिया; इस पर कवि की उपेक्षाएं हैं: मानो शुभ परिणाम ने जीव का उद्धार किया हो, सज्जन समूह ने सुकवि को काव्य का, मुनिवर व्रत विशेष का; किसी महान् राजा ने देश का; इत्यादि। णिय कुल पईउ=निज कुल प्रदीप। सूख धुत्ति चित्ताणुवट्टि=काम की धूर्तता

पढंत जि गाहणिवंधणु देंति
कडीयलु कंठु णिरुंभिवि ठंति ।
विरुद्ध वि गाह वलेण मुयंति
मुणप्पिणु चड्डवि झत्ति वलंति ।
अलंभुयजुज्भ विहाणसयाइं
पचप्पणकड्ढणवेढणयाइं ।
करंति वि धीर अविद्दवियंग
णिरंकुस णाइं मयंध मयंग ।
तओ हयमाणिणिमाणमएण
णरामरसंगरलद्धजएण ।
सुरिंदकरी करथोर भुएण
अणिंदजिणिंद सुणंद सुएण ।
पहुस्स करेण करा परतावि
परेण थिरेण धरेण कमावि ।

घत्ता

कुंअरें राउ समुद्धरिउ णायणियंविणिसेवियकंदरु ।
कयइच्छा कोउद्दलेण किं ण पुरंदरेण गिरि मंदरु ।।

( १८ )

उद्धरिउ सुपुत्तें णं सुवंसु
कमलायरेण णं रायहंसु ।

---

में अपने चित्त का अनुगमन कौन कर सकता है ?

हिमालय कायउ=हिमालय शरीर; जैसे कमल-सरोवर को पाला मार हुय=हो । दव दड्ढउ रुक्खु=दावानल से जला हुआ पेड़ । ओहुल्लिय मुग

बाहुबलि ने भरत को उठा लिया—

णं सुहपरिणामें जीव भव्वु
णं सुयणसमूहें सुकइकव्वु ।
णं मुणिवरणाहें वयविसेसु
णं णरवरिंदणाएण देसु ।
णं गमणवियारें बालभाणु
णं बाए चंपयकुसुमरेणु ।
णं कामुयसत्थें कामचारु
णं सो जि तेण संसारसारु ।
खयरामरमाणविमदणेण
पढमेण पढमजिणणंदणेण ।
अइलुद्धें बहुमण्णियधणेण
कुद्धें अवगण्णियसज्जणेण ।
परिपालियसयल वसुंधरेण
ता चिंतिउ चक्कु सुकंधरेण ।
जमदाढाबलयहु अणुहरंतु
उद्धाइउ चंचलु विप्फुरंतु ।
रविबिंबेण व जियविसमवेउ
तें परियंचिउ बाहुबलिदेउ ।
थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ
को एहइ किर णियकुलपईउ ।

को सुरयघुत्तिचित्ताणुवट्टि
को एम जिणइ जगि चक्कवट्टि ।

घत्ता

विंभिउ भरहणराहिवइ वाहुबलीसु जणेण पसंसिउ ।
गयणभाउ सुरमुक्किकयहिं पुप्फदंतपंतिहिं णं पहसिउ ॥

( १२ )

बाहुबलि की आत्मग्लानि—

णं कमलसरु हिमाहयकायउ
दवदड्ढउ रुक्खु व विच्छायउ ।
जं ओहुल्लियमुहु पहु दिट्ठइ
तं बलि भणइ हउं जि णिक्किट्ठउ ।
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ
जेण महंत भाइ ओहामिउ ।
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ
जं जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।
महि पुण्णालि य केण ण भुत्ती
रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।
रज्जहुकारणि पिउ मारिज्जइ
बंधवहुं सि विसु संचारिज्जइ ।

---

अधोमुख । हउं जि=मैं ही । णिक्किट्ठउ=निकृष्ट । सामिउ=स्वामी । ओहामिउ=पराजित किया । सुहिदुण्णयगारउ=सुधियों के मति दुर्नम। करने वाला । पुण्णालि=पुंश्चली = वेश्या । भुत्ती=भोगी । समसुत्ति= समीचीन सूक्ति । रज्जहु पड़हु वज्जु=राज्य पर वज्र पड़े । तंवारहु=नाश को

जिह अलि गंधें गउ संघारहु
तिह रज्जेण जीउ तंवारहु।
भडसामंतमंतिकयभायउ
चिंतिज्जंतउ सव्वु परायउ।
तंडुलपसयहु कारणि राणा
णरइ पडंति काइं अवियाणा।
डज्झउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ
जइ सुहु तो किं ताएं मुक्कउ।
सुहणिहि भोयभूमि संपययर
कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर।

घत्ता

दुल्लंघहु दुक्कियलंछणहो दूसहदुक्खदुरंतहो।
भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयंतहो॥

( १३ )

भरत की प्रतिक्रिया—

सज्जणकरुणें सज्जणु कंपइ
तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ।
जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलिउ
तइयहुं पइं वि किं ण परिलोलिउ।
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउ।

---

प्राप्त होता है। दाढ़पंजरि=दंष्ट्रा पंजर में। उव्वरिउ=उबर सका।

१३. सज्जनकरुणें=सज्जन की करुणा से। भरहाणुउ=भरतानुज। पराहउ=

जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु
भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ
वंदणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ ।
जइ एवहिं धरिन्ति ण समिच्छहि
ता जें दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।
तहिं अवसरि वयणेहिं णिरोहिउ
मतिहि भमिणाहु संबोहिउ ।
सुउ संताणि थवेंवि महाबलि
गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता

वणु जंतु मुयंतु णरिंदसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ।
साकेयहु राउ विसण्णमणु संतिहिं मड्डइ आणिउ ।।



---

पराभव ! महाइउ=महाहव । पयच्छइ=दो । णिरोहिउ=निरोधित, रोका । संबोहिउ=संबोधित:संबोधित किया । परायउ=परायात=पहुँचा । मड्डइ=बलपूर्वक । मंतिहिं=मन्त्रियों के द्वारा ।

# महाकवि पुष्पदन्त

'श्रीकृष्ण का चरित्र, पुष्पदंत के महापुराण का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चरित्र है; पांडवों और कृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं में कुछ भिन्नता होते हुए भी जहां तक कृष्ण बाल यौवन लीलाओं का सम्बन्ध है, हिन्दू परम्परा से; बहुत समानता है; काव्य और मार्मिकता की दृष्टि से भी यह बेजोड़ है; इसमें कृष्ण चरित्र के कई नए संदर्भों की सूचना है; उदाहरण के लिए, कृष्ण के 'ग्वाल रूप' का वर्णन, राधा का उल्लेख, उपालभ इत्यादि ।'

## कृष्ण की बाल लीलाएं

( १ )

दुवई

णं हरिवंसवंसणवजलहरु णं रिउणयणतिमिरओ ।
जोइउ दीवएण हरि मायइ णं जगकमलमिहिरओ ।।

रात में चुपचाप बालक कृष्ण को ले जा रहे हैं—

कण्हुमासि सत्तमि संजायउ
मारण कंखिरु कंसु ण आयउ ।
इउं जाणसि सो दइवें मोहिउ
महिवइलक्खणलक्खपसाहिउ ।
लइयउ वासुएउ वसुएवें
धरिउं वारिवारणु बलएवें ।

१, हरिवंस वंस णवजलहरु=हरिवंश रूपी वंश (बांस) के लिए=नए मेघ की तरह । रिउ णयण तिमिरओ=शत्रु की आंखों के लिए अन्धकार । जोइउ=

णिसि संचलिय छत्ततमणियरें
णं वियाणिय णिरु कूरें इयरें।
अग्गइ दरिसिय तिमिरविहंगिहि
वच्चइ वसहु फुरंतहिं सिंगहिं।
को वि पराइउ अमरविसेसउ
कालहि कालिहि मग्गपयासउ।
देवइ चोइउ आवयकुंठइ
लग्गइ माहवचरणंगुट्ठइ।
जमलकवाडइं गाढविइण्णइं
विहडियाइं ण वइरिहि पुण्णइं।
कुलिसायसवलयंकियपाए
बोल्लिउ सुमहुरु महुराराएं।
छत्तालंकिउ का किर णिग्गइ
को णिसिसमइ दुवारहु लग्गइ।
भासइ सीरि ससि य सुहदंसणु
जो तुह णिविडणियलविद्धंसणु।
जो जीवंजसवइविद्दावणु।
पोमावइकरमरिमेल्लावणु।

देखा। दीवएव=दीपक से। जग कमल मिहिरओ=जगरूपी कमल के लिए सूर्य। कण्हु=कृष्ण। सत्तमि=सातवें। मारण कंखिर=मारने की आकांक्षा रखने वाला। महिवइ....पसाहिउ=महीपति के लक्षणों से प्रसाधित। वारि वारणु=महागज। बलएवें=बलराम ने। छत्ततमणियरें=क्षत्र के अंधकार के समूह से। इयरें=इतर = दूसरा। अग्गइ = आगे। पराइउ==परायातः= आया। मग्ग पयासउ = मार्गप्रकाशक। आवय कुंठइ=आपत्ति को कुंठित करने वाला। माहव चरणंगुट्ठइ=माधव के चरण का अंगूठा। महुराराए मथुराराज ने (उग्रसेन)। णिसि समइ=निशा के समय। सुह दंसणु= शुभ दर्शन। णिविण-णियल विद्धंसनु=निविड निगड विध्वंसक=सघन बेड़ियों

सो णिग्गउ तुह सोक्खजणेरउ
उग्गसेण नृव अच्छहि सेरउ ।

घत्ता

एवं भणंत गय ते हरिसें कहिं मि ण माइय ।
णयरहु णीसरिवि जउणाणइ झत्ति पराइय ।।१।।

( २ )

**यमुना का वर्णन—**

दुवई

ता कालिंदि तेहिं अवलोइय मंथरवारिगामिणी ।
णं सरिरूवु धरिवि थिय महियलि घणतमजोणि जामिणी ।।

णारायणतणुपहपंती विव
अंजणगिरिवरिंदकंती विव ।
महिमयणाहिरइयरेहा इव
बहुतरंग जरहयदेहा इव ।
महिहरदंति दाणरेहा इव
कंसरायजीवियमेरा इव ।
वसुहणिलीणमेहमाला इव
साम समुत्ताहल वाला इव ।
णं सेवालवाल दक्खालइ
फेणुप्परियणु णं तहि घोलइ ।

---

को काटने वाला । जीवंजस वइ-विद्दावणु=जीवंससा पति विद्रावक= जीवंजसा के पति (कंस) को मारने वाला । सोक्खजणेरउ=सुख उत्पन्न करने वाला ।

२. कालिंदी=यमुना । मंथर वारि गामिणी=जिसका जल धीरे धीरे वह रहा था । झत्ति=शीघ । जउण नदी=यमुना नदी । सरि रूवु धरि=नदी का रूप

गेरुयरत्तु तोउ रत्तंवरु
णं परिहइ चुयकुसुमहिँ कव्बुरु ।
किंणरिथणसिहरइं णं दावइ
विब्भमेहिँ णं संसउ भावइ ।
फणिमणिकिरणहिँ णं उज्जोयइ
कमलच्छिहिँ ण कण्हु पलोयइ ।
भिसिणिपत्तथालेहिँ सुणिम्मल
उच्चाइय णं जलकणतंदुल ।
खलखलंति णं मंगलु घोसइ
णं माहवहु पक्खु सा पोसइ ।
णउ काहु वि सामण्णहु अण्णहु
अवसें तूसइ जवण सवण्णहु
विहिँ भाइहिँ थक्कउ तीरिणिजलु
णं धरणारिविहत्तउ कज्जलु ।

घत्ता

दरिसिउ ताइ तलु किं जाणहुं णाहहु रत्ती ।
पेक्खिवि महुमहणु मयणें णं सरि वि विगुत्ती ।।२।।

( ३ )

दुवई

णइ उत्तरिणि जांवथोवंतरु जंति समीहियासए ।
दिट्ठउ णंदु तेहिँ सो पुच्छिइ णिक्कुडिलं समासए ।।

नन्द की पुत्री का श्रीकृष्ण से विनिमय--

महु कंतइ देवय ओलग्गिय
धूय ण सुंदरु पुत्तु जि मग्गिय ।
देविइ दिण्णी सुय किं किज्जइ
तहि केरी लइ ताहि जि दिज्जइ ।
जइ सा तणुरुहु पडि महुं देसइ
तो पणइणिहि आस पूरेसइ ।
णं तो गंधधूवचरुफुल्लइ
चारुभक्खरूवाइं रसिल्लइं ।
देमि ताम जा देवि णिरिक्खमि
ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि ।
लइ लइ लच्छिविलासरवण्णउ
एहु पुत्तु तुह देविइ दिण्णउ ।
भंति म करहि काइं मुहुं जोवहि
मेरइ करि तेरी सुय ढोयहि ।
ता हियउल्लइ णंदु वियप्पइ
णरवेसेण भडारी जंपइ ।
लेमि पुत्तु किं पउरपलावें

---

ओलग्गिय=सेवा की । मग्गिय=मांगी । धूय=लड़की, कन्या । दिण्णी=दी । तहि केरी=उसकी । पडिमहुं देसइ=प्रतिं दास्यति=फिर देगा । पणइणिहि=प्रणयिनी की । चारु=सुन्दर खाद्य रूपों से । रसिल्लइं=रसीले । हलहेइ=बलराम । अक्खमि=कहता हूं । लच्छि=लक्ष्मी के विलासों से रमणीय । देविइ=देवी ने दिया । जोवहि=देखते हो । मेरइ=मेरी । तेरी सुय=तुम्हारी कन्या । हियउल्लइ=हृदय में । णंदु=नन्द । वियप्पइ=विकल्पयति=विकल्प करता है । पउर पलावें=प्रवर प्रलाप से क्या । चवेप्पिणु=कह कर । कमल

परिपालमि सणेहसब्भावें ।
एम चवेप्पिणु अप्पिय वाली
बलकरकमलि कमलसोमाली ।
लइउ विट्ठु साणदें णंदें
मेहु व आलिंगियउ गिरिंदें ।
हुउ सकयत्थउ गउ सो गोउलु
जणय तणय अडिआया राउलु ।

घत्ता

सुय छणससिवयण देवइयहि पुरउ णिवेसिय ।
केण वि किंकरिण णरणाहहु वत्त समासिय ।।३।।

बाल लीलाएं—

दुवई

धलीधूसरेण वरमुक्कसरेणु तिणा मुरारिणा ।
कीलारसवसेण गोवालयगोवीहियहारिणा ।।

रंगंतेण रमंतरमंते
मंथउ धरिउ भमंतु अणंतें ।
मंदीरउ तोडिवि आवट्टिउ
अद्धविरोलिउं दहिउं पलोट्टिइ ।
का वि गोवि गोविंदहु लग्गी

सोमाली=कमल की तरह सुन्दर । विट्ठु=विष्णु । सकयत्थउ=सकृतार्थ । गोउलु=गोकुल । छणससिवयण=पूर्णचन्द्रके समान मुखवाली । वत्त=वार्ता=बात । समासिय = कहदी ।

४. तिण मुरारिणा=उन मुरारी ने । गोवालयगोवीहियहारिणा=गोपालक

एण महारी मंथणि भग्गी ।
एयहि मोल्लु देउ आलिंगणु
णं तो मा मेल्लहु मे प्रंगणु ।
काहि वि गोविहि पंडरु चेलउं
हरितणुतेएं जायउं कालउं ।
मूढ जलेण काइं पक्खालइ
णियजडत्तु सहियहिं दक्खालइ ।
थणणीरसिच्छिरु छायागंतउ
मायहि संमुहुं परिधाअंतउ ।
महिससिलंबउ हरिणा धरियउ
ण करणिबंधणाउ णीसरियउ ।
दोहउ दोहणहत्थु समीरइ
मुइ मुइ माहव कीलिउं पूरइ ।
कत्थइं अंगणभवणालुद्धउ
वालवच्छु वालेण णिरुद्धउ ।
गुंजाफेंदुयरइयपओएं
मेल्लाविउ दुक्खेहिं जसोएं ॥
कत्थइ लोणियपिंडु णिरिक्खउ
कण्हे कंसहु णं जसु भक्खिउं ।

---

की गोपी का हृदय चुराने वाले । रंगतेण=रेंगते हुए । अद्ध विरोलिउं=आधा विलोया हुआ । दहिउं=दही । पलोट्टिउं=पलोट दिया=उलट दिया । मा मेल्लहु=मत छोड़ो । हरितणुतेएं=कृष्ण के शरीर के तेज से । पंडरु चेलउं=सफेद कपड़ा । थणणीरसिच्छिरु=थन के दूध की इच्छा रखने वाला । दोहउ=दुहने वाला । वाल वच्छु=छोटे बछड़े को । महिससिलंबउणु=भैंस के बच्चे को । गुंजा=मूंगों की । मेल्लाविउ=छुड़ाया । लोणियपिंडु=नवनीत का

घत्ता

पसरियकरयलेहिंसद्'तिहिं सुइसुहकारिणिहिं
भद्दिइ णियडिथिए घरयम्मु ण लग्गइणारिहिं ।

दुवई

णउ भुंजंति गोव कयसंसय णिज्जियणीलमेहइं ।
केसवकायंकतिपविलित्तइं दहियइं अंजणाहइं ॥

गोपियों से बाल लीलाएं—

घयभायणि अवलोइवि भावइ
णियपडिबिंबु विट्ठु बोल्लावइ ।
हसइ णंदु लेप्पिणु अवरुंडइ
तहु उरयलु परमेसरु मंडइ ।
अम्माहीरएण तंदिज्जइ
णिद्दंधइयउ परियंदिज्जइ ।
हल्लरु हल्लरु जो जो भण्णइ
तुज्झु पसाएं होसइ उण्णइ ।
हलहरभायर वेरिअगोयर
तुहुं सुहुं सुयहि देव दामोयर ।
तहु घोरंतहु णहयलु गज्जइ
सुत्तविउद्ध ण केण लइज्जइ ।

---

पिंड । भद्दि=कृष्ण के । णियडिथिए=समीप रहने पर !

केसव ··लित्तइ=कृष्ण के शरीर की कान्ति से लिप्त । घयभायवि=घृतभाजन । णिय पडिविबु=अपने प्रतिविम्ब को । बोल्लावइ=बुलाता है । हल्लरु हल्लरु= धीरे धीरे । उण्णइ=उन्नति । वेरि अगोयर=शत्रु के लिए अदृश्य । महुरहि=

पुहइणाहु किर कासु ण वल्लहु
अच्छइ णरु सुरहं मि सो दुल्लहु ।
वियलियपयकिलेससंतावें
पसरंत तहु पुण्णपहावें ।
णंदहु केरउ गोउलु णंदइ
महुरहि णारि मसाणइ कंदइ ।
महि कंपइ पडंति णक्खत्तइं
सिविणंतरि भग्गइं नृवछत्तइं

घत्ता

णियवि जलंति दिस कंसें विणएण णियच्छिउ ।
जोइससत्थणिहि दिउ वरुणु णाम आउच्छिउ ॥५॥

दुवई

कहियं देवयाहिं जो णंदणिहेलणि वसइ वालओ ।
सो पइं नृवण भंति कं दिवसु विमारइमच्छरालओ ॥

पूतना वध—

| | |
|---|---|
| जाणिइ अरिवरि | ता तहिं अवसरि । |
| कंसाएसें | मायावेसें । |
| वल मायाविणि | धाइय जोइणि । |
| वच्छरवाउलु | गय तं गोउलु । |

---

मथुरा में । मसाणइ=मरघट में । णक्खत्तइं=नक्षत्र । सिविणंतरि=स्वप्न में । नृवछत्तइं=नृपछत्र । णियच्छिउ=पूछा ।

६. मच्छरालओ=मत्स्यराज को । जोइणि=योगिनी । वच्छरवाउलु-वछड़ों के शब्द से व्याकुल । पवण्णी=पहुंची । पूयण=पूतना । दुद्धरसिल्लउ=दूध से

जयसिरितण्हहु णवमहु कण्हहु ।
पासि पवएणी भत्ति णिसण्णी ।
पभणइ पूयण हे महुसूयण ।
पियगरुडद्धय आउ थणद्धय ।
दुद्धरसिल्लउ पियहि थणुल्लउ ।
तं आयण्णिवि चंगउं मण्णिवि ।
चुयपयपंडरि वयणु पओहरि ।
हरिणा णिहियउं राहुं गहियउं ।
णं ससिमंडलु सोहइ थणयलु ।
सुरहियपरिमलु णं णीलुप्पलु ।
सियकलसुप्परि विंभिउ मणिहरि ।
कडुए खीरें जाणिय वीरें ।
जणणि ण मेरी विप्पियगारी
जीवियहारिणी रक्खसि वइरिणि ।
अज्जु जि मारमि पलउ समारमि ।
इय चिंततें रोसु वहंतें ।
माणमहंतें भिउडि करंते ।
लच्छीकंते देवि अणंते ।
दंतहिं पीडिय मुट्ठिइ ताडिय ।
दिट्ठिइ तज्जिय थामें णिज्जिय ।
अणु वि ण मुक्की णहहिं विलुक्की ।
खलहि रसंतहि सुण्णु हसंतहि ।

---

रिसते । चंगउं=चंगा-भला समझ कर । चुयपयपंडरि=रिसते दूध से सफेद । णिहियउ=पकड़ लिया । कडुएं खीरें=कड़वे दूध से । विप्पियगारी=बुरा करने वाली । भिउडि करंते=भौंहें चढ़ाते हुए । लच्छीकंतें=लक्ष्मीकान्त ने, तज्जिय=डांटा । थामें=स्थैर्य से । णहहिं विलुक्की=आकाश में छिप गई ।

भीमें वालें कयकल्लोलें ।
लोहिउ सोसिउ पलु आकरिसिउ ।
दाणवसारी भणइ भडारी ।
हियरुहिरासव मुइ मुइ केसव ।
णंदाणंदणु मेल्लि जणद्दण ।
कंसु ण सेवमि रोसु ण दावमि ।
जहिं तुहुं अच्छहि कील समिच्छहि ।
तहिं णउ पइसमि छलु ण गवेसमि ।

घत्ता

इय रुयंति कलुणु कह कह व गोविंदें मुक्की ।
गय देवय कहिं मि पुणु णंद णिवासिण ढुक्की ।।६।।

दुवई

वरकाहलियवंसखवहिरिए गाइयगेयरससए ।
रोमंथंतथक्कगोमहिसिउलसोहियपएसए ।।
अण्णहिं पुणु दिणि तहिं णियपंगणि
जणमणहारी रमइमुरारी ।
घोट्टइखीरं लोट्टइणीरं ।
भंजइ कुंभं पेल्लइ डिंभं ।

---

पलु=मांस । आकरसिउ=खींच लिया । मुइ मुइ=छोड़ो छोड़ो । छलु ण गवेसमि=अब कोइ छल नहीं करूंगी । ढुक्की=पहुंची ।

७. वरकाह-काहल वांसुरी से वहरे । गाइय····ससए=सैकड़ों गीत रस गाए जा रहे थे डिभंपजण=वच्चे को । चलच्चिं=जलती आग को । द ुवालि=दुष्काल, खोटा समय । राहे=लोगों की शोभा ले ।

छंडइ महियं चक्खइ दहियं ।
कड्ढइ चिञ्चिं धरइ चलञ्चिं ।
इच्छइ केलिं करइ दुवालिं ।
तहिं अवसरए कीलाणिरए ।

शकटा का षड्यन्त्र—

कयजणराहे पंकयणाहे ।
रिउणासिट्ठा देवीदुट्ठा ।
अवरा घोरा सयडायारा ।
पत्ता गोट्ठं गोवइइट्ठं ।
चक्कचलंगी दलियभुयंगी ।
उप्परिएंती पलउ करंती ।
दिट्ठा तेणं महुमहणेणं ।
पाएं पहया णासिवि विगया ।
रविकिरणावहि अवरदिणावहिं ।
इंदाइणिए पियचारिणिए ।
दिहिचोरेणं दढडोरेणं ।
पवलबलालो बद्धो बालो ।
उद्दूखलए णिहियउ णिलए ।
सीयसमीरं तीरिणितीरं ।
सिसुकयछाया विगयगामाया ।
ता सो दिव्वो अव्वो अव्वो ।
इय सद्दंतो परियड्ढंतो ।

तमुदूहलयं पयणियपुलयं ।
णयकयकण्हहु जयजसतण्हहु ।
जाणियमग्गो पच्छइलग्गो ।
अरिविज्जाए गयणयराए ।
ता परिमुक्कं णियडे ढुक्कं ।
मारुयचवलं तरुवरजुयलं ।
अंगेघुलियं भुयपडिखलियं ।
कीलंतेणं विहसंतेणं ।
वलवंतेणं सिरिकंतेणं ।

घत्ता

होइवि तालतरु रंगतहु परि तडितरलइं ।
रक्खसि केसवहु सिरि घिवइकढिणतालहलइं ।।७।।

( ८ )

राक्षसी का तालफल गिराना—

दुवई

सिरिरमणीविलासकीलाघरिवच्छयले पडंतइं ।
णं अरिवरसिराइं विहिलुक्कइं दसदिसिवहि पडंतइं ।।
ताइ इच्छए सो पडिच्छए ।
पंजलीयरो कीलणायरो ।
गयणसंचुए णाइ भिंदुए ।

---

हुई । उद्दूखलए=उलूखल से । णिलए=वेड़ी में । तडितरलइं=विजली की तरह कड़कते हुए । घिवइ=डालता है । तालतलइं=तालफल । रक्खसि=राक्षसी ।

८. सिरिरमणी····वच्छयते=लक्ष्मी रूपी रमणी के लिए, जिनका वक्ष, विलास का

ता महारवा तिव्वभेरवा।
पुंछलालिरी कण्णचालिरी।
धाइया खरी भिभिओ हरी।
उल्ललंतिया गहि मिलंतिआ।
वेयगंतिया दीह दंतिया।
उवरि एंतिया घाउदंतिया।
गांदवासिणा जाइओसिणा।
आहया उरे धारिया खुरे।
मेहसंगहे भामिया णहे।

गधी का उत्पात--

सुट्ठुचावरी कंसकिंकरी।
तीइ ताडिओ महिहि पाडिओ।
तालुरुक्खओ पुणुविवक्खओ।
जगि णमाइओ तुरउ धाइओ।

तालवृक्ष के रूप में राक्षस का आना—

गहिरहिंसिरो जीवहिंसिरो।
वक्कियाणणो णाइ दुज्जणो।
हिलिहिलंतओ महि दलंतओ।
कालचोइओ ए तु जोइओ।
लच्छिधारिणा चित्तहारिणा।

---

घर था। दसदिसिवहि=दशों दिशाओं के पथ में। कीलणायरो=क्रीड़ा में नागर, चतुर। भिंदुए=गेंद से। पुंछनालिरी=पूंछ हिलाने वाला। कण्णचालिरी=कान हिलाती हुई। धाइया खरो=गधी दौड़ी। कंसकिंकरी=कंस की दासी।

घुसिणपिंजरे वाहुपंजरे ।
छुहिवि पीलिओ गयणि चालिओ ।
मो डओ गलो पत्तपच्छलो ।
रणि हओ हओ णिग्गिओ गओ ।

घत्ता

ता जसोय भणिय णइपुलिणइ पाणियहारिहिं ।
णंदणु कहिं जियइ जायउ तुम्हारिसणारिहिं ।।८।।

( ९ )

## उद्खल से बांधा जाना—

दुवई

मरुहयमद्दिरुहेहिं पडिचप्पिउ गद्दह तुरय चूरिओ ।
अवरु उदूहलम्मि पइं बद्धउ जाणहुं वालु मारिओ ।।

धाइय तासु जसोय विसंठुल ।
करयलजुयलगिहियचलथणयल ।
वद्धउ उक्खल मेल्लिवि घल्लिउ ।
महु जीविएण जियहि सिसु वोल्लिउ ।
फणिणरसुरहं मि अइअइसइयउ
हरि मुहि चुंवुवि कडियलिउ ।
कि खरेण किं तुरएं दट्ठउ

छुहिवि=छूकर । पीलिओ=पीड़ित । मोडिओ=मोड़ दिया । णइ-पुलिणइ=नदी के किनारे । पाणिय-हारिहिं=पनहारिनों ने । तुम्हारिस णारिहिं=तुम्हारी जैसी स्त्रियों से । जायउ=उत्पन्न हुआ ।

९. विसंठुल=अस्तव्यस्त । अइअइसइयउ=अति-अतिशयित=अत्यन्त बढ़ चढ़ कर । परियट्ठउ=टटोले: छुए । अरिट्ठदेउ=अरिष्ट देवता । विपवेसें=वृष के

मायइ सयलु अंगु परिमट्ठउ।
अण्णहिं दिणि रच्छहि कीलंतहु
वालहु बालकील दरिसंतहु ।
दुट्ठ अरिट्ठदेउ विसवेसें।
आइउ महुरायइ आएसें ।

वृषभ रूप में अरिष्ट देव का आगमन—

सिंगजुयल संचालिय गिरिसलु ।
खरखुरग्ग उक्खयधरणीयलु ।
सरवरणेल्लिजालविलुलियगलु
कमणिवायकंपावियजलथलु ।
गज्जियरवपूरियभुवणंतरु ।
हरवरवसहणिवहकयभयजरु ।
ससहरकिरणणियरपंडुरयरु ।
गुरुकेलाससिहरसोहाहरु ।
किर झड णिविड देइ आणेप्पिणु
ता कण्हे भुयदंडें लेप्पिणु ।
मोडिउ कंठु कड त्ति विसुंदहु
को पडिमल्लु तिजगि गोविंदहु ।

घत्ता

ओहामियधवलु हरि गोउलि धवलहिं गिज्जइ ।
धवलाण वि धवलु कुलधवलु केण ण थुणिज्जइ ॥६॥

---

रूप में। उक्खय=उखाड़ लिया है। कमणिवाय ·· थलु=पैरों की चोट से जल थल को कंपा देने वाला। ओहामियधवलु=बैल को पराजित करने वाले। धवलहिं=धवल गीतों से। थुणिज्जइ=प्रस्तुत की जाती है।

( १० )

मां यशोदा की प्रतिक्रिया—

दुवई

ता कलयलु सुणंति गोवालहं पणयजलोहवाहिणी ।
सुयविलसिउ सुणंति णिग्गय णियगेहहु णंदगेहिणी ॥
भणइ जणणि ण दुआलिहि धायउ
पुत्तु ण रक्खसु कुच्छिहि जायउ ।
किह वलद्दु मोडिउ ओत्थरियउ
दइववसें सिसु सइं उव्वरियउ ।
हरिखरवसहहिं सहुं सुउ जुज्झइ
जणु जोवइ महु हियवउं डज्झइ ।
केत्तिउं मइं कुमार संतावहि
आउ जाहुं घरु बोल्लिउं भावहि ।
तेयवंतु तुहुं पुत्त णिरुत्तउ
रक्खहि अप्पाणउं करि वुत्तउं ।
परमहि भडकोडिहि आरूढउ
बाहुबलेण बालु जणि रूढउ ।
महुरापुरि घरि घरि वण्णिज्जइ
णंदगोट्ठि पत्थिवहु कहिज्जइ ।
तहु देवइमायरि उक्कंठिय
पुत्तसिणेहें खणु विणसंठिय ।
गोमुहकूवउ सहउ वउत्थी

१०. णिणुगेहहु=अपने घर से । दुआलिहि=दुष्काल में । कुच्छिहि=कोख में ।
वलद्धु=बैल । णंदगोट्ठि=नन्द की गोठ में । देवइमायरि=मां देवकी ।

लोयहु मिसु मंडिवि वीसत्थी।
चलिय णंदगोउलि सहुं णाहें
सहुं रोहिणिसुएण चंदाहें,

घत्ता

मायइ महुमहणु वहुगोवहं मज्झि णिरिक्खिउ।
वयपरिखेढियउ कलहंसु जेम ओलक्खिउ ॥१०॥

कृष्ण की गोपमंडली का देवकी और बलराम द्वारा स्वागत—

( ११ )

दुवई

हरि भुयजुवलदलियदाणवबलु णवजोव्वणविराइओ।
उग्गइपउरपुलय पडहच्छें वसुएवेण जोइओ॥
भायरु सिसुकीलारयरंगिउ
हलहरेण दिट्ठिइ आलिंगिउ।
भुयजुयलउं पसरंतु णिरुद्धउं
जायउं हरिसें अंगु सिणिद्धउ।
चिंतिव तेण कंसपेसुण्णउ
आलिंगणु देंतेण ण दिण्णउं।
गाढसिणेहवसेण णवंतइ

---

उक्कंठिय=उत्कंठा से भर गई। गोमहुकूवउ=गोमुख कूप नाम का व्रत। वउत्थी=व्रतस्था।

११. सिसुकीलारयरंगिउ=शिशु क्रीड़ा की धूल से रंगे हुए। सिणिद्धउ=स्निग्ध। कंस पेसुण्णउं=कंस की दुष्टता। आणाविय=ले आई। अल्लय=खाद्य चीजों

आणाविय रसोइ गुणवंतइ ।
गंधफुल्लदीवउ संजोइउ
भोयणु मिट्ठउं मायइ ढोइउं ।
अल्लयदलदहिं ओल्लियकूरहिं
मंडयपूरणेहिं घियपूरहि ।
णाणाभक्खविसेसहिं जुत्तउं
सरसु भाविभूणाहें भुत्तउं ।
सिरि णिवद्धवेल्लीदलमालहं
कंचणदंड दिण्ण गोवालहं ।
सुण्हइं मउदेवंगइं वत्थइं
भूसणाइं मणिकिरणपसत्थइं ।
पुणु जणणिइ तिपयाहिण देंतिइ
तणयहु उप्परि खीरु सवंतिइ ।

घत्ता

पोरिसरयणणिहि गुणगणविभावियवासउ ।
कुलहरलच्छियइ णं सइं अहिसित्तउ केसउ ॥११ ।

---

के नाम । सुण्हइं=सूक्ष्म । मउदेवंगइं=रेशमी दिव्य वस्त्र । तिपयाहिण=तीन प्रदिक्षणाएं ।

( १२ )

गोवर्धन उठाना—

दुवई

ता सुरखेयरेहिं दामोयरु वासारत्तरुंधणो ।
गोवद्धणु भणेवि हक्कारिउ कयगोजूहवद्धणो ॥

कण्हें वाहुदंडपरियरिडउ
गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ ।
जल पवहंतु जंतु ण तिवक्खउ
धारावरिसे गोउलु रक्खिउं ।
परउवयारि सजीविउ देंतहं
दीणुद्धरणु विहूसणु संतहं ।
पविमल कित्ति भमिय महिमंडलि ।
हरिगुणकह हुई आहंडलि ।
कालि गलंतइ कंतिइ अहियइ
कलिमलपंकपडलपविरहियइं ।
महुरापुरवरि अमरहिं महियइं
अरहंतालइ रयणइं णिहियइं ।
तिण्णि ताइं तेलोक्कपसिद्धइं
खटकारदेहसुहणिद्धइं ।
तं रयणत्तउं कहिं मि णिरिक्खउं
पुच्छिउ कंसें वरुणें अक्खिउं ।

१२. वासा=वर्षा की रात को रोकने वाले । गोवद्धणु=गोवर्धन । हुई=हुई । अक्खिउं=कहा । वरुणें=कंस के ज्योतिषी ने । आऊरइ=आपूरति । दावइ=

णायामिज्जइ विसहरसयणें
जो जलयरु आऊरइ वयणे।
जो सारंगकोडि गुणुपावइ
सो तुज्झु वि जमपुरि पहुद्रावइ।

घत्ता

उग्गसेणसुयणु विहुरंधरासि तारिव्वउ।
तेण णराहिवइ जरसिंधु समरि मारिव्वउ ॥१२॥

( १३ )

दुवई

भाणु सुभाणु णाम विसकंधर वरजरसिंध णंदणा।
संपत्ता तुरंत जउणायडि थिय खंचिय ससंदणा॥

मथुरा के लिए कूच—

अरिकरिदंतमुसलहयकलुसिय
जइ वि तो वि अरविंदहिं वियसिय।
काली कंतिइ जइ वि सुहावइ
तो वि तंब जणघुसिणें भावइ।
जइ वि तुरंगहिं चवलहिं वच्चइ
तो वि तुरंगहं साण पहुच्चइ।
जइ वि तीरि वेल्लीहर दावइ
तो वि ण दूसहं संपय पावइ।
पविउलु दिट्ठउं सिविरु पमुक्कउं

---

देता है। सारंगकोडि=धनुष्कोटि। तारिव्वउ=तारेगा। मारिव्वउ=मारेगा।
१३. सिविस=शिविर।

गोवविंदु साणंदु पढुक्कउ ।
तणकयथलयचिहुसियथिरकरु
वणकणियारि कुसुमरयपिंजरु ।
ससुसिरवेणुसद्दमोहियजणु
काणण धरणिधाउ मंडियतणु ।
फुरणिबंधणगोढियकंदलु
कंदलदलपोसियमहिसीउलु ।

घत्ता

गुंजाहलजडियदंडयविहत्थु संचल्लिउ ।
महिवइतणुरुहेण आसण्णु पढुक्कउ बोल्लिउ ॥१३॥

( १४ )

दुवई

भो आया किमत्थु किं जोयह दीसह पवर दुज्जया ।
पभणइ णंदपुत्तु के तुम्हइं कहिंगंतुं समुज्जया ॥

**नन्द गोप का आत्म परिचय—**

अम्हइं णंदगोव फुडु वुत्तउं
आया पुच्छहुं भणहुं णिरुत्तउं ।
भणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ
अद्धमहीसरु रिउसंघारउ ।

---

ससुसिर....जणु=सस्वर वेणु के स्वर से मोहित जन ।
काणण...तणु=वनभूमि की धातुओं से मंडित शरीर ।
गुंजाहल....विहत्थु=मूंगों से जड़े हुए दंडें अपने हाथ में लिए हुए ।
१४. वुत्तउं=कहा । सुभाणु=जरासन्ध का बेटा । हालिउ=अहीर । यमुना के तट पर । वच्चइ=व्रजति जाता है । वणं कणियार=वन कनेर कुसुमों की रज से रंजित शरीर ।

वढ जाएसहु महुरापट्टणु
संखाऊरणु फणिदलवट्टणु ।
तहिं विरएवि सरासणचप्पणु
कण्णारयणु लएसहु वणथणु ।
पुलयवसेणुग्गयरोमंचुय
तं णिसुणिवि जोयंते णियभुय ।
हउं मि जामि गोविंदें भासिउ
करमि तिविहु जं पइं णिद्देसिउ ।
तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ
हालिउ किं नृपधीयउ माणइ ।
तं णिसुणेप्पिणु बालें वालउ
जोयउं कंसहु अयसु व कालउ ।

घत्ता

माहवपयजुयलु उदिट्ठु सुभाणु रत्तउं ।
दिसकरिकुंभयलु सिंदूरें णावइ छित्तउं ॥१४॥

( १५ )

दुवई

णंदें णंदणिज्जु णियणंदणु ससणेहें णिहालिओ ।
पाहुणयाइं जाहुं सुयबंधुहुं इय वज्जरिवि चालिओ ।

अलौलिक सफलताएं—

तावग्गइ पारद्धु णिहेलणु
तहिं मि परिट्ठिउ महिवइरक्खणु ।
मिलिय जुयाण अणेय महाबल
पायपहरकंपाविय महियल ।

को वि ण संचालइ जे थामें
ते महुमहणें जयसिरिधामें ।
उच्चाइवि सुरकरिकरचंडहिं
पत्थरखंभणिहिय भुयदंडहिं ।
अविरयणरणियरें परियाणिउ
णंदगोउ लहु जणणिइ णीणिउ ।
आउ जाहुं हो पुत्त पहुच्चइ
गोउलु सुण्णउं सुइरु ण मुच्चइ ।
एव भणेप्पिणु कण्हपयावें
परिमुक्काइं ताइं भयभावें ।
मलवज्जिइ महिदेसि समाणइ
पुणरवि तेत्थु जि ठाणि चिराणइ ।
आणिवि गोविंदु वि गोविंदु वि
थियइं ताइं दइउ जि अहिणंदिवि ।

घत्ता

सुपसिद्धउ भरहि सो णंदगोठु गुणराइहिं ।
पुप्फयंत समहिं वण्णिज्जइ वरणरणाहहिं ॥१५॥

---

१५. थामें=स्थैर्य । उच्चाइवि=उठाकर । सुइरु=सुचिर ।

( १६ )

कृष्ण का प्रशस्ति—

कण्हेण समाणउ को वि पुत्तु
संजणउ जणणि विद्दवियसत्तु ।
दुद्धरभररणधुरदिण्णखंधु
उद्धरिय जेण णिवडंत बंधु ।
भंजिवि णियलइं गयवरगईइ
सहुं माणिणीइ पोमावईइ ।
अहिणंदिय जिणवरपायरेणु
महुरहि संणिहियउ उग्गसेणु ।
कइवयदियहहिं रइ कीलिरीहिं
वोल्लाविउ पहु गोवालिणीहिं ।
पंगुत्तउं पइं माहव सुहिल्लु
कालिंदितीरि मेरउं कडिल्लु ।
एवहिं महुराकामिणिहिं रत्तु
महुं उप्परि दीसहि अथिरचित्तु ।
क वि भणइ दहिउ मथंतियाइ
तहुं मइं धरियउ उब्भंतियाइ ।
लवणीयलित्तु करु तुज्भु लग्ग
क वि भणइ पलोयइ मज्भु मग्गु ।

१६. कण्हेण समाणउ=कृष्ण के समान । विद्दवियसत्तु=शत्रु का नष्ट करने वाले । दुद्धरभ ररण=कठोर भार वाले युद्ध की धुरी अपने कंधे पर उठाने वाले । महुरहि=मथुरा में । कइवइ=कितने ही दिनों तक । रइकीलिरीहिं=रत क्रीड़ा करने वाले ।गोवालणिहिं वोल्लाविउ पहु=ग्वालिनों ने प्रभु कृष्ण से

[ ३ ]

# धनपाल

कुरुजांगल के गजपुर का नगर सेठ धनवइ । उसका पुत्र भविस, अकारण परित्यक्ता मां. कमला के साथ मामा के घर रहता है। सयाना होने पर वह, सौतेले भाई बंधुदत्त के साथ द्वीपान्तर में वाणिज्य के लिए जाता है; भाई उसे अकेला छोड़ कर साथियों के साथ बढ़ लेता है। कुमार भटक कर तिलकद्वीप जा पहुंचता है। जहां उसे प्रचुर सम्पत्ति के साथ भविस्यानुरूपा मिलती है; लौटते में उन्हें फिर बंधुदत्त का काफिला मिलना है। वह उसका सत्कार करता है । बंधुदत्त फिर धोखा देकर, भविष्यानुरूपा को उड़ाकर, गजपुर जाकर, उससे विवाह करना चाहता है। दुःख का मारा भविस, मणिभद्र यक्ष की सहायता से गजपुर पहुंचने में सफल हो हो जाता है, वह दरबार में जाकर, अपनी फरियाद करता है। प्रस्तुत सन्धि में यही वर्णन है ।

## दरबार में कुमार भविस का प्रतिवेदन

रायंगणि गंपि पयडिवि दुट्ठहो दुच्चरिउ ।
तं निसुणहु जेम भविसयत्ति जसु वित्थरिउ ।

**भविस का राजभवन के लिए कूच—**

दाइय दप्पुवंचु आयन्निवि
माणकसायसल्लु मणि मन्निवि ।
हरियत्तहो संकेउ समासिवि
कमलदलच्छि लच्छि संवासिवि ।
निययजणेरिवयण संपेसिवि
पुव्वावरसंकेउ गवेसिवि ।
वहु नवल्ल पाहुडइं समारिवि

१. रायंगणि=राजा के प्रांगण में ।गंपि=जाकर ।दाइय=दुष्ट सौत पुत्र।

चंदप्पहु जिणवरु जयकारिवि ।
निग्गउ वणिवरिन्दु हहुवारहो
भडथडनिवह विसमसंचारहो ।
जहिं गय गुलगुलंति पिहु
जंगम हिलिहिलंति तुक्खार तुरंगम ।
जहिं मंडलियसक्कसामंतहं
निवडइ कणयदंडु पइसंतहं ।
गलइ माणु अहिमाणु न पुज्जइ
नियसच्छंदलील नउ जुज्जइ ।
जहिं अब्भोहजट्टजालंधर
मारुअटक्ककीररवबब्बर ।
मरुवेयंगकुंगवोराडवि
गुज्जरगोडलाडकन्नाडवि ।
इयएमाइ अवव्व वसुंधर
अवसरु पडिवालंति महानर ।

घत्ता

सामंतसएहिं जं सेविज्जइ रत्तिदिणु ।
तं रायदुवारु पिक्खिवि कासु न खुहइमणु ॥१॥

---

पाहुडइं=प्राभृत=उपहार । पहुवारहो=राजा के द्वार से । पिहु=पृथु=विशाल नियसच्छंदलील=निज स्वच्छंद लीला । अब्भोट्ट-जट्ट-जालंधर-मारुअ टक्क आदि प्रदेशों के नाम ।

( २ )

दरबार में उपहार देकर स्थान ग्रहण करना—

तं भडथडवमालु आसंधिवि
तन्निवि सीहवार गउ लंघिवि ।
दिट्ठु नरिंदत्थाणु दुसंचरु
सामंतसेवनरनिवहु निरंतरु ।
नरवइ सव्वावसरपरिट्ठिउ
दिट्ठु कणयसिंहासणि संठिउ ।
परिमिउ निविडतिविहपरिवारिं
जहिं ओसासु वि नउ सिंगारिं ।
तं अत्थाणु अलीढइं लंघिउ
पुणु पहुपायमूलु आसंधिउ ।
करिवि पणाउ पणयसिरकमलिं
पाहुडु पुरउ समप्पिउ अमलिं ।
किउ सम्माणदाणु संभासणु
सइं राइं देवाविउ आसणु ।
चामरगाहिणीउ अवलोइउ
पहुपरिवारु सयलु आमोइउ ।

घत्ता

तो भणइ नरिंदु करहिं वयणु संखेवगउ ।
सो आणमि इत्थु जेण समउ संबंधु तउ ॥२॥

---

२. कासु मणु न खुट्टइ=किसका मन क्षुब्ध नहीं होता । नरिंदत्थाणु=राजा का स्थान । पाहुडु=प्राभृत=उपहार । अमलि=स्वच्छ । सइं=स्वयं । देवाविउ=दिलाया । आमोइउ=आमोदित=प्रसन्न । 

( ३ )

धनवइ को बुलाए जाने की राजा से प्रार्थना और विवाह के कारण धनवइ की आने की असमर्थता—

तो करकमलकयंजलि हत्थें
पहु विन्नविउ विणयसुकयत्थें ।
पुर पउरालंकारनियत्तें
धणवइ कुक्कावहो सिउ पुत्तें ।
तं निसुणेविणु वयणु कुमारहो
लहु आएसु दिन्नु पडिहारहो ।
पहुआएसिं सोवि पधाइउ
धणवइ पुत्तसहिउ निज्झाइउ ।
आवहु पउरु लएविणु सारउ
राउलि अत्थि तुम्ह हक्कारउ ।
वाइउ कोवि आउ सुनिवद्धउ
तहु तुम्हहं समाणु संवंधउ ।
पभणइ रायसिट्ठि अविसन्नउ
अम्हहं निरु विवाहु आसन्नउ ।
राउलि पउरकम्म संखेव्वउ
वित्तइ पाणिग्गहणि करिव्वउ ।
तिं वयणि विणियत्तु अखेइउ
वयण गंपि नरवइहिं निवेइउ ।
सिट्ठि विवाहारंभि समाउलु
न सरइ खणु वि सरंतहो राउलु ।

३. निज्झाइउ=देखा । राउलि=राजकुल । हक्कारउ=बुलाया । वाइउ=वादी । सम्बंधउ=सम्बन्धी । पउरकम्म=प्रवर कर्म । समाउल=समाकुल ।

घत्ता

तो वयणु फुरंतु भविसयत्तु विन्नवइ पहु ।
पइसंतहो इत्थु कुसमि विवाहारंभु तहु ॥३॥

## धनवइ को दरबार में उपस्थित होने के कठोर आदेश

(४)

तं णिसुणेवि चमक्किउ राणउं
पहु आएसु सकक्खडमाणउं ।
पेसिउ कुरुडु समच्छरु दूवउ
सोवि ताहं आसन्नीहूवउ
धणवइ सयलु कज्जु आमिल्लहो ।
सहुं पउरिं राउलि संचल्लहो ।
तं निसुणेवि सिट्ठि आहल्लिउ
कक्खडवयणवियप्पिं सल्लिउ ।
सम्माणिवि दूवउ बइसारिउ
अप्पुणु बंधयत्तु ओसारिउ ।
दीसइ कारणु किंपि असारउ
अइकक्खडु राउलि हक्कारउ ।
जइ परएसि किंपि किउ कुच्छिउ
तो कहि करहुं कज्जु को णच्छिउ ।
पइसिवि राउलि समउ सहायहो
पहु परिओसहुं लग्गिवि पायहो ।

---

४. चमक्किउ=चौंक गया । कुरुडु=कठोर । समच्छरु=समत्सर । आसन्नी हूवउ=सन्नी भूत । बइसारिउ=बैठाया । ओसारिउ=हटा दिया । कुच्छिउ=कुत्सित । फुडु=स्फुट ।

घत्ता

फुडु कारणु किंपि महु नियमणि उत्पन्नु भउ।
एहइं दूएण नउ हक्कारिउ कहिंमि हउं ॥४॥

( ५ )

धनवइ की अपने पुत्र बंधुदत्त से पूछताछ—

तं निसुणिवि परिचिंतइ दाइउ
पंचहं सयहं मज्झि को वाइउ।
जंपइ मम्मच्छेय सहुं राएं
कवण गहणु महु तेण वराएं।
ढुक्कमि तेण समउ इक्कंतरु
इउ चिंतंत दिन्नु पडिउत्तरु।
चंगउ वयणु तुम्ह परिपुच्छिउ
मइं परएसि काइं किउ कुच्छिउ।
घरि अप्पणइं ताम कलि किज्जइ
पच्छइ पुणि राउलि पइसिज्जइ।
पंचहिं सयहिं समउ जंपतउ
तेण समाणु गणंति विढत्तउ।
कोवि राउलि पइट्ठु पहु रंजिवि
वंछइ तं सम्माणु विहंजिवि।
जइ तं ताहं विहंजिवि दिज्जइ
तो वि राउलि वि नाहि पइसिज्जइ।

---

५. मम्मच्छेय=मर्म का रहस्य। वराएं=बेचारे।

कवणु गहणु किर एहिं वरायहिं
काउरिसहं अइट्ठ पडिवायहिं ।
भंजिवि पंचसयहिं जो पम्मुहु
पइसिवि राउलि काहं परम्मुहु ।
घल्लिवि पंच वि सय दंडावहु
जो जंपइ तहो सिरु खंडावहु ।

घत्ता

तो भगाइ पुरेसु वट्टइ ताम एउ करहु ।
रायंगणि गंपि पिसुणहो पिसणत्तणु हरहु ।।५।।

( ६ )

ानवइ की पुत्र के साथ राज दरबार में उपस्थिति—

तो नंदणपवंचमोहियमइ
सयलु पवरु मेलावइ धणवइ ।
गउ राउलहो गरुयसंखोहिं
अमुणिय कज्जाकज्ज विबोहिं ।
सहुं पुत्तिं पहुपुरउ परिट्ठिउ ।
साहंकारु विसारु अणिट्ठिउ ।
थिउ नरवइ आवेसु धरेविणु
भविसयत्तु पच्छन्नु करेविणु ।
वणिवरु पणयसगग्गिरु जंपइ
आसंघइ राउलइ समप्पइ ।

---

आवेसु=आवेश । प्रच्छन्नु करेविणु=पीछे करके, छिपाकर । विग्घु=विघ्न ।
पच्चक्खु=प्रत्यक्ष ।

जइ अवराहु तोवि नउ जुज्जइ
जइ सुहि तो एहउ किं किज्जइ ।
कज्जारंभि मणोरहवंतए
किज्जइ विग्घु पिसुणि पवहंतए ।
विहसिवि वंधुयत्तु पडिवक्कइ

वंधुदत्त की चुनौती—

अम्ह रिद्धि जो सहिवि न सक्कइ ।
सो पच्चरक्खु पुरउ वइसारहि
सुदिढवयणसंकडि पइसारहि ।
किउ पेसुन्नु जेण भयभीसिं
अंतरु तुलमि अज्जु तहो सीसि ।

घत्ता

हुंकार मुएवि भविसु परिट्ठिउ तहो   समुहुं ।
इहु सो पडिवक्खु करहि वयणु जइअत्थिमुहुं ॥६॥

( ७ )

कुमार भविस की प्रति चुनौती—

तो हुंकारु करेवि सुनिब्भरु
जोवइ समुहु जाम वहुमच्छरु ।
ताम्व कुमारहो वयणु नियच्छिउ
झत्ति विलीणु लहिवि नंपुच्छिउ ।

---

७. सुनिब्भरु=सुनिर्भर ।

लज्जइ समुंहुं निएवि न सक्किउ
नियदुच्चरियइं माणकलंकिउ
नउ पडिवयणु करइ नउ पणवइ
मउलियवयणकमलु थिउ धणवइ ।
राएं पंच वि सय हक्कारिव
कोक्किवि नियडि पुरउ वइसारिय ।
तेहिं वि भविसयत्तु अवलोइवि
लज्जइ समुंहुं न सक्किउ जोइवि ।
पच्चारिय सयलवि भूवालिं
अहो किं तुम्हि गिलिय कलिकालिं ।
मुहि सरलहं अब्भंतरि घोरहं
दीसइ तुम्ह चरिउ जं चोरहं ।
पहुवयणि अणिओयणिउत्तहं
पासेइउ सरीरु वणिउत्तहं ।

घत्ता

हुइ छायाभंगि थोरपलंबुब्भियभुइण ।
पियवयणु चवेवि मं भीसिवि घणवइसुइण ॥७॥

( ९ )

पांच सौ वणिय पुत्रों का बयान—

देव देव एयहं अविहावहं
न करिज्जउ अवराहु वरायहं ।

८. कोक्किव=बुलाकर । कलिछलिं=कलिकाल से । अणिओयणि उत्तहं=अनियोग में नियुक्त; बुरे काम में फंसे हुए । पासेइउ=प्रस्वेदित=पसीवा पसीना हो गया । छायाभंगि=छायाभंग=कांति भंग । हु हुइ=हो गयी । वुच्चइ=उच्चते=कहा जाता है । पुन्नहिं=पुण्य से, भाग्य से । हुअ=हुए ।

जामहिं पहु अवहिएं परिसक्कइ
तामहिं भिच्चु धरेवि न सक्कइ ।
तो पुच्छिय पियवायएं राएं
तेहिंमि कहिउ सयलु अणुराएं ।
पुरउ परिट्ठिउ विन्नि महंतर
तेहिं निवेइय वाय निरंतर ।
अहो रायाहिराय परमेसर
अम्हइं कुलि जाणिज्जहुं वणिवर ।
सुअउ न सुणहुं न दिट्ठउ देक्खहुं
किम एवड्डु वयणु तउ अक्खहुं ।
जं किय एण कम्मु अवियारिउ
तं जणवइ लज्जणउ निरारिउ ।
पियरितुल्लु जो वंधउ वुच्चइ ।
सो किम्व वणि वंचेविणु मुच्चइ ।
ताहिंमि एहु पुन्नहिं न समत्तउ
हुउ सकलत्तु महासियवंतउ ।।

घत्ता

अम्हइंमि भवंत निद्धण निव्ववसाय हुअ ।
गय तं जि पएसु दुम्मण दुम्मारुएण धुअ ।।८।।

( ९ )

पांच सौ वणिक् पुत्रों का वयान—

तं पियवयणु चवंतहो आयहो
खमिउ एण बहुविणयसहायहो ।

णियसज्जणसमिद्धि दरिसाविय
पंचवि सय भोयणु भुंजाविय।
सम्माणिवि परिहाविय वत्थइं
नियधणहो भरियइं वोहित्थइं।
पुणरवि सअणु तहिं जि घल्लेविणु
आयउ अतुलु महाधणु लेविणु।
अह पहु परउ एउ किम्व सीसइ
छेयंतरि पेसुन्नउं होसइ।
बिन्नवि तुहं मणनयणाणंदण
कमलाएविसरूवहि नंदण।
होसइं तं जि तेम घरि तुम्हइं
वज्जदंडु निवडेसइ अम्हहं।
तं निसुणिवि विहसिउ नरनारिं
पियसुंदरि वरविलयहिं अवलोइउ
सव्वें पहुपरिवारिं जोइउ।

घत्ता

आलिंगिउ लेवि राएं नेहनिरंतरिण।
अद्धासणु दिन्नु पुव्वसणेह गुणंतरिण॥९॥

( १० )

राजा की भविस से बचपन की पहचान—

पुणु पुणु पहु दरिसइ नियलोयहो
अहो नवल्लु पडिवाइउ जोअहु।

एहु सु धणवइ पुत्त महंतउ
कमलहितणउ सुदृठु गुणवंतउ ।
मइं कालंतरेण नउ नायउ
अहो लोयणहो दिन्नु अणुरायउ ।
बालउ इत्थु एहु कीलंतउ
चरियइं सुट्ठु सुहावउ होंतउ ।
पोढविलासिणीहं रुज्झतउं ।
एक्किक्कइं समाणु जुज्झतउं
बहुसिहारतार तोडंतउ
सुनियत्थइं वत्थइं मोडंतउ ।
सिंहासणसिहरोवरि थंतउ
चुम्बिजंतु कवोलइं खंतउ ।
वड्ढिउ मामहं सालि असंगमु
बहुकालहो संजाउ समागमु ।
एम्वहिं करमि तेम सविसेसणु
जेम कयावि न होइ अदंसणु ।
तो पियसुंदरीहिं अवलोइवि
थियनियदुहियहिं वयणु पलोइवि ।

घत्ता

तहिं काले सुमित्त राए तासु परिट्ठविय ।
सम्माणिवि लोय नियनियनिलयहं रट्ठविय ॥१०॥

---

१०. पोढ विलासिणीइं=प्रौढ़ विलासिनियों को । वहुसिर हार तार ।

( ११ )

धणवइ बंधुअत्त रक्खाविय
जणि गरुयावराह लक्खाविय ।
मंदिरि कडयमुद्ध संचारिय
विहडप्फड सरूव ओसारिय ।
भविसहो सयणविंदि दिहि दरिसिवि
परमुच्छवि घणु हियइं पवरिसिवि ।
राएं पउरूप मुहुं वोल्लाविउ
तुम्हहं एउ कज्जु संभाविउ ।
एहु सिट्ठि पुरपउरि महंतरि
आयउ चोरु छुहिवि कक्खंतरि ।
दिट्ठु तुम्हि धिट्ठत्तणु आयहो
तंपि करेवि चडिउ परिछेयहो ।
मंडिवि अंगु अतुलु भयभीसहो
दरिसिय विहिमि संधि नियसीसहो ।
एवहिं थिय अयहेरि करेविणु
जं किज्जइ तं भणइ मिलेविणु ।

घत्ता

तो भणिउं समूहु सिरु विहुणइं घुम्मइं चवइ ।
अहो देखहो तुम्हि कम्महंतणिय विचित्तगइ ।।११।।

---

कम्महंतणिय=कर्मों की । विचित्तगइ = विचित्र गति ।

( १२ )

भविस का सम्मान—

तो कारणु परिचिंतिवि भारिउ
मइवंतेहिं समु हुं ओसारिउ।
करइ वयणु समयाअसमुच्चइ
एहइं कालि काइं पहु वुच्चइ।
जंपइ कोवि पुराइयकम्महु
अइयारि पहु जाउ परम्मुहु।
भविसयत्तु अहिए सम्मणिउ
सहिवि छायाभंगहो आणिउं।
कोवि भणइं अवियाणियसत्तें
अहु अजुत्तु कीयउ ववुयत्तें।
परिण विढत्तु हरेवि असारउ
किम वुच्चइ धणु एहु महारउ।
अन्नें वुत्तु पउर माहप्पें
अइकम्महो किर काइं वियप्पें।
एवहिं वयणु किंपि तं वुच्चइ
जेण सिद्धि मइं पुत्ति मुच्चइ।

घत्ता

परिचिंतिवि कज्जु एक्कायारु करेवि महु।
पडिगाहिवि सिद्धि पुणु पवरिं विनत्तु पहु ॥१२॥

---

१२. ओसारिउ=हटाया। अइयारि=अनिवार, अनिवार्य, आचरण। परिण विढत्तु=दूसरे का कमाया।

( १३ )

थाइवि पउरपमुहु पडिजंपइ
देव देव पउरि विन्नपइ ।
धणवइ कुरुजंगलि विपहाणउ
तउ धरि सुट्ठु समुन्नयमाणउं ।
सो अन्नायकारि जं वुच्चइ
तं पउरहो न मणाउ विरुच्चइ ।
जइ अन्नाउ तासु मणि भावइ
ता किं पुर पउरहो वि पहावइ ।
एक्कु सरीरु विभायहिं हुत्तउ
तिहिंमिं ताहं सामन्नु विढत्तउ ।
वंधुयत्तु चोरत्तणु पावइ
जइ अन्नहो धणु लेविणु आवइ ।
भाइहुं पुणु अविहत्थु हरंतहं
दाइयमच्छरु हियइ धरंतहं ।
निग्गहु तुम्हि ताहं न करिव्वउ
परजीवावहारि जीवेव्वउ ।

घत्ता

परियाणिवि लेउ भविसयत्त अप्पणउं धणु ।
आमिल्लहि सिट्ठि करउ पुत्तु पाणिग्गहु ॥१३॥

---

१३. निग्गहु=निग्रह ।

( १४ )

पौर प्रश्नों का निर्णय—

जं विन्नत्तु पउरसंघाएं
तं जि तेम पडिवज्जिउ राएं।
वइसहु भविसयत्तु वोल्लावहु
अवरुप्परु संतोसु करावहु।
तो संगिलिउ पउरु अप्पाहिवि
धणवइ पुत्तसहिउ पडिगाहिवि।
अहो अहो भविसयत्त बहुमाणउं
तुहं अम्हहं भवालसमाणउं।
बंधुयत्तु जं लेविणु आयउ
तं धणु धरि संवरिअ विहायउ।
जं वणगहणि खित्तु अणिओयहो
तं अवराहु खमहिं पुरलोयहो।
भणइं कुमारु कयंजलि हत्थउ
नहु नियजम्मु अज्जु सकयत्थउ।
जं पुरलोएं वयणु कराविउ
करहु किंपि जं मयरद्धो भाविउ।
जे गय तहु सहाय ते पुच्छिवि
पाणिग्गहणु करहु पडियच्छिवि।

घत्ता

पुरु पुच्छइ तेवि करहु कज्जु जं [illegible] [illegible]।
तो तेहिं मिलेवि तव्विजवि दिट्ठ [illegible] [illegible] ॥१४॥

( १५ )

गुज्झाचरण सीलसुनिउत्तहिं
दिढु समवाउ करिवि वणिउत्तिहिं।
सुअणत्तण गुणेण जं रक्खिउ
तंपि अभउ मग्गेविण अक्खिउ।
अहो परपउरि केम साहारिउ
अज्जवि एहु कज्जु निरु भारिउ।
कहि विवाहु कहिं सुहु बंधुत्तहो।
कहिं निव्वुइ समवाएं गोत्तहो
एह वर जुवइ थाइ जा सारी
सा गेहिणि भविसयत्तहो केरी।
अहो परमेसरि माय महासइ
नामग्गहणि ताहि दुहु नासइ।
काइं न वुत्तु एण दुवियप्पें
तोवि न चलिय सीलमाहप्पें।
वुच्चइ तेही तारि पइव्वय
हुअ पच्चक्ख महाजयदेवय।
धयवडु भग्गु भरिवि दुव्वायहो
हल्लोहसिउ चित्तु संघायहो।
झल्लोज्झल्लिउ सलिलु रयणायरि
सयलु वि जणु बुड्डंतउ सायरि।
ताहि सनासि एण साहारिउ
जामहिं बंधुयत्तु ओसारिउ।

घत्ता

पणवंतइ लोइ जइ उवसमु न करंतिसइ।
तो बुड्डइं आसि हुअ सव्वहं खयकालगइ ॥१५॥

---

५. गुज्झाचरण=गुह्याचरण। सइ=सती।

पांच सौ वणिक् पुत्रों द्वारा-शीला अपहरण का गंभीर आरोप—
बाप बेटे को हथकड़ियां जेल—

एहावत्थजाय जणविंदहो
वेलाउलि उत्तरिवि समुद्दहो।
आएं अम्हि धरिवि निरुतज्जिय
थिय कुलकित्ति कलंकहो लज्जिय
कहिंमि को वि काइं मि न पयासइ।
थिय भोयणु परिहरिवि महासइ
अम्हइं दुक्खु दुक्खु तन्हाविय।
ओसहमित्तु गासु गिन्हाविय
आणेविणु सुहिसहयणहिं दक्खिय
कन्नुकुमारि भणिवि जणि अक्खिय।
पइसारिय घरि गरुय विहोएं
थिय संघट्टु करिवि पइसोएं।
गंभीरत्तणेणं नउ अक्खइ
अइहरि कुलहो कलंकउ रक्खइ।
एवड्डतरेण जा अच्छइ
सा जि एहु परिणेवइ वंछइ।
सयणिहिं तह विवाहु पारंभिउ
एत्थंतरि एरिसउ वियंभिउ।
तिलमित्तुवि जइ अलियउआयहो
तो अम्हइं मिच्छित्त परायहो।
निसुणेविणु वणिउत्तहो वयणइं
थियइं कन्न झंपिवि सहिसयणाइं।

वड्ढिउ गरुआवेसु नरिंदहो
जोइउ समुहुं कुरुडभडविंदहो।
ओसारेवि वेवि दिढु वंधहो
अणुहवंतु फलु दुन्नयरंधहो।

घत्ता

गयउरु सविलक्खु अंसुजलोल्लियलोयणइं।
सुहिसयणसएहिं घरि घरि कियइं अभोयणइं ॥१६॥

( १७ )

प्रजा में प्रतिक्रिया—

घरि घरि हट्टि हट्टि जणु जूरिउ
भग्ग मडप्फरु हियइ विसूरिउ।
हा विहि जाउ सुट्ठु विच्छायउ
जं जम्महोवि न केणवि नायउ।
हो राउलि पुरपउरे महायउ
तासु मलित्तु केम घरि आयउ।
जंपइ कोवि न एयहो अग्गें
एउ सव्वु दुप्पुत्तहो सग्गें।
कोवि चवइ परिवड्ढिय खेरउ
एउ पवंचु सरूवहिं केरउ।
भविसयत्तु वुल्लाविउराएं
सहु माणि वड्ढिय अणुराएं।
करहिं किंपि जं जुज्जइ आयहं
दुन्नयदोस विडंवियकायहं।
तं निसुणेविणु वुत्तु कुमारिं

इउ लज्जावणिज्जु अइयारिं ।
अह अम्हहंमि एउ किं जुज्जइ
जं इउ एवड्डंतरु किज्जइ ।

घत्ता

असमंजसु कज्जु एहउ किंपि समावडइ ।
जं थोइलयंपि दुत्तरि दुप्पवंसिपडइ ॥१७॥

(१८)

निर्णय में परिवर्तन—

मणमलित्तु किं कासुवि भावइ
अह पुव्वकिउ कम्मु करावइ ।
जामहिं कज्जु दुसंकडि आवइ
तामहिं सुअणत्तणु न पहावइ ।
दुक्करु कज्जाकज्जु वियारहं
राउलि दप्पसाडु दुव्वारहं ।
जं पहुपुरउ वियारि न भंजइ
तं इहरत्ति परत्तिवि छिज्जइ ।
एवहिं महु सम्माणि जुज्जइ
निक्कउ पुरपरिवाडिए किज्जइ ।
जइवि तुम्ह पहुसत्तिए छज्जइ
तोवि सुंदरु जं पुरु पडिवज्जइ ।
तउ सम्माणु जइवि मइं पाविउ
पुरुअवराहि जइवि संभाविउ ।
तोवि मज्झु मणु एउ न माणइ
नउ सोहइ विणु पउरपो आणइं ।
न लहमि सुद्धि देहजणिगारिय

विमुहिं पउरि जणणि वंधारिय ।
हसइ नरिंदु पलंबियसाडहं
सुहियउ होइ पणंचु किराडहं
न चवहिं किंपि अणज्जु अवित्तहिं
न चलहिं एउवि इक्कु विण निचिहिं ।

घत्ता

सुणिवद्धनिओइ इहपरलोय विसुद्धमइ ।
धणवालवि होवि न करहि खणुविपमायमइ ॥१८॥

विज्जिज्जमाणु चलचामरेहिं ।
लीलाविलास सुहसा मिणीहिं
गाइज्जमाणु वरकामिणीहिं ।
कलयंठिरावकयहीलणेहिं
संथुव्वमाणु वंदीजणेहिं ।
गुणपउररायतग्गयमणेहिं
सेविज्जमाणु णायरजणेहिं ।
परलोयकज्जे उज्जुवगईहिं
सलहिज्जमाणु सज्जणमईहिं
अवरेहिं वि लोयहिं कलियमाणु
गउ सुंदरु पुरवरे जणसमाणु ।

घत्ता

सो पुरवरणारिहिं गुणणिलउ पइसंतउ दिट्ठउ णयरेकइ ।
णं दसरहणंदणु तेयणिहि उज्झहिं सुरणारीहिं जइ ।।

( २ )

पुर वनिताओं की प्रतिक्रिया—

तहिं पुरवरि खुहियउ रमणियाउ
झाणट्ठियमुणिमणदमणियाउ ।
क वि रहसइं तरलिय चलिय चलिय णारि
विहडफ्फड संठिय का वि वारि ।

---

किया जाता हुआ, चंचल चामरों से जिस पर हवा की जा रही है। संथुव्वमाणु=संस्तुत, चारण, जिसकी स्तुति कर रहे हैं। उज्जुवगईहिं=सीधी गति वाले ।

२. झाणट्ठियमुणि ⋯ याउ=ध्यान ये स्थित मुनियों के मन का दमन करने वाले ।

क वि धावइ णयणिवणेहलुद्ध
परिहाणु ण गलियउ गणइ मुद्ध ।
क वि कज्जलु वहलउ अहरे देइ
णयणुल्लए लक्खारसु करेइ ।
णिग्गंथवित्ति क वि कडिहिं लेइ ।
क वि णेउरु करयलि करइ वाल
यिवरीउ डिंभु क वि कडिहिं लेइ
सिरु छंडिवि कडियले धरइ माल ।
णियणंदणु मण्णिवि क वि वराय
मज्जारु ण मेल्लइ साणुराय ।
क वि धावइ णवणिउ मणे धरंति
विहलंघल मोहइ धर सरंति ।

घत्ता

क वि माणमहल्ली मयणभर करकंडहो समुहिय चलिय ।
थिरथोरपओहरि मयणयण उत्तत्तकणयच्छवि उज्जलिय ॥

( ३ )

राजप्रसाद का वर्णन और स्वाकत—

णवरज्जलेभरंजियहिएण
करकंडइं पुरे पइसंतएण ।
गयरवंधे चडिन्णय जंतएण
णिउ राउलु लीलए पत्तएण ।
तें दिट्ठउ रायणिकेउ तुंगु

रहसइं=हर्ष से । परिहाणु=परिधान ।
३. तुंग = ऊंचा । हिमवंतुसिगु=हिमालय का शिखर । धयवडवमालु=ध्वजपत्रों

अइमणहरु एं हिमवंतसिंगु ।
मुत्ताहलमालातोरणेहिं
एं विहसइ सियदंतहिं घणेहिं ।
किंकिणिरणंतु धयवडवमालु
एं णच्चइ पणयिणि विहियतालु ।
चामीयरमणिरयणेहिं घडिउ
एं सग्गहो अमर विमाणु पडिउ ।
तहिं पइसइ णवणिउ विमलबुद्धि ।
पारंभिय गुरुयण नणविसुद्धि ।
करहेमकुंभु मंगलु करंति
क वि माणिणि णिग्गय ता तुरंति ।
परिमंगलु किउ वरदीवएहिं
जय कारिउ पुणु णारीसएहिं ।
सोवण्णकलसकय उच्छवम्मि
पइसाहिउ सो णिवमंदिरम्मि ।

घत्ता

सो सयलगुणायरु सीलणिहि विणयभावसंजुत्तउ ।
सामंतमंतिजणपरियरिउ पुरिअच्छइरज्जु करंतउ ॥

( ११ )

तहि तेण वि रज्जु करंतएण
आणाविय वंस तुरंतएण ।

---

से व्याकुल । सग्गहो=स्वर्ग से ।

सुशासन और लीलावती के पट चित्र का दर्शन पूर्वराग—

आएसवसेण व जे धरिय
धयअंकुसछत्तहं दंड किय।
आसावसेण जो तहिं जि ठिउ
पुणु आणिवि दियवरु मंति किउ।
ता एक्कहिं दिणि करकंडएण
वरलीलए णयरे भमंतएण।
देसंतरु जो हिंडंतु पत्तु
तहिं दिट्ठउ सो णरु ललियगत्तु।
पुणु दिट्ठउ तहो करे पडु विचित्तु
जो मोहइ लोयहं तणउ चित्तु।
सो भणियउ करकंडइं णिवेण
पडु अप्पहि देक्खहुं सहुं हिएण।
ता तेण समप्पिउ पत्थिवासु
जणु रत्तउ अणुराएण जासु।
सो पंचवण्णु गुणगणसहंतु
करकंडइं जोयिउ पडु सहंतु।
तहिं रूउ सलक्खणु तेण दिट्ठ
णं मयणबाणु हियवए पइट्ठ।
मुहकमलु सउण्हउ दीहसासु
जरु दाहु अरोचक हुयउ तासु।

घत्ता

करकडइं जोइउ पडु पवरु थिउ हियवए विंभिउ एक्कु खणु।
जणे पुलयइं कहियउ तहो विरहु तें मउलिउ णवणिउ विमणमणु॥

४. ललियगत्तु=ललितगात्र। दीहसासु=दीर्घ श्वास।

( ५ )

मदनावली से विवाह का प्रस्ताव—

णिव हियउ मुणिउ पडधरणरेण
वरु होइइ कण्णहे एहु भरेण।
इय मुणिवि तो वि पडिलविउ भाय
पडु अप्पहि अम्हहं जाहुं राय।
णउ छंडइ सो पड उल्लसंतु
पुणु भणइ णरेसरु णीससंतु।
महो सहयर अक्खु पयत्तएण
पडु लेवि भमहि कज्जेण केण।
आयण्णिवि तें वयणाणुसारु
तहो रायहो कहियउ पडिवियारु।
एत्थत्थि देव सोरट्ठु देसु
सुरलोउ विडंबिउ जें असेसु।
तहिं णयरु अत्थि गिरिणयरु णामु
सुरखेयरणरणयणाहिरामु।
तहि राउ अत्थि अरिसिरकयंतु।
अजवम्मु णाउ अजियंगिकंतु।

घत्ता

तहे रूवकरंडी कलसरिय जा णयणपियारी णरवरहं।
मयणावलि णामइं तेयणिहि सा हूई धीय मणोहरहं॥

पडिलविउ=प्रतिलपित=प्रत्युत्तर दिया। आयण्णवि=आकर्ण्य सुनकर। पयत्तएण=प्रयत्न से। पडिवियारु=प्रति विचार। सोरट्ठु=सौराष्ट्र देश। रूप करंडी=रूप की खान।

गीतों में करकंडु की प्रशंसा सुनकर मदनावली का उस पर अनुरक्त हो उठना--

मयणावलि सा एक्कहिं दिणम्मि
गय सहियहिं सहुं णंदणवणम्मि ।
तहिं खेयर जणमणणयणइट्ठ
दोल्लहरि चडीणा ताइं दिट्ठ ।
गायंता गेयइं मणहराइं
कागलियइं करकंडहो किराइं ।
गेयाइं मणोज्जइं सा सुणेवि
धरणीयले णिवडिय तणु धुणेवि ।
विहलंघल गयकल भीणदेह
कसणम्मि पक्खि णं चंदलेह ।
वायाहयकेलि व कंपमाण
णिय सहियहिं घरु णेएं समाण ।
समसीलहिं जणमणदुहहरीहिं
परिपुच्छिय विणएं सहयरीहिं ।
विहलंघल किं हूई सहीए
अम्हहं कहि वहिणिए वच्छलीए ।
मोहेण वि सहियहिं सरलियाए
विरहाणलु अक्खिउ वालियाए ।

६. दोल्लहरि=दोलगृह । चडीणा=चढ़ी हुई । दिट्ठ=दिखाई दी । गेयाइं=गीत । मणोज्जइं =मनोज्ञ सुंदर । धुणेवि=धुन कर । भीणदेह=क्षीण देह । कसणम्मि पक्खि=कृष्ण पक्ष में । चंदलेह=चन्द्रलेखा ।वायाहय केलि व=

घत्ता

जो गीयउ गायउ खेयरहिं मइं सुवउ करकंडहो तणउ।
तो तेण वियंभिउ महो हियउ पुणु चउदिसु लायउ रणरणउ॥

( ७ )

विवाह की स्वीकृति—

मइं तुज्झ सहिए पायडिय वित्ति
जइ सक्कहि ता महो करि परित्ति।
विरहग्गिजालपज्जलियमाण
महो णासहिं जाव ण सहिए पाण।
ता दुक्खु वहंतिए णरवरासु
संखेवें अक्खिय वत्त तासु।
करकंडगेयआयण्णणेण
मयणावलि पीडिय कामएण।
आयण्णेवि बालहे तणिय वत्त
राएण लिहाविय हरिणणेत्त।
जयभूसण कुलगयणम्मि चंद
पइ अप्पिउ राएं महो णरिंद।
अरिदूसहमोडणमडसहाउ
हउं तुज्झ णयरे पइ लेवि आउ।
पइ पेक्खिवि गच्छइ मोहु जो वि
वरु होइ णरेसर ताहे सो वि।

घत्ता

मइं एहउ पिसुणिउ तुज्झ णिव एउ इत्तिउ तम्हामहो सरउ।
सा कमलदलच्छी ससिवयण तउ करयलु करपल्लवे धरउ॥

(८)

विवाह--

तहो सुणिवि वयणु पडधरणरासु
पडिवण्णिउ राए सयलु तासु।
तें सरिसा कुलणहससहरेण
संपेसिय णियणर णिववरेण।
दिवहम्मि पसण्णए कयसहाय
मयणावलि लेविणु ते वि आय।
किय हट्टसोह घरि तोरणाइं
संवद्धइं तहो करकंकणाइं।
णाणाविह वज्जइं वाइयाइं
गीयाइं रसालइं गाइयाइं।
भावड्ढइं णच्चइं णच्चियाइं
गयतुरयहं थट्टइं खंचियाइं।
उग्घाडिउ मुहवडु चिहिं जणाहं
णं मोहपडलु तग्गयमणाहं।
घयजलिअजलण भामरिउ सत्त
देवाविय भट्टहिं पढिवि मंत।
करु वालहे अप्पिउ णववरेण

८. संपेसिय=भेजा। हट्टसोह=हट्टशोभा। वाइयाइं=वाद्य। भावड्ढइं=भावार्थ। थट्टइं=समूह। उग्घाढिउ=उघाड़ दिया। घय जलिय...सत्त=घी से जलती आग की

किय सवहणाइं दाहिणकरेण ।
भउ तारामेलउ णिविडु तेम
जम्मे वि ण विहडइ णेहु जेम ।
पहिलारउ मिलियउमणु-पसत्थु
किउ लोयचारु जणरंजणत्थु ।
सुविसुद्धदिणहिं रंजियमणाहं
सामंतहिं कियउ विवाहु ताहं ।

घत्ता

णरणाहहो हुयउ विवाहु तहिं सुर खेयर देक्खिवि उल्लसिय ।
णियभोयहो उवरि विरत्तमणु तहोतणिय रिद्धिमणिअहिलसिय ।।

( ६ )

साध्वी रूप में मां का आगमन और आशीर्वाद—

तहिं अवसरि पोमावइ वि माय
णियणंदणु देक्खहुं तुरिय आय ।
सा दिट्ठी करकंडें णिवेण
पुणु पणमिय भावें णवणवेण ।
णियपुत्तविवाहें हरिसियाए
आसीस पदिण्णीतुरिउ ताए ।
चिरु जीवहि णंदण पुहइणाह
कालिंदी सुरसरि जाव वाह ।
वइसारिय विणएं सा णवेवि
दिणु अज्जु सहलु एहउ भणेवि ।

---

सात भावरें (फेरे) । देवाविय=दिलाकर । अप्पिउ=अर्पित करदी ।
सवहणाइं=शपथें ।

सम्माणिय वयणहिं कोमलेहिं
परिहाविय वत्थहिं उज्जलेहिं ।
आसीस देवि सा गय तुरंति
करकंडकित्ति एं विप्फुरंति ।
ता एत्तहिं जणमणजणियराउ
करकंड पुरउ पडिहारु आउ ।

घत्ता

करकमल णिवेसिवि सिरकमले पडिहारु पयंपइ पुट्ठसरु ।
चंपाहिवरायहो दूउ णिव सो अच्छइ सिंहवारम्मिवरु ॥

( १० )

चंपा नरेश के दूत का संदेश—

तं सुणिवि वयणु करकंडएण
पडिहारु पउत्तउ तुरियएण ।
लइ जाहि तुरिउ सो सुहडु जेत्थु
चांपाहिवदूवउ आणि एत्थु ।
तं रायहो वयणु सुणेवि तेण
लहु आणिउ सो पडिहारएण ।
सो देक्खिवि दूवउ राणएण
संमाणिउ दाणइं आसणेण ।
संसिद्धी मेइणि सयल जासु
भणु कुसलु दूव चांपाहिवासु ।

---

९. तुरिय शीघ्र । आय=आई । परिहाविव=पहनाए ।
१०. सिंहवारिम्म=सिंह द्वार पर । अणवरउ=अनवरत । विहियसेव=विहित

दूवेण भणिउ तहो कुसलु राय
पइं जेहा अच्छहिं जसु सहाय।
अणवरउ णरिंदहिं विहियसेव
सो सुमरइ तुम्हहं देवदेव।
जह जलहं ण भिण्णउ सीयलत्तु
तह चंपणरिंदहो तुहुं णिरुत्तु।

घत्ता

लइ पालहि णिव करकंड तुहुं चंपाहिवरायहो केर वर।
होएविणु एक्कइं वे वि जण अणुहुंजहु तुम्हहं भोय धर।।

( ११ )

करकंडु का प्रत्युत्तर—

विणु केरइं लभइ णाहि मित्त
एह मेइणि भुजहं हत्थमेत्त।
ण वि पालहि जइ पुणु सेव तासु
तो ठाउ करहिं अह कहिं मिणासु।
तं सुणिवि वयणु करकंडएण
तें हियवएं कोहु धरंतएण।
आयंबणयण भालयले णीय
णं चंददिवायर सग्गि ठीय।
जाजाहि दूव तउ सामि जेत्थु
तहुं खणु वि एक्कु मा वसहि एत्थु।

---

सेव। सीयलत्तु = शीतलता। केर = आज्ञा।

आयंबणयंव = आताम्र नेत्र। संखेवें = संक्षेप। भडावलेउ = आह का अहंकार।

वें कहि चंपाहिवासु
हउं आयउ तुरियउ तुज्झ पासु।
जइ संगरि अत्थि भडावलेउ
संगासु मज्झु ता तुरिउ देउ।
इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु
सिरिधाडीवाहणु वसइ जेत्थु।

घत्ता

तें कहियउ दंतीपुरिणिवइं सो वइं देव ण वि णवइ।
संगामरंगि तुम्हेंहिं सहुं अइजुज्झइ धीरउ इउ लवइ॥

( १२ )

चंपा नरेश की तैयारी और करकंडु का कूच—

तं सुणिवि वयणु चंपाहिराउ
सण्णज्झइ ता किर वद्धराउ।
तावेत्तहिं दंतीपुरिणिवेण
कंपाविय मेइणि मंदरेण।
णिण्णासिय अरियणजीवएण
उड्डाविय दहदिसि रय रणेण।
णहु छायउ खलियउ रवि रएण
लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धएण।
गंगापएसु संपत्तएण
गंगाणइ दिट्ठी जंतएण।

---

१२. सण्णज्झइ=सनंद्ध होता है। वद्धराउ=वद्धराग। उड्डाविय=उड़ाया। खलियउ=स्खलित हो गया। पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया। आइच्चवहो=

दूवेण भणिउ तहो कुसलु राय
पइं जेहा अच्छहिं जसु सहाय ।
अणवरउ णरिंदहिं विहियसेव
सो सुमरइ तुम्हहं देवदेव ।
जह जलहं ण भिण्णउ सीयलत्तु
तह चंपणरिंदहो तुहुं णिरुत्तु ।

घत्ता

लइ पालहि णिव करकंड तुहुं चंपाहिवरायहो केर वर ।
होएविणु एक्कइं वे वि जण अणुहुंजहु तुम्हहं भोय धर ।।

( ११ )

करकंडु का प्रत्युत्तर—

विणु केरइं लभइ णाहि मित्त
एह मेइणि भुजहं हत्थमेत्त ।
ण वि पालहि जइ पुणु सेव तासु
तो ठाउ करहिं अह कहिं मिणासु ।
तं सुणिवि वयणु करकंडएण
तें हियवए कोहु धरंतएण ।
आयंबणयण भालयले णीय
णं चंददिवायर सग्गि ठीय ।
जाजाहि दूव तउ सामि जेत्थु
तहुं खणु वि एक्कु मा वसहि एत्थु ।

---

सेव । सीयलत्तु= शीतलता । केर=आज्ञा ।

११. आयंबणयंव=आताम्र नेत्र । संखेवें=संक्षेप । भडावलेउ=आह का अहंकार ।

एं कहि चंपाहिवासु
हउं आयउ तुरियउ तुज्झ पासु ।
जइ संगरि अत्थि महावलेउ
संगामु सज्झु ता तुरिउ देउ ।
इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु
सिरिधाडीवाहणु वसइ जेत्थु ।

घत्ता

तें कहियउ दंतीपुरिणिवइं सो वइं देव ण वि णवइ ।
संगामरंगि तुम्हेंहि सहुं अइजुज्झइ धीरउ इउ लवइ ॥

( १२ )

चंपा नरेश की तैयारी और करकंडु का कूच—

तं सुणिवि वयणु चंपाहिराउ
सण्णज्झइ ता किर वज्जराउ ।
तावेत्तहिं दंतीपुरिणिवेण
कंपाविय मेइणि संदरेण ।
णिण्णासिय अरियणजीवएण
उड्डाविय दहदिसि रय रणेण ।
णहु छायउ खलियउ रवि रएण
लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धएण ।
गंगापएसु संपत्तएण
गंगाणइ दिट्ठी जंतएण ।

---

१२. सण्णज्झइ=सन्नद्ध होता है । वज्जराउ=वज्रराग । उड्डाविय=उड़ाया । खलियउ=स्खलित हो गया । पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया । आइज्झहो=

सा सोहइ सियजल कुडिलवंति
एं सेयभुवंगहो महिल जंति ।
दूराउ वहंती अइविहाइ
हिमवंत गिरिंदहो कित्ति गाइं ।
विहिं कूलहिं लोयहिं ण्हंतएहिं
आइच्चहो जलु परिदिंतएहिं ।
दब्भंकियउढहिं करयलेहिं
गाइ भगाइ णाइं एयहिं छलेहिं ।
हउं सुद्धिय णियमग्गेण जामि
मां रूसहि अम्महो उवरि सामि ।
गाइ पेक्खिवि णिउ करकंडणामु
गउ जणणायरु गुणगणियधामु ।

घत्ता

जें संगरि सुरवरखेयरहं भउ जणियउ धणुद्दरमुअसरहिं ।
तें वेढिउ पट्टणु चउदिसिहिं गयतुरयणरिंदहिं दुद्धरहिं ।।

( १३ )

चंपा नगरी का घिराव—

तं वेढिउ जा राएण तेणु
ता आउलि पुरयणु हुउ खणेण ।
णरणाहहो कहिउ परेण केण
उवरुद्धउ परवलु सयलु जेण ।
हे णरवइ परवलवणहुआस

आदित्य का-सूर्य का । दब्भंकिय= दूब से अंकित और उठे हुए । सुद्धिय=शुद्ध ।

१३. वेढिउ=घेर लिया । उपरुद्धउ=रोक लिया ।

वंदीयणसज्जण पूरियास ।
उद्दंडसुंड गय गुलुगुलंत
कुडिलाणण वरहय हिलिहिलंत ।
संचल्लिय रहवर घरहरंत
फारक्कहिं फुरियहिं फरहरंत ।
करवालकिरण रविकरहरंत
वंकुडिय कउत्तल थरहरंत ।
छुरिएहिं कोंत अइ विप्फुरंत
पवणा इव गेएं संचरंत ।
सीहोव मडुद्धरु अइपयडु
तुह उवरि पराइउ वइरिदंडु ।

घत्ता

तं सुणिवि णरिंदहो मुहकमलु संजायउ रत्तप्पलसरिसु ।
डसियाहरु भूभंगुरणयणु कोहाणलु वड्ढिउ गउ हरिसु ॥

( १४ )

सैनिक प्रतिक्रियाएं—

ताव सो उट्ठिओ धाइया किंकरा
संगरे जे वि देवाण भीयंकरा ।
वाउवेया हया सज्जिया कुंजरा
चक्कचिक्कार संचल्लिया रहवरा ।
हक्क डक्कार हुंकार मेल्लंतया
धाविया के वि कुंताइं गेण्हंतया ।
के वि सम्माणु सामिस्स मण्णंतया
पायपोमाण रायस्स जे भत्तया ।

चावहत्था पसत्था रणे दुद्धरा
धाविया ते णरा चारुचित्तावरा ।
के वि कोवेण धावंत कप्पंतया
के वि उग्गिण्णखग्गहिं दिप्पंतया ।
के वि रोमंचकंचेण संजुत्तया
के वि सण्णाहसंबद्धसंगत्तया ।
के वि संगामभूमीरसे रत्तया
सग्गिणी छंदमग्गेण संपत्तया ।

घत्ता

चपाहिउ णिग्गउ पुरवरहो हरिकरिरहवर परियरिउ ।
उद्दंडचंडपीवरकरहिं भणु केहिं ण अणुसरिउ ।।

( १५ )

द्वंद युद्ध—

ता हयइं तूराइं
भुवणयलपूराइं ।
वज्जंति वज्जाइं
सज्जंति सेण्णाइं ।
आणाए घडियाएं
परबलइं भिडियाइं ।
कुंताइं भज्जंति
कुंजरइं गज्जंति ।
रहसेण वग्गंति
करिदसणे लग्गंति ।
गत्ताइं तुट्टंति
मुंडाइं फुट्टंति ।

रुंडाइं धावंति
अरिथाणु पावंति ।
अंताइं गुप्पंति
रुहिरेण थिप्पंति ।
हड्डाइं मोडंति
गीवाइं तोडंति ॥

घत्ता

के वि भग्गा कायर जे वि णर के वि भिडिया के वि पुणु ।
खग्गुग्गामिय के वि भड मंडेविणु थक्का के वि रणु ॥

( १६ )

.प बेटे का युद्ध—

ता रोसें चंपाहिउ णरिंदु
रह चडिवि पधायउ णं सुरिंदु ।
सो तुरिय गयउ परबलणिवासु
अभिडियउ करकंडहो णिवासु ।
ता कलयलु वड्ढिउ विहिं बलाहं
बाणावलिछाइयणहयलाहं ।
करकंडें कोहालणजुएण
अइरावइ करदीहरभुएण ।
ता तुरियइं चंपणराहिवासु

---

.५. मंडेविणु=मांडकर, रचकर ।

सहसत्ति पमेल्लिय सत्ति तासु ।
रहु छिण्णिउ चिण्हद्धउ खणेण
पुणु सारहि पाडिउ तुरिउ तेण।
ता खेवें चंपणराहिवेण
संपेसिय बाण तुरंतएण ।
सर पेसिय जा चंपाहिवेण
करकंडहो बलु भग्गउ खणेण ।

घत्ता

करकडएं पेच्छिवि बलु चलिउ मणि रोसु महंतउ विप्फुरिउ।
जा विज्ज पइण्णी खेयरइं तहे पेसणु दिण्णउ तें तुरिउ ।।

( १७ )

विद्याओं का प्रयोग—

ताव तेणदुद्धरेण
मुक्क विज्ज मच्छरेण ।
ता खणेण विज्ज धिट्ठ
धाविया तुरंत दिट्ठ ।
फे क्करंति हुं क्करंति
वाउवेय संचरंति ।
रक्खसी व वावरंति
भासुरा विखे मिलंति ।
कुंभिकुंभ णिद्दलंति
रहवरेण रह दलंति ।
संगरम्मि जे वि दिट्ठ
दंसणेण ताहे णट्ठ ।

---

६. अब्भिडियउ=भिड़ गया ।

के वि मुच्छमोहियाइं
के वि जोह जोहियाइं ।
के वि घायखंडियाइं
के वि जीव छंडियाइं ।

घत्ता

ता कुवियइं चंपणरेसरइं तुरिएण वि असिलियकरे धरिय ।
जा विज्ज गिलंती णरसयइं वलसत्ति खणद्धें तहे हरिय ।।

( १८ )

युद्ध की विश्वव्यापी प्रतिक्रिया—

गय विज्ज तट्ठीय
करकंडें दिट्ठीय ।
रोसं वहंतेण
करे धणुहु किउतेण ।
तहो चप्पे गुणु दिण्णु
तं पेक्खि जणु खिण्णु ।
ता गयणे गुणसेव
खोहं गया देव ।
टंकारसद्देण
घोरें रउद्देण ।
धरणियलु तडयडिउ
तस कुम्मु कडयडिउ
भुवणयलु खलमलिउ ।

---

१८. तट्ठीय=नष्ट हो गई ।

गिरिपवरु टलटलिउ
मयरहरु झलझलिउ ।
धरणिंदु सलवलिउ
खगणाहु परिसरिउ
सुरराउ थरहरिउ ।

घत्ता

सो सद्द सुणेविणुधणुगुणहो रह भग्गा णट्ठा गयपवर ।
मउगलियउ चंपणराहिवहो भयभीय ण चल्लहिंकहिंखयर ॥

( १९ )

मां का हस्तक्षेप—

सुरलोयहं छुडु हियवउ विभिण्णु
छुडु परबलु भयभीयउ णिसण्णु ।
संबद्धउ छुडु वइसाहथाणु
छुडु भग्गए चंपणरिंदमाणु ।
छुडु चाउ खणद्धें सज्जियाउ
छुडु सेयजलें गुणु मज्जियाउ ।
करकंडें गुणें किउ बाणु पवरु
चंपाहिवेण ता मुक्कु अवरु ।
हुउ बाणु णिरत्थउ सोहु जाव
पोमावइ संगरे पत्त ताव ।
सा दिट्ठीय तेण णरेसरेण
पुणु पणमिय दूरहोणयसिरेण ।
हे माए माए संगरे असज्झे

---

१९. असज्झे=असाध्य ।

किं आइय तुहुं भउनियरमज्झे।
सा भणइ पुत्त संवरहि चाउ
एहु धाडीवाहणु तुज्झ ताउ

घत्ता

कहि माए महासइ गुणणिलउ किमु ताउ महारउ णिउ हवइ।
ता ताइं तुरंतइं तहो कहिउ सुणि पुत्त महाबल धरणिवइ ।।

( ८० )

**मिलन—**

चंपाउरिरायहो घरे रमणी
हउं होंती जणवयमणदमणी।
संजायउ जइयहुं गब्भे तुहुं
उप्पण्णउ तइयहुं दुक्खु महुं ।
हउं हरिवि णीय ता करिवराइं
दंतीपुरि बाहिरि दुद्धराइं ।
तहिं जायउ भीममसाणि तुहुं
पइं पेक्खिवि जायउ मज्झु सुहुं ।
करकंडु णरेसरु एक्कु खणु
तं सुणिवि वयणु थिउ विमणमणु ।
णियपुत्तहो अक्खिवि चत्तभया
पुणु तुरियउ कंतहो पासेगया ।
सा दिट्ठीय चंपणरेसरेण
गंगाणइ णं रयणायरेण ।

---

२०. थुइ करेइ=स्तुति करता है।

जाणंतें एह पोमावइया
तो वि तेण सहावें सा णमिया ।
अह गरुअउ जो वयभरु धरेइ
तें राणउ कंतहे थुइ करेइ ।

घत्ता

परिपुच्छिय चंपणराहिवइं कह छुट्टिय तुहुं तहो गयवरहो ।
ता कहियउ ताइ तुरंतियए णिवगयए पमुक्की तडे सरहो ॥

( २१ )

पद्मावती धाड़ीवाहन को पूर्व कथा सुनाती है--

तहो पासे मसाणए महो सुयउ
कुलमंडणु णंदणु सो हुयउ ।
परिपालिउ केण वि खेयराइं
वउ लइयउ तहिं मइं णिव भराइं ।
दंतीपुरिराणउ ता मुयउ
तहिं णयरे णराहिउ सो कियउ ।
सो जाणहि एवहिं तुइ भिडिउ
तुहुं कोह पिसाएं परिणडिउ ॥
मा मुज्झहि छंडहि एहु गहु
णिव णंदणु तेरउ एहु पहु ।
तं वयणु सुणिवि चंपाहिवइ
संतुट्ठउ तक्खणे सो हियइं ।
हूउ धण्णउ जसु एहउ सुयउ

२१. पज्जुण = प्रद्युम्न । दामोयरिण = कृष्ण से । गिण्हहि = मानो ग्रहण करो ।

जो संगरे धीरउ दिढभुयउ।
परिछंडिवि धणुहरु गालियसरु
करकंडपासु गउ णिवपवरु।

घत्ता

पुणु जाइवि धाडीवाहणइं आलिंगिउ णंदणु सो खणिण।
जह संगरे जाइवि तेयणिहि पज्जुण्णु कुमरु दामोयरिण॥

( २२ )

क्षमा याचना उपसंहार—

करकंडइ वुत्तउ णियजणणु
पइं सरिसउ जं मइं कियउ रणु।
मा गिण्हहि मेरउ देव छलु
तं खमहि भडारा महो सयलु।
तं सुणिवि वयणु चंपाहिवइं
उल्लसियउ तक्खणे सो हियइं।
गउ लेविणु णयरहो सहुं णिवेहिं
पइसारिउ णाणाउच्छवेहिं।
सा णयरी करकंडें सहेइ
अमराउरि लज्जा तहो वहेइ।
णर रयणइं लेविणु साणुराय
णिवमंदिरे वद्धावणहुं आय।
ता दुद्धररायहं जो घरट्टु
करकंडहो बद्धउ रायपट्टु।

---

२२. खमहि=क्षमा करो। अमराउरि=अमरपुरी। वद्धावणहुं=बधाई
हिययगंठि=हृदय की गांठ।

पुणु अप्पणु राएं तक्खणेण ।
तणु मंडिउ तवसिरिभूसणेण
कम्मट्ठठिणिगंट्ठवणसारु ।
तउ चरिवि सुदुद्धरु काममारु
तणु छंडिवि खंडिवि हिययगंठि
सो लग्गउ सिववहुतणएं कंठि ।

घत्ता

गउ धाडीवाहणु सिवणिलउ कणयामरवण्णउ गुणहं घरु ।
करकंडु करंतउ रज्जु पुरि सो अच्छइ माणिणिहिययहरु ।।



# [५]

# कवि धाहिल

'पूर्व जन्म की धनश्री ही वर्तमान जन्म में हस्तिनापुर के सार्थवाह अशोकदत्त की पुत्री पद्मश्री है। साकेतपुर के कुमार समुद्रदत्त से उसका विवाह होता है। विवाह के बाद, वह कुछ दिन, ससुराल में ही रहता है। फिर मां की बीमारी की खबर पाकर अपने घर जाता है। यहां पद्मश्री को भूल जाता है। वह वियोग में व्याकुल हो उठती है। एक सांझ, कुमार को वियोग में दुखी 'चकवी' को देखकर अपनी पत्नी की याद आती है; वह ससुराल पहुंच जाता है। शाम को पद्मश्री सजधज कर प्रिय से मिलने के लिये जाती है। ठीक इसी समय, पूर्व जन्म के अंतराय से एक व्यंतर देव चिल्ला उठता है, 'पद्मश्री तूने मुझे संकेत दिया था यह दूसरा कौन है।' यह सुनना था कि कुमार संदेह, क्रोध और घृणा से जल उठता है। पद्मश्री को मिलता है—भर्त्सना, अपमान के घूंट और परित्यक्त जीवन। वह शेष जीवन धार्मिक आचरण में बिताने के लिये बाध्य है।

'उज्जोइउ भुयणु असेसु इ
गरुय-राय-रंजिय-हियउ।
अत्थवण-सिहरि रवि संठियउ
संझा-वहु-उक्कंठियउ॥

( १ )

**संध्या का चित्रण पद्मश्री का वासगृह में प्रवेश—**

अत्थमिउ दिवायरु संझ जाय
लिय कणय-घडिय नं भुयण-भाय।
कमलिणि कमलुन्निय-महुयरेहि
अंसुएंहि रुएइ सकज्जलेहिं।

---

घत्ता—गरुय-राय ...... भारी राग से रंजित हुआ।

सोआउरु मणि चक्काउ होइ
कउ मित्त-विओउ न दुक्खु देइ।
अंधारिय सयल-वि दिसि विहाइ
किलिकिलिय-भूय-रक्खस पिसाय ।।
तमु पसरिउ किंपि न जणु विहाइ
जगु गब्भ वासि निक्खित्तु नाइ ।।
बोहंत कुमुय-वणु उडउ चांदु
कंदप्प-महोसहि-रुंद-कंदु ।।
वणि जेम मइंदहु हत्थि-जूहु
नासेइ मियंकहु तिम्व तमोहु ।
हिरणंक-किरण-विप्फुरिउ भाइ
गयणंगणु धवलिउ नं छुहाइ ।।
निसि-पढम-पहरि उद्दाम-कामि
वासहरि कुमारु मणभिरामि ।।
महमहिय-वहल-वरधूय-गंधि
पंचन्न-कुसुममाला-सुगंधि ।।
रुणुरुणिय महुर-रवि भमर-लीवि
पज्जालिय-मणि-मंगल-पईवि ।।
पउमसिरि सहिउ पल्लंकि ठाइ
सहियणु आणंदिउ घरहु जाइ ।।

घत्ता

नाणाविह-करण-विसेसेंहि
सुर सोक्खइं माणेउ कुमरु ।

१. अत्थवणसिहरि=अस्ताचल के शिखर पर । संझ=संध्या । जाय=हो गई । संध्या का चित्रण ।

आलिंगिउ कंत पसुत्तउ
नाइ स-विग्गहु पंचसरु ॥

( २ )

प्रभात का चित्रण—

परिगलिय रयणि उग्गमिउ भाणु
उज्जोइउ मज्झिम-भुयण-भाणु ॥
विच्छाय-कंति ससि अत्थमेइ
सकलंकहं किं थिरु उदउ होइ ॥
सूरह भएण नासेवि निहीणु
गिरि-कंदरि विविर तमोहु लीणु ॥
रेहहिं कमलायर पयड-कोस
विलसंति मित्त किर विगय-दोस ॥
मउलंति कुमुय महुयर मुयंति
थिर नेह मलिण किं कह वि हुंति ।
मुणिवर करंति सज्झाउ भाणु
कुरलंति हंस निम्मलु विहाणु ॥
नवकारु पढंति थुणंति सिद्ध
पउमसिरि कुमारि सहुं विउद्ध ॥
गोसग्ग कज्जु सयलु इ करेवि
गुरु-चलण-कमलु पणमंति वे वि ॥
गउ सत्थवाहु निय-पुरि स-बंधु
ठिउ कुमरु-तहि वरवसुहगंधु ॥

---

२. प्रभात का चित्रण । गो सग्ग-कज्जु=सवेरे के सब काम । वेवि = दोनों । सोहग्गउ=सौभाग्य । लावन्नउं=लावण्य । विम्हिय मणेहि=विस्मित मन से ।

गाढाणुराय पउमसिरि तासु
छाया व न मेल्लइ खणु वि पासु ।।
हरि-हियइ जेम्व निवसेइ लच्छि
तिह सा वि कुमारह दीहरच्छि ।।
पुव्वज्जिय जण-मण-हरण-दक्खु
माणंति जहिच्छइ विसय-सोक्खु ।।

घत्ता

सोहग्गउ लावन्नउं तं
पेक्खेविण विम्हिय-मणेंहि ।
सलहिज्जइ अणुदिणु लोएहि
हरिसुप्फुल्लिय-लोयणेंहि ।

( ३ )

## ससुराल में पद्मश्री और समुद्रदत्त की दिनचर्या—

गुरु-विविह-विणोइं दियह जंति
अवरोप्परु राउसवइं करंति ।।
कइय वि नियं-अंग-पसाहणेण
कइय वि गुरु-चलणाराहणेण ।।
कइय वि जिणिंद-गुण-कित्तणेण
कइय वि साहूण नमंसणेण ।।
कइय वि जिणधम्म-कहाणएहि
कइय वि रमंति उज्जाणएहि ।।

---

३. पसाहणेण=प्रसाधन से । पेच्छणय=पलोयणेण=प्रेक्षण=नाटक देखकर । साहम्मिय-भोयणेण=सार्धमि भोजन से । पन्होत्तराइं=प्रश्नोतर । वहुभेयइं=

कइय वि करंति जल-केलि रम्मु
कइय वि लिहंति वर-चित्त-कम्मु ।।
कइय वि पेच्छणय-पलोयणेण
कइय वि साहम्मिय-भोयणेण ।।
कइय वि पढन्ति पन्होत्तराइं
बहु भेयइं गूढ-घणक्खराइं ।।
भुंजंतह मणहर विसय लट्ठ
संवच्छर वोलिय ताम अट्ठ ।।
अह अन्न-दियहि नामिं वराहु
साएयहि अविउ लेहवाहु ।।
तिं चित्त् लेहु वायइ कुमारु
तहिं लेहि लिहिउ किर एउ सारु ।।
"लहु एहिं कुमार समुद्ददत्त
तुहु विरहि विसंठुल जणणि पुत्त ।।
गुरु-सोय-सेल्ल-निब्भिज्जमाण
कंठ-ट्ठिय दुक्खि धरइपाण ।।

घत्ता

रच्छामुहि गेहि घरंगणि
खणि रुयंति न वि थक्कइ ।
सरि नलिणि जेम जल-वज्जिय
रत्ति-दियहु परिसुक्कइ ।।"

---

बहुत भेद वाले । गूढ-घणक्खराइं=गूढ घनाक्षरों से । वोलिय=चले गए ।

मां की बीमारी का लेखपत्र और समुद्रदत्त का प्रस्थान, पद्मश्री की वियोग वेदना—

पउमसिरिहि साहिय लेह-वत्त
"महु दुक्खि अच्छइ जणणि तत्त ।।
ता जामि कंतें पेक्खेमि ताउ
अवणेमि जणेरिहि हियय-सोउ ।।"
सा पभणइ अंसु-जलोल्ल-नेत्त
"हउं जामि तइं सहुं अज्जउत्त ।।"
"लग्गंति दियह पिय दुग्गु देसु
पिउ मंदिरि अच्छहि तुरियउ एसु ।।"
गउ दिट्ठ जणणि पणमिउ असोउ
आलिंगिण विहिं तिं पणट्ठु सोउ ।।
आणंदिय-बंधव-सयण-मित्त
अच्छइ कुमारु कुइ कालु तेत्थु ।
पउमसिरि विरह-सिहि-सोसियगि
निरु झूरइ रयणिहि जिह रहंगि ।।
नेमित्तिय पुच्छइ भणइ साहु
कइयहुं आवेसइ मज्झु नाहु ।।
वलि-महु-भक्खण महुर-वाय
लहु उरिउरेहि काय ।।
आवेइ कंतु जइ मज्झु अज्जु
दहि-सालि भत्तु तो देमि तुज्झु ।।
आवेउ कंतु लोयण-सलूणु
तुह देमि जक्ख लड्डुयइं हूणु ।।

---

४. अज्जउत्त=आर्यपुत्र ।

आणेइ तुरिउ महु जीविएसु
ओयाइउ तुम्हहं वि देसु ॥

घत्ता

णयणंसु-सलिल गंडयल-थल
खिणि खिणि खिज्जइ बाल किह ।
लायण्ण-कंति-परिवज्जिय
किण्ह-पक्खि ससिरेह जिह ॥

( ५ )

कुमार का चकवी को देखकर पद्मश्री की याद आना और मथुरा के लिए कूच करना—

अह एक्कहिं दियहिं समुद्ददत्त
निसि समइ सरोवरु तेण पत्तु ॥
पिय-रहिय दिट्ठ तिं चक्कवाइ
कंदंत कलुणु दुक्खिय वराइ ॥
उन्नेइ झंप जल-मज्झि देवि
तीरहिं ठिय पक्खउ पुणु धुणेवि ॥
पंकय-चणु लोलइ नयणि ठाइ
तड-तरुवरि लग्गइ दिसिहिं धाइ ॥
"चक्काय-घरिणि सरि एह जेम्व
विरहाउर मज्झ वि दइय तेम्व ॥
जिह राय-कीरि पंजरि निरुद्ध
अच्छइ महु मग्गु नियन्त मुद्ध ॥"
उक्कंठ-विसंठुल भट्ट-छाउ
विरहानल-सोसिय नियवि जाउ ॥

गुरुयणेंण वुत्तु स "सहाव-सच्छ
नियं कंत लएविणु आउवच्छ ॥"
आरूढु तुरंगि समुद्ददत्त
हत्थिणउरि सहुं सत्थेण पत्तु ॥
पमुइय-मण सो अवरन्ह-कालि
पइसरइ संख-मंदिरि विसालि ॥
आवद्ध वेणि
सिय-दसण-सेणि ॥
कर-गलिय-वलय
लंवंत-अलय ॥
मल-मइल-वेस
लीहावसेस ॥
इय-गुण-विसिट्ठ
पउमसिरि दिट्ठ ॥

घत्ता

पेक्खेवि कुमरु तहि वालहि
नट्ठु खणद्धिं सोगु किह ॥
दुव्विसह लोय-संतावणु
कय पुन्नह दालिद्दु जिह ॥

( ६ )

मिलन की पूर्व तैयारी और अन्तराय—

न्हाविय सुयंध-न्हाणिय-जलेण
भुंजिउ विलित्तु हरियंदणेण ॥
तंवोलु दिन्नु किय उचिय-वित्ति

परिपुच्छिय कुसलाइय-पउत्ति ।।
एत्थंतरि मउलिउ गुरु-पयाउ
वारुणि-पसंग-जणियाणुराउ ।।
कहवि य अत्थवणु न होइ लोइ
नं अब्भमुक्कुरु वि अत्थवेइ ।।
पउमसिरिइ सज्जिय वास-भवणु
विणिवेसिउ कोमल-तूलि सयणु ।।
निम्मल पईउ निहयंधारु
सेज्जहि ठिउ अच्छइ तहिं कुमारु ।।
जं वद्धउं अन्नहि जम्मि आसि
धणसिरिए कम्मु बहु-दुक्ख-रासि ।।
तं उदयगउ भोगंतराउ
केलिप्पिउ आइउ तहिं पिसाउ ।।
पउमसिरि नियवि आवंत गेहु
चिंतवि "विद्दावइ विहि मि नेहु"
सो अन्न-मिस-अंतरिउ भणइ
फुडु वयणेहिं जिह सो कुमरु सुणइ ।।
"अत्थमिइ सूरि पसरिइ तमोहि
आवेज्जसु अणुदिणु एत्थु गेहि ।।
पउमसिरि मज्झु संकेउ देइ
आगमइ एत्थु पइं अन्नु कोइ ।।"
"को वोल्लइ एहु अणज्जु वट्टु"
जोयइ कुमारु ना कंचि नट्ठु ।।

घत्ता

मायाविउ दुट्ठु पिसाउ
सुट्ठु कुमरि अवलोइयउ।
पवणाहुउ जेम्व पईवउ
झत्ति न नज्जइ कहिं ठियउ ॥

( ७ )

कुमार द्वारा नारी जाति की निन्दा—

चिंतइ कुमारु "दुस्सील एह
······कलत्तु महु भिन्न-नेह ॥
अइविम्हुउ निम्मल-कुल-पसूय
दुच्चारिणी कह हुय संख-धूय ॥
उम्मग्ग-लग्ग हुय दुट्ठ-सील
उद्दाम-वियम्भिय-कामलील ॥
सच्छंद अणज्ज निराणुकंप
अन्नाणिय मोहिय विगय-संक ॥
न गणइ माइ-बप्पु स-सहोयरु
न गणइ इह-परलोय-भयावणु ॥
न गणइ सरणु लज्ज अउ मेल्लइ
करइ अकज्जइं ढङ्ढसु खेल्लइ ॥
कवड्डु करेवि कंतु मारावइ

---

दूसरी दीवाल के अन्तर से। आवेज्जसु=आयेगा। अणज्ज=अनार्य। नट्ठु=नष्ट हो गया। पिसाउ=पिचाश।

७. अइ-विम्हुउ=अत्यन्त विस्मित। संख-धूय=शंख की बेटी। उम्मग्ग-लग्ग=खोटे मार्ग में लग गई। सच्छंद=स्वच्छंद। अन्नाविय=अज्ञानी। भयावण=

खइ अन्नु पुणु सो जि ण भावइ ॥
पलविकय णह नारि वहु-भंगेहिं
चंदण-लय जिह भुत्त भुयंगेहिं ॥
छिन्निवि नक्कु कन्न-सहुं वालहिं
दंसमि अज्जु कयंतु दुसीलहिं ॥
तोडमि कमलु जेम्व सिरु दुट्ठहिं
फलउ अणंग-संगु पविट्ठहिं ॥

घत्ता

चिंतइ एउ कुमारु
कोवाणल-जालिय-मणउ ।
"परिहारु डंडु खल-नारिहिं"
सुमरिय नीइ वियक्खणहु ॥

(८)

पद्मश्री का शयनकक्ष में प्रवेश, प्रताड़ना और अपमान—

आइय पउमसिरि अलंकरेवि
करि कमलु पउर तंबोलु लेवि ॥
पसरंत-बहल-मुहवास-गंध
उब्भिन्न-निविड-रोमंच-बंध ॥
उब्भड-भिउडि-भंग-भीसावणु
कुविउ कयंतु नाइ दुद्दंसणु ॥
कोय-फरंत-नासु डसियाहरु

---

भयानक । ढढ्ढसु खोल्लइ=आग से खेलता है । पलविकय=प्रलयार्क ।     डसियाउरु=

८. अलंकरेवि=अलंकार करके । पउर=प्रवर । दुद्दंसणु=दुर्दर्शनीय ।

कुरुल-दिट्ठि नं पयडु सणिच्छर ॥
संकिय वण-लय जिह करि-रायहु
संकिय मंजरि जेम्व दुवायहु ॥
संकिय कमलिणि जेम्व मियंकहु
संकिय कुलवहु जेम्व कलंकहु ॥
संकिय गरुडह जेम्व भुयंगी
संकिय वग्घह जेम्व कुरंगी ॥
संकिय सेल-मुत्ति जह वज्जह
संकिय मुणिवइ जेम्व अकज्जह ॥
संकिय जिह सइ असइ-पसंगह
संकिय जिह चक्काइ वियालह ॥
संकिय रायहंसि जिह जलयह
संकिय जेम्व वसुंधरि पणयह ॥

घत्ता

जिम्य करिणि विंझि आसंकिय
खर-णहरह पंचाणणहु ।
तइ भीसणु रूउ निए विणु
वाल चमक्किय-चित्त तहु ॥

---

दर्शिताधर । कुरुल-दिट्ठि=क्रूर दृष्टि । वणलव=वनलता । सालूरि=मेंढकी चक्काइ=चक्रवाह । जलय=जलदह से । विडालह=विठाल से । विंझि=विन्ध्याचल ।

आसा इव दीहउ दिसउ होंति ।।
उग्गमइ अरणु संताउ नाइ
रविवुद्धि जेम्व निसि खयहु जाइ ।।

घत्ता

हरिसो इव निग्गउ
कुमरु संदेसहु पट्ठियउ ।
दोहग्गु जेम्व वर-वालहि
उयलि महीयति संठियउ ।।

( १० )

पद्मश्री का आत्म चिन्तन—

"दुव्वयण-सल्लु मणि पक्खिवेवि
कलुणं रुयंति मइं परिहरेवि ।
पिउ गेहि गयउ गलियाणुराउ
मइं काइं हयासइ कियउ पाउ ।।
आणेसि नाह तिं धरियपाण
कइया वि न खंडिय तुम्ह आण ।।
तुहुं सामिय केण इ अलिउ अज्जु
संभालिउ जिह मइं किउ अकज्जु ।।
हउं सुक्क विरह-संताव-तत्त
कणवीर-माल जिह न वि विरत्त ।।
दुव्वाइय मंजरि जिह मिलाण
कपि-वरतणु व्व उक्खय विसाण ।।
उप्पाडिय-फणि-मणि जिह भुयंगि

. गतियाणुराउ=गलितानुराग ।

विच्छाय दीण भय-ठेविरंगि ॥'
वासहरह निग्गइ सीलवंति
वत्थंचलेण नयणइं लुहंति ॥
चिंतंतु एहु गरुयणह सिट्ठु
जोयाविउ कुमरु न कहिं वि दिट्ठु ॥
अइभीम-सोय-सायरि निहित्त
दोहग्ग-सल्ल-सल्लिय-विचित्त ॥
वज्जिय विस-मंजरि जह भमरेंहि
वज्जिय सर-दिट्ठि जिह तिमरेंहि ॥
वज्जिय सुयण-गोट्ठि जिह पिसुणेंहि
वज्जिय सीह दिट्ठि जिह हरिणेंहि ॥

घत्ता

तिह सयल-सोक्ख-परिवज्जिय
निप्फल इव तारुन्न-सिरि ॥
जिणु दिव्व दिट्ठि मणि झायइं
कंति पउत्थइ पउयसिरि ॥

# शुद्धि पत्र

| पृष्ठ | अशुद्ध रूप | शुद्ध रूप |
|---|---|---|
| २२ शीर्षक | सपज-अवस्था | सहज-अवस्था |
| २५–२६ | सङ् | साङ् |
| ३६/१२ | वडमज्झइं | वडमज्झहं |
| ३१/१० | नित्थ | तित्थ |
| ३१/११ | तह | तहिं |
| ३१/६ टिप्पणी | पढ़के से | पढ़ने से |
| ३८/२६ | वसत यालु | वसंत भालु |
| ३६/६ | तेवंड्डउ | ते वड्डउ |
| ४२/५ | सुमहि | सुमरि |
| ४६/२५ | उटब्भइ | उद्दब्भइ |
| ४७/६ | जेल-आइम्ब | जले प्राइम्ब |
| ४८/१८ | देसुच्चाउणु | देसुच्चाइणु |
| ४६/३३ | एहे | एह |
| ४६/३५ | आवही | आवहि |
| ४६/३५ | पमाणियड | पमावियइ |
| ५०/४५ | गोड़ो | गोरड़ी |
| ५०/३७ टि० | जीवार्ग | जीवार्गल |
| ५१/४७ | अप | अह |
| ५१/४८ | मथु | मणु |
| ५१/५० | लज्जिजणइ | लज्जिजइ |
| ५१/५५ | पवसंनि | पवसंति |
| | पे वसंतेन | पवसंतेन |
| ५२/६४ | अणणेइ | अणुणेइ |
| ५२/६६ | एड | एउ |
| ५३/५ | शिरा | सिरू |
| ५३/६ | निभि | निभिच्च |
| | मंतडऊ | मंतडउ |

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| ५४/६ | विवन | विघन |
| ५५/४ | रोमंयणवस | रोमंथणवस |
| ५६/१ | सिलाय | सिलायल |
| ५६/२ टि० | पामय-घन | पायय घन |
| ५७/२ | कि | किउ |
| ५८/१४, १५ प० | सावडड<br>वघड | सावडइ<br>घडइ |
| ६३/टि० | आथाली | आसाली |
| ६४/७ | विसं हप्पिणु | विहसेप्पिणु |
| ६७/टि० | आवा | आया |
| ६९/१४ | चडु | चढु |
| ७१/१ प० | रिट्ठगेभि | रिट्ठणेभि |
| ७५/५ | मरेणु<br>जिल्लोल्लिय | मरणु<br>जलोल्लिय |
| ७६/६ | घुडु | छुडु |
| ७७/६ | मुि | मुहि |
| ८०/१० | डयरि | उयरि |
| ८१/११ | ओहु | एहु |
| ८२/१२ | सयलिघि | सयलिंघि |
| ८३/१३ | वज्जारिवि | वज्जारिंवि |
| ८६/भूमिका | पुत्रियाँ थीं | पत्नियाँ थीं |
| ९१/प० १ | सरनर | सुरणर |
| ९२/२ | पणरवि | पुणरवि |
| ९३/६ | पविरत्ने | पविरल |
| ९७/१२ | यवलु | भुयवलु |
| १००/१४ | भयवलिंहि | भुयवलिंहि |
| १०१/१५ | मरुध्दूयति | मरुद्धूय |
| १०१/१५ | गिच्छिधूलि | तिगिच्छधूलि |
| १०२/१५ | कुल्लं | फुल्लं |
| १०२/टि० | झुलम्म | झल्लक |
| १०३/टि० | सुरंघुत्ति | सुरतिधुत्ति |
| १०७/१९ | डव्वरिउ | उव्वरिउ |

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| १११/टि० | शीघ | शीघ्र |
| ११३/४ | विगप्पइ | वियप्पइ |
| ११८/टि० | स्पैर्य | स्थैर्य |
| ११६/६ | णंदवु | णंदण |
| ११६/७ | वंसख | वैस रव |
| ११०/श्री० | सकटा | शकट |
| १२२/प० ५ | देतिया | दंतिया |
| १२५/१० | णद | णंद |
| १२५/१२ | उिवक्खउ | अविखउ |
| १३३/१६ | कृष्ण का | कृष्ण की |
| १३८/२ | आसंधिवि | आसंघिवि |
| १४४/ | हक्कारिव | हक्कारिवि |
| १४४/ | ८ | ६ |
| १४४/श्री | वप्रिय पुत्रों | वणिक् पुत्रों |
| १४६/टि० | पिथुनता | पिसुनता |
| १४८/११ | अयहेरि | अवहेरि |
| १५१/१४ | भवाल | भुवाल |
| | हप्पउ | हत्थउ |
| १५३/ | लज्जिम | लज्जिय |

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| १११/टि० | शीघ | शीघ्र |
| ११३/४ | विगप्पइ | वियप्पइ |
| ११८/टि० | स्पैर्य | स्थैर्य |
| ११९/६ | गांदवु | गांदण |
| ११९/७ | वंसख | वैस रव |
| ११०/श्री० | सकटा | शकट |
| १२२/प० ५ | देतिया | दंतिया |
| १२५/१० | गाद | गांद |
| १२५/१२ | उिववखउ | अक्खिउ |
| १३३/१६ | कृष्ण का | कृष्ण की |
| १३८/२ | आसंधिवि | आसंघिवि |
| १४४/ | हक्कारिव | हक्कारिवि |
| १४४/ | ८ | ९ |
| १४४/श्री | वप्रिय पुत्रों | वणिक् पुत्रों |
| १४६/टि० | पिथुनता | पिसुनता |
| १४८/११ | अयहेरि | अवहेरि |
| १५१/१४ | भवाल | भुवाल |
| | हप्पउ | हत्थउ |
| १५३/ | लज्जिम | लज्जिय |